(6)

EXERCISE BOOK

Name ______________________________

Address ______________________________

Subject ______________________________

Produ
C.B.S.R.

परमार्थसारः

10 oct. 1960

(1) विद्वनोऽपि = [illegible] जगन्मूर्त्या = [illegible] - [illegible]

प्रायान: — [illegible] (solidified). य: [illegible] - [illegible]

स: [illegible] जायत्य = [illegible]

न जा: = Never born. نہ پیدا ہوا - [illegible]

[illegible] → स्वात्मे = [illegible] [illegible], प्रच्छादन = [illegible]

[illegible] काजा = [illegible] [illegible] विद्वदहा = [illegible]

मे परमेश्वर: = [illegible]

[illegible]

(2) योऽयं = [illegible] व्ययापि = [illegible] - [illegible] गुरुणा = [illegible]

युक्त्या = [illegible] — [illegible]

परमार्थ = [illegible] ऋषि = [illegible] सार = [illegible]

[illegible] — संक्षेप [illegible]

[illegible] विवृति = [illegible] करोमि = [illegible] [illegible] = [illegible]

स्मित = [illegible] विद्वत् जनाश्रिता [illegible]

योग: [illegible] → [illegible]

[illegible]

इह = یہاں विवादपदमासन = [illegible]

देहादि = بدن وغیرہ - [illegible]

प्रमातृता = [illegible] ہونا

प्राधान्य = اسکی برتری ہونا स्वसंकल्प = اپنے ارادے

اسکی समुत्थ = اٹھا ہوا प्राकृत = [illegible]

وہی جو प्रातरुक = پیدا ہوا आलस्य = آلس

संप्रायादि रूप = [illegible] विक्षोभ = [illegible]

اسکی प्रसर = زیادتی → اسکی प्रध्वंस = ناش

पूर्विका = [illegible] ([illegible]) प्राक्स्वाविपत्ति

मन्यमान = ماننے والا (سمجھنے والا) [illegible]

- یعنی یہ جانتے ہیں کوئی دکھ نہیں آتا جاتا

اسکی → परिमित = محدود [illegible] प्रमातृता = [illegible]

اسکی पदस्पर्धी कारण = [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] चिदानन्दैकघन = [illegible] → स्वात्मदेवता = [illegible]

[illegible] समावेश = [illegible] – [illegible]

[illegible] → प्रकाशिनी = [illegible]

[illegible] → समस्त = سب प्रशस्ताथि [illegible]

[illegible] संक्षिप = مختصر गर्भ = [illegible]

[illegible] प्रथमत = پہلے तावत = فی الحال

परमेश्वर प्रकाशतो = [illegible] परामृष्टि = [illegible] – [illegible] –

[illegible]

فی الحال [illegible] –

[illegible] –

[illegible]

परे = پرے - دور - [illegible]

परस्थं = [illegible]   गहनाद = [illegible]

अनादिम् = [illegible]

एकं = [illegible]   निविष्टं = [illegible]   बहुधा = [illegible]

गहास = [illegible]   [illegible]

सर्वोच्च = [illegible]

सर्वधरा स्थं = [illegible]

त्वामेव = [illegible]

प्रभुं = [illegible]   प्रारम्भ = شروع   प्रपञ्च = [illegible]

(5)

त्वां = تجھ کو → تیرا … सर्वे = سبھی . प्रमातृ = پرمان کرنے والا -

३. स्फुरत = چمکتا ہوا सार = سار …

وہ جو → स्वात्मदेवता = سوانم دیوتا — اپنی روپ — آتما

रुपं मेव = … [illegible]

प्रभु → प्रभुत्तर = … श्रेयः = کلیان -

स्वभाव = وہی … — … सत्तात्मक = …

पारणा → رکھنے والا

त्रातार = رکھنے والا + स्वतः … समावेश =

समापत्तय = … संश्रये = آشرے …

एवकारः = "एव" … → प्रभ्मु = …

… → स्वात्मदेवत प्रकारमेव = … اپنی سروپ …

प्रपद्ये = اس کی شرن …

اس کے بعد [illegible] اور کسی قسم کی شرط نہیں ہوتا

وہ بعد کو نہیں →

न पुनः = نہیں پھر   मायान्तः = مایا کا انت

[illegible]रिसां = ہوتے ہیں ([illegible]) किं कोचित् = کوئی

भिन्नं देवम = [illegible] → [illegible] ([illegible] اور کسی قسم کی شرط نہیں ہوتا ہوں۔ [illegible])

[illegible]

इति = اسی [illegible]   प्रत्ययोग = [illegible]

व्यवच्छिन्नत्ति = [illegible]

प्रत्ययच्छ = [illegible]   किंभूते = [illegible] "PR" →

पूरित = [illegible] → [illegible]

निर्भरम = [illegible]

चिदानन्द [illegible]

→ [illegible]   प्रतुतर स्वरूपं = [illegible] ([illegible])

— [illegible]

तथा = [illegible]   'परस्थं गह्वनात' इति →

गह्वनात → मायाभिधान = [illegible]

~~[illegible]~~ तत्त्वात = [illegible]

परस्मिन = دوسرے میں → पूर्ण स्व = پورا اپنا - [illegible]

[illegible] → प्रियादि वि ... بیان اپنے [illegible]

شروع سے شروع [illegible]

प्रबुद्ध स्वान = [illegible] → स्वरूप = [illegible]

तिष्ठन्ते = [illegible]

न पुनः = نہیں - اور - تत्तद = [illegible] प्रवस्था = [illegible]

वैचित्र्ये अपि = [illegible] स्मृतः - [illegible]

ततः [illegible] परस्मात → पूर्णात

स्वस्मात = [illegible] तस्य = اس کی -

प्रत्यावा = [illegible] भवति = [illegible]

اگر [illegible] - نہیں -

यदु तामु = [illegible]

जाग्रदादि = جاگرت آدی [illegible]

[illegible]

विभेदडापि = اگر ان کا ذرّہ بھی ہے — تد = اُس کے
بیدہ بھی ہے — اُس چیز پر بارش ہے

प्रभिन्न = یہ اُبھرے — یہ شبنم اور اس کا ملی ہیں -
اُن سے الگ ہیں -

(جینے والی - باہر نکلنے والی) प्रसिपात = پیر میں آتی ہیں
اگر یہ ... اور اس کا ملی
پیر میں آتی ہیں - لیکن یہ اُس سموت سروپ سے بن ملی ہیں -

निवृत्त = ہٹتی جاتی — निजात = ... — नैव = نہیں

स्वरूपात = اپنے سروپ سے → उपलब्धेत:
سموت سروپ - اُنو سروپ
اپنے سموت سروپ سے نیچے میں ملتا - اور گیا اور روپ — اس کا نہیں لگتا -

[یہی سب جیت - آنند ہوتا ہے -]

یہ سیدھا شتر میں شوک بتلاتا ہے -

یہ اپنے سموت سروپ سے (اُنو بھو کرنے والے)
دیکھنے میں آتا - وہ یہ ستو ریتا ہے

"एतानि" = یہ سارے → [illegible] पुराणं = [illegible]

सर्वप्रतीतीनाम् = سب [illegible] एतद् भावितत्तया = ان کا [illegible]

[illegible] ([illegible])

प्रमातृत्वेन = [illegible] ([illegible])

प्रकाशसिद्धत्वात् = [illegible] [illegible]

[illegible]

"एकम्" → "ایک ہی" इति = [illegible] → प्रसाद्येव = [illegible]

→ चित् एकघन = [illegible] स्फुरणात = [illegible]

भेदस्य = [illegible] अनुपपत्ते = [illegible]

[illegible] → "एकम्" [illegible]

तथा = اسی [illegible]

'निविडम्' → [illegible] → इत्यादि = [illegible]

एवं = [illegible] जातीयकमपि = [illegible]

स्वस्वातन्त्र्यशा = [illegible]

"बहुधा" → [illegible] नाना प्रकारै भेदै = [illegible]

تا یہ — جیو کا ہردے جو ہر ایک کی گپھاؤں میں — پرماتما شکتی روپ سے جو ان سب میں ہے

गुहासु → स्वस्वरूपासु = یعنی پرماتما اور شو پرماتما روپ سے

हृद्गुहासु = ہردے کی گپھاؤں میں

روح وانک پرماتمک - جیوؤں کا ہردے کی گپھاؤں میں

अन्तर्विष्टः = اندر بسا ہے

→ وہ بسا ہے   चैतन्यरूपोऽपि = اگرچہ چیتن روپ ہے

स्वयं = آپ ہی
اپنی سوتنتر شکتی سے

जडाजडात्मता माभासयेत्
جڑ اور اجڑتا کا آبھاس کر

नश्वर = ناشوان ہے   नानाप्रमातृतया =

स्थित = ٹھہرا ہے   نانا پرماتا روپی پرماترتا سے

[یعنی نانا پرماتا روپ جیو بن گیا -]

इति यावत् → اس طرح ہے بس کہ
ہے

کی شکتی کی پرماتما - اپنی
جو روپ سے
پرماتما روپ
سنکلپ سے
لعد پرماتما اور شو
انہیں دونوں نا کی میں
دونوں

एत एव = یہی ہیں

सर्वालयम् = سب کا گھر इति = ایسا

अविच्छेद्य → سب کا रुद्र - क्षेत्रज्ञादि = [illegible]

प्रमेय = وصفی रूपस्य = صورت [illegible]

[illegible]

आगत : [illegible] → آئی ہے, प्रालय

→ विश्रान्तिस्थानं = قرار گاہ

→ सर्वभित्ति = سارا [illegible] किल = یقینی

पूर्णप्रमातरि [illegible] स्थित = ٹھہرا

[illegible] اس میں → सत = بس - [illegible]

ग्राह्य = گرہنی ग्राहक = گرہن کرنے والا

युगलक = جوڑا [illegible] [illegible]

अपेक्षया = [illegible]

उन्मग्नामिव = اُبھرا ہوا — [illegible] سمندر میں غوطہ لگا کر سطح پر آیا ہوا

भेदेन प्रकाशमाने = بھید سے جو چمکنے میں آیا

[یعنی دوئی کا [illegible] — شیو کا [illegible]]

→ नानारूपे — ان ہی نانا روپوں میں

व्यपदिश्यते = اصطلاح میں کہا جاتا ہے

अन्यथा = اگر یہ نہ ہوتا یعنی (دوسری صورت میں)

→ एतस्य प्रकाशत = اسکے پرکاش ہونے سے

اُس ہی کی ہوتی ہے یعنی — اُسکے پرکاش [illegible]

भिन्नस्य = بھن ہوتا یعنی [illegible]   स्यैव = اسی کا (~~[illegible]~~)

न स्यात् = نہیں رہ سکتی

[اگر یہ کہیں کہ شیو کی [illegible] ہی ہے — تو وہ [illegible] لہذا یہ شیو کی [illegible] جائیگی]

لہذا [illegible] نکلا — कुतः = کیسے   इदं = یہ   विश्वम् = وشو

اسلئے ہم کہتے ہیں کہ یہ سب [illegible] (سروناما) کا پرامرش ہے —

इति = ~~[illegible]~~ ایسا   सर्वनाम = سروناما

प्रत्यवमर्श = پرامرش کا

[illegible] — 'सर्व' 'सर्व' — یعنی پرامرش کا سروناما

[illegible]

اس قدر سے بھگوان کی ... [illegible]

न एतावता = اتنے ہی سے भगवतः = بھگوان کا

समुत्तीर्णं = پار اترا स्वरूपम् = سروپ

इत्यपि = یہ بھی । "सर्वं चराचरस्थमपि"

सर्वमिदं = سارا یہ यत् = جو ... وہی

... एतत् स्वभावं विश्वं = یہ سبھاؤ والا وشو

तद्रूपतया = اسی روپ سے ... دکھائی دیتا ہے

तिष्ठति = ٹھہرا ہوا ہے

سب کچھ جو ان کے روپ میں ... [illegible] ... ہے

कथा = کیسے त्वमसि = تو ہے सर्वस्य = سب کا

यतः = کیونکہ त्वं = آپ ہی वै = ... [illegible]

... [illegible] ... ہیں

विभा = پربھا ... ततः = اس لیے सर्वमिदं = سارا

त्वमेव = تو ہی ہے

[illegible] इति न्यायेन = اس قاعدے سے हि = کیونکہ व्यतिरिक्तस्य

[illegible]

अन्यस्य = اور دوسرے کی [illegible]

[illegible]

[illegible] → अप्रकाशमान = ظاہر نہ ہوتا — [illegible]

कायित्वा = ثابت کرنے کی — [illegible]

— [illegible] अनुपपत्ते = نہ ثابت ہونے

[illegible] भोक्तृत्व = بھوگنا भोग्यभावेन =

सदा = ہمیشہ सर्वत्र = ہر جگہ [illegible]

संस्थित = قائم ہے

[illegible] "कायित्वा" [illegible]

5. इति भगवानेव = اسی طرح، ایشور ہی

तथा तथा = اُسی اُسی طرح चकास्ति = چمکتا ہے

एवं विधं = اس قسم کا त्वाम् = تجھے अनुत्तरं = انوتر کو

سب → सर्वस्य = سب کا स्वात्मदेवता =
سب کی اپنی آتما [illegible] - [illegible] دیوتا ہے

[illegible] परा प्रमन्तृता = پورن اعلیٰ [illegible] चमत्कार सारऽपि
اسی چمتکار کا سار [illegible]

[illegible] → स्फीततम = [illegible] → नाना वर्णं =
نانا رنگوں والا

प्रथते = پھیلتا

अत्यन्त अखण्डित स्वस्वातन्त्र्य
[illegible] - [illegible] - نہ ٹکڑے ہونے والا - اپنی سوتنترتا

परम = سب سے اونچا स्फुटम = روشن प्रकाश = پرکاش

स्वभावं = سوبھاؤ والا भगवंत = ایشور کو

प्रपद्ये = شرن میں آتا ہوں

धारी आदि = आदمی ... कृत्रि =

प्रहन्ता = ... तत = ... कार

गुरी कारेश = ...

एतादृशो = ...

वाम = ... स्वामात्र = ... (...)

→ ...

प्रपच्य → ... समाविद्याभि ...

इति यावत ...

प्रनेन = ... गद्गराक = ...

वाक्यान = ... परम = ... उपादया =

स्व ... = ...

उपादिपाता = ... गरगरा = ...

(17)

हेय = ~~گرہن کرنے~~ چھوڑنے والی یا چھوڑنے کے قابل ہے
उपादेय = گرہن کرنے والا یا کے قابل ہے

वक्ष्यमाण = آگے ہونے والے شاستر کے हेय = چھوڑنے کے

उपादेया = گرہن کرنے کی तयो: = ان دونوں کے

सकलग्रन्थ = سارے گرنتھ کا प्रथी: = [illegible] - [illegible]

(?) उपक्षेप: = شروع कृत: = کیا ہے،

اور شروع ② एवं = [illegible] प्रकरण = پرسنگ तात्पर्यम् = غرض ہے

پرتگیا دونوں کا سروپ اور شروع ... اس کا سمجھ کر प्रतिपाद्य स्वरूपं = دونوں کا سروپ

स्तुति द्वारेण = اس استوتی سے प्रतिपाद्य = سمجھا کر

इदानीं = اس وقت اب शास्त्रावतारम् = شاستر کا شروع کرنا -

प्रतिजानीते = پرتگیا کرتے ہیں → (شاستر شروع کرنے کی پرتگیا کرتے ہیں)

ان چاروں سے {
सम्बन्धा = سمبندھ प्रयोजन = [illegible]
اس شاستر کا سمبندھ کیا ہے - اس کا ادھیکاری کون ہے
ग्रन्थकृत = گرنتھ کرتا شاستر کا प्रायोजन = دو انوبندھ ہے
}
بہ شکل ہے - [illegible]

प्राह = کہتا ہے

(2) गर्भाग्नि के = گربھ اگنی — वास = بس → گربھ بس - آتا

पूर्कि = پورے — سے گربھ میں آتا ہوا — मरणा तक = مرنے تک

दुख चक्र = دکھ چکر میں — विभ्रान्त = بھولا ہوا

उधारे = ادھار — بچا لے گی — भगवन्त = بھگوان

بھگوان یا ناتھ جی کو شِشیہ (مہا وید فقیر) پرشن کرنے لگا -

शिष्य = شِشیہ — पप्रच्छ = پوچھنے لگا

परमार्थम् = سچ ادھم کو {پرم ادھم پوچھنے لگا}

یہ شِشیہ کیسا تھا - یہ گربھ سے مرنے تک دکھ والے چکر میں پھنسا ہوا - ایسے گرو یا ناتھ جی سے پرما ادھم یا ایشور پوچھنے لگا ہے - یعنی سب سے بڑی شکتی ایشور کا پرما دھم کیا ہے -

उपाधार कारिकाभिः = یا ناتھ جی اپنی ہوئی جو کاریکائیں میں ہیں - اُن سے

ते = اُس شِشیہ کو — गुरुः = گرو — अभ्यभाषत = شِشیہ کو یہ کاریکائیں سنانے لگا

तत्साम = ان کاریکاؤں کو جن میں جو سار ہے — وہ بتانے لگا

جو دھیان سے شِشیہ کو ایشور کی — اُلجھا سار -

جو کہا جاتا ہے.

कथ्यते = کہا جاتا ہے ... श्रीअभिनवगुप्तः = ابھینوگپت نے

शिवशासन दृष्टि = شیوشاسن کے نظریے سے ... योगेन = جوگ سے

شیوشاسن جو سوامی جی نے بنائی ہے - اس سے پہلے جوگ سے ابھینوگپت

نے اس گرنتھ کا سار کہا ہے:

कश्चित = کوئی भगवत्प्रसादात = بھگوان کی کرپا سے

समुत्पन्नवैराग्य ⟶ संसारात विरतमति =

سنسار سے جس کی بدھی ہٹ گئی تھی - (وہ کوئی ایک)

गुरो : گرو سے शासनीया = ... प्रसिध = ...

* مجھے جاننا ہے گرو سے جانا جاتا ہے اس کو پانا ہے اور ... کیا جاتا ہے ایسی ... گرہن کرنا چاہئے *

{ مجھے گرو سے اپدیش گرہن کرنا چاہئے - ایسی بات مان کر }

*इति मत्वा = یہ مان کر

* सद्गुरुम = ست گرو کو आधार भगवन्तं ⟶

श्री पारम्यं मुनिं = شری پارمیہ منی کو सम्यक प्रार्थ्य =

(جو مہا منی تھے) اچھی طرح سے پرارتھنا کر کے

परमार्थ उपदेशं = پرمارتھ اپدیش

स्वरूप (ज्ञान) (...) पृष्टवान = پوچھا -

(...)

(...)

[illegible] →

तदा = تب   तद्योग्यता = اس کے لائق ہونا

परिपाकं = پکنا / پختگی   स्वरूप = شکل [illegible]   परिशीलन = [illegible]

[illegible] - ادبیاتی [illegible]

क्रमेण = آہستہ آہستہ

ते = وہ → शिष्यं = شاگرد کو   विगलितमलः = میل نکلے ہوئے

अन्तःकरण = [illegible]

मत्वा → مان کر

جب استاد نے دیکھا کہ شاگرد کا [illegible] کا میل دور ہو گیا ہے - [illegible] -

सोऽपि → وہ   अनन्तनाथा = [illegible]

[illegible] निःशेष = سارے (کل)   शास्त्रोपदेशात् = سب شاستروں کے اپدیش [illegible]

परमार्थसार नाम्ना = [illegible]

आधारकारिकाभिः = [illegible] →

इत्यं = اس طرح سے   अपराभिधान ग्रथन = [illegible]

[illegible] सांख्य = سانکھیہ [illegible]   नायो = [illegible]   उक्त = کہا   उपदेश

अनुसारेण = اس کے مطابق   प्रकृति पुरुष = [illegible]

[illegible] ←   [illegible]

विवेक = دوربینی   ज्ञानात् = گیانہِ باپتھ سۄتھاہ " بیۄن بیۄن زانِنہٕ سۄتھاہ

इति वचनं = یِتھہٕ کتھہٕ   एतं विज्ञाय = اِمس زانِتھ

प्रोक्तवान् = ووٚن — یِمہٕ کتھہٕ اوس یارِ
انُٹھۄن کُنہٕ

स एव = سُے   ۔ ब्रह्मो परमः : — یِہٕ ابرُش
جُ اِمسنہِ شُنٛدِ نوُ کُن

परम् اَدٕ   स्वरूप प्रत्यय = اَدٕ سُروٗپ

स्वस्वातन्त्र्य = پنٛنِس سۄتنتر ↑ اُس इत्थया = اِمس وزٕ سۄتہِ
(اِمہٕ شۆ ووژنس سۄتہِ)

प्रतिपादित : بتاوِ سۄتھ

सव = چھُ   युक्ति = یُکتھِ سۄتہِ   ۔ युक्ता = یُکتھِ سۄتہِ

भवति = چھُ   इति मत्वा = یِی زانِتھ سۄتہِ

सर्वं जगत् = سٲری دُنیا ،   अनुग्रहीतुं = اَنُگرہ کرنہٕ خاطرٕ

परमाद्वय = پرم اَدوَیہ   प्रोक्त वचन = وٕنہٕ یُن کتھہٕ
دُنیہٕ

श्री युक्त्या = یُکتھِ سۄتہِ

"गुरुः प्राभिनवेन" → گُرو اَبھنو سٕب ـــ " اَکھ

अलौकिकत्व = [illegible] -

चिद्चमत्कार = [illegible] स्फोरणा = [illegible]

"गुप्ता" → چھپا ہوا → गुह्य = [illegible] →

सरहस्य = بھید سمیت इति — اس طرح

सोऽयं = وہ یہ पुण्यनाम = [illegible] प्रथार आलि = [illegible]
([illegible])

तत्सारं → [illegible] तस्य = اس کا परमार्थ उपदेशस्य [illegible]

यत् सारं → [illegible] → दृष्टा = [illegible]

नवनीतमिव = [illegible] उपदेये = [illegible]

— [illegible]

स्फुरं पर = [illegible] अनुग्रह प्रवृत्तः [illegible] सव = [illegible]

प्रतिपादिता = [illegible] - इति — [illegible]

एवं = اس طرح संबन्ध = [illegible] अभिधेय = [illegible]

अभिधान = نام   प्रयोजन = غرض   फ़ायदा = وغیرہ

उपपादिता = ثابت کی / دکھائی

جو کچھ بیان کیا گیا - اس کے سمبندھ - ابھیدان - ابدی - پریوجن چاروں کا وضاحت ہو گیا -
(سمبندھ = تعلق، ابھیدان = نام، ابدی = مضمون، پریوجن = مقصد)

یہاں تو پھر شاستر کو بھاری ہونے کا ڈر ہے — न इह पुनः = یہاں پھر شاستر میں   ग्रन्थगौरव = شاستر کا بھاری ہونا / لمبا ہونا

भयात् = ڈر سے (تاکہ شاستر لمبا نہ ہو)   प्रतन्यन्ते = پھیلائے گئے

ان کو یہ سمبندھ - وغیرہ بیان نہیں کیے گئے یہاں دوسری جگہ سے نہیں لکھے

कीदृशः = کیسا   स = وہ   शिष्यः = شاگرد

इत्याह — اس بارے میں بتلاتے ہیں 'गर्भाधिवास' इति.

شروع سے گربھ میں رہنا ہوتا ہے - { गर्भाधिवास प्रारम्भं जायते = گربھ واس سے شروع ہوتا ہے

अस्ति = ہے   वर्धते = بڑھتا ہے / پیدا ہوتا ہے   विपरिणमते = بدلی ہوتی ہے

अपक्षीयते = کمزور ہوتا ہے   विनश्यति = ناش ہوتا ہے   इति →

ایسی ایسی   तत् तत् अवस्थावैचित्र्येण = اس اس اوستھا کی وچتر سے

षड्भावविकारेणाम् = شش قسم کی تبدیلیوں کا [illegible] 5. यत्तु = جو شخص [illegible]

यत् = 3. "मरणान्तकदुःखरूपम्" → وہ شکل جو سب دکھوں کی [illegible] ہے

आविर्भावा = ظاہر ہونے سے तिरोभावात् = چھپنے سے

[illegible] संसरण = پھرنا स्वभावस्य = سوبھاؤ کا [illegible]

चक्रमिव = چکر کی طرح "चक्रम्" چکر جو [illegible]

तस्मिन् = اس چکر میں — میں پڑا ہوا विभ्रान्तः →

विपरिवृत्तः = زمانوں سے [illegible] — (اس چکر میں پڑا ہوا) [illegible]

अनेन = اسی سے (چکر سے ہوا) पुरुषस्य = اس شخص کو

प्रागजाति = پہلے جنموں کی स्मरणा = [illegible] स्वभावाः = اس سوبھاؤ کے سے

[illegible] बोधा = بودھ آविर्भाव = ظاہر ہونا

[illegible] — [illegible] — [illegible]

[اس شخص کو [illegible] میں [illegible] جگہ میں پڑا ہوا —]

द्योतितः = دکھایا، اس پر } → جھکا ہوا [illegible]

अन्यथा = اگر ایسا نہ ہو تو   कथं = کیونکر

काष्ठा = لکڑی   प्राप्त = [illegible]   लक्षण = [illegible]

प्रश्न = پوچھنا   कुतूहलित्वे = [illegible]

स्यात् = ہو گا - کیسے ہو گا -
[illegible]

एवं च = اور ایسے   यत् = کہ   2. समुत्पन्नवैराग्य: [illegible]

परमेश्वरानुग्रह = [illegible]

विह्वलहृदय : agitated [illegible] → [illegible]

agitated

समुचितस्वयंप्रकाश: [illegible]

उपदेशपात्रताम् = [illegible]

शावाय्य = [illegible]

परमेश्वराकारं = [illegible]   समुचितमपि = [illegible]

गुरो = [illegible]   समासाद्य = [illegible] ([illegible])

[illegible]

परमदुर्ज्ञानम् = بہت مشکل سے جانا جاتا ہے   प्रभिलप्यते = کہا جاتا ہے / خواہش کرو

स एव = وہی   गुरुपदेशप्रभावात् स्यात् = وہی استاد کے اپدیش کے پربھاؤ سے ہوتا ہے (اثر)

इति = ایسا

एतस्यैव च = ~~اسی کا~~ یہی بات   प्रणयनात् = دوسری جگہ

उक्तत्वे = کہا ہے

~~इति~~ – شکتی پات دو قسم سے ہے دیوی یعنی جانا نہیں گیا ہاں –
مطلب گرو والا جو ہے – وہ شکتی پات دوسرا ہے –
ست گرو پراپتی

इति → दीयते = دیا   परमे ज्ञाने = اونچے گیان میں پایا ہے   क्षीयते = ناش کو پراپت ہو
कर्मवासना = [illegible] → یہی دیکھا جاتا ہے

इह च = اس شاستر میں   परस्तात् = آگے   वक्ष्यते = سنائے گا یہی بات –

अधुना = اس وقت   समुत्पादितक्रमेण = اپنی [illegible] کرم سے

~~पीठ~~ पीठिकाबन्धं विधाय = باندھ کر بیٹھا / بنیاد کی ودھی سے

Introduction

विश्व = دنیا کو वैचित्र्य = عجیب پن اس चित्रं = اس عجیب سے جو بڑا ہے

यस्मिन् जगति = یہ جگت (جس)

पारमेश्वरम् = پرمیشوری अनुत्तमं = سب سے اعلیٰ

स्वातन्त्र्यम् = سوتنترتا एकमेव = ایک ہی وہ

संयोजन वियोजन = ملانا اور جدا کرنا कुतूहल हेतुः

+ بھی کھیل کے واسطے ہی جو ہوتی ہے — یہ لیلا ہے

इति = اس طرح ततः = اس پیدا ہونے کی

प्राकृतिविकासमेव विश्वम् = یہ جگت پرکرتی کا وکاس ہی ہے

ब्रह्माण्ड चतुष्टय मुखेन = چار انڈوں کے مکھ سے

प्रावरणम् = اپنی طرح چھپا ہوا کرنا ग्रन्थम् = شاستر کو

अवतारयति = دنیا میں اتارتا ہے گرنتھ کو دنیا میں اتارتا ہے

(५) निज शक्ति = اپنی شکتی   वैभव = ویبھو

भार भराद् = بڑے بڑے (مطلب بڑی سے بڑی)

چاروں → अराड चतुष्टय = چار انڈ   यदे = جو

विभागे ने = بھاگ سے – یعنی الگ الگ

– ب शक्ति = شکتی انڈ   माया = مایا انڈ

प्रकृति = پرکرتی انڈ   पृथ्वी = پرتھوی انڈ   इति = اسی طرح

प्रभावित = پرکٹ ہوا   प्रभुणा = پربھو نے

جت آنند کی   प्रभुणा (پربھو نے) = → चिद् .... स्वतन्त्रेण (اپنی مرضی سے)

भगता = بھگوان   सेश्वरेण

بھگوان ایشور نے – اسی پرم شو

अराड चतुष्टये = ان چار انڈ

विश्व प्राच्छादकत्वेन = جگت کو ڈھانپنے والا

کارن   कोश रूपतया = کوش روپ سے (کر)

वस्तुपिंड भूते = پدارتھوں کا پنڈ   इदम् = یہ جگت (یہ جگت پیدا ہوا)

यदुत्तम = اس میں اتم

वस्तुपिंडभूतम = دستوں پدارتھوں کا گولا کہی انڈ ہے

इति = ختم ہوں

"प्रभावितं" → प्रकाशितं = سامنے لایا ہوا - برداشت کیا

भवत्कृतया = آپ کی کرپا کر کے (جو آپ نے مجھ پہ کی کرپا)

(اسی طرح ہم شو میں پرکاش کر رہا ہوں)

भवते = آپ کے لئے

प्रयुक्तानि = ہوئے (یا خود پرکاش ہوئے)

कस्मात् = کیوں کس سے   इत्याह = بتاتے ہیں - (اس طرح بیان کیا ہے)

"निजशक्तिवैभवभरात्"

"निजः" → स्वात्मीयो = اپنی - اپنی ہی ।   योऽसौ = جو ہے

असौ = وہ ہے جو

इच्छाख्य = اچھا روپی   "शक्तिप्रचयः" = شکتیوں کا زیادتی

तस्य = اس کا جو   "वैभव" = دیکھو

वैभव → विचित्रः = نانا روپ

प्रसर: پھیلاؤ - تانا - → तस्य اس کا جو

योऽसौ جو "भरः" بار → زیادتی

समुद्रेक: زیادتی - اس کا مطلب ہے

तस्मात् इति = اس لئے ایسا سمجھو

भगवतः = بھگوان کا किल = یقینا स्वशक्ति

اپنی شکتی کا

विकासं = پھیلاؤ سوامی کا

स्फार = بڑا एव = ہی ہے जगत् निर्माणं

جگت کا نرمان وہ بھگوان کی شکتی کا پھیلاؤ ہے۔

= یہی بتایا ہے سروشکتی مان نے

शक्तिश्च = شکتی بھی

शक्तिमांश्चैव = شکتی مان بھی - شکتی ماں بھی

पदार्थद्वयम् = یہ دو پدارتھ ہیں उच्यते = کہے ہیں

शक्तिया अस्य = اس پرمیشور کی شکتی یہی ہے

जगत् सर्वं = یہ سارا جگت ہے

शक्तिमांस्तु = شکتی مان تو خود ہی ایک مہیشور ہے

महेश्वरः =

اکیلے وہ شکتی مان ہے۔

किं-रूपा = کس روپ ہے प्रपञ्च चतुष्टय संख्या = اس اندر سنکھیا کی

इत्याह = ایسا کہتے ہیں

جو شکتی اندر [illegible] ہے ?:— शक्ति माया, प्रकृति, पृथ्वी = شکتی مایا - پرکرتی - پرتھوی اس روپ ہے - وہ

विश्वस्य = وشو کی پرماتر اور پرمیہ प्रमातृ प्रमेय रूपस्य = (جانتی) [illegible]

اور [illegible] پرماتر [illegible] — परानन्द चमत्कार सार स्यापि = پرانند چمتکار سار روپ ہے

स्वस्वरूप = اپنے سروپ کا उपोहन = ڈھکنے والا

[illegible] — प्ररव्यातिमयी = ویسا اپنا آپ ہے (نہ جاننا)

Negate کرنے والی — निषेध व्यापाररूपा = [illegible]

Negating Power.

या = جو ہے

पारमेश्वरी शक्तिः پرمیشور کی شکتی

सर्वं = سب ग्राह्यग्राहकत्वेन = [illegible]

बन्धकतया = بندھن [illegible]

शक्तिडरडम् = اسی کو شکتی [illegible] کہتے ہیں

इत्युच्यते = ایسا کہا جاتا ہے

सदाशिवेश्वर- शुद्धविद्यातत्त्व — سداشو - ایشور
پرتھوی سے شدھ ودیا تتو تک

पर्यन्तदले = — دلوں میں — پتوں

سطح

सत् = ست - سچ — سچ مچ موجود ہے

वक्ष्यमाणम् = بیان کئے جانے والے = جو آگے بیان کئے جائیں گے

पद्मात्मकम् प्रवृत: = شیو تتو اندر کی شکتی اندر ہے

'स' बीज सत् — وہی ہے - 'س' جو اپنے ہی میں رکھے ہیں

समन्तात् = چاروں طرف — गर्भीकृत्य = گربھ میں لا کر
اپنے میں ہی رکھ کر

प्रवतिष्ठत = ٹھہری ہے
(یہ شیو تتو 'س' سچ میں ہی ٹھہرے ہیں)

इति = اتنا ہے — कोशारूपस्पत्या = کوش روپ سے

एषा = یہی شکتی — प्रगुण प्रबोधन =
اسی شکتی سے بدھ ہے

संज्ञिता = نام لی گئی ہے

स तस्मिन्नण्डे = اسی شکتی اندر میں — सदाशिवेश्वरादि = سداشیو ایشور وغیرہ

प्रधिपती = مالک ہیں - پرتھوی تتو سے → اس شکتی اندر ہیں

प्रत्यक्षं = اندر کی   मलत्रयस्वभावं = تینوں ملوں کے سوبھاو
(آنو مل - مایا مل - کارما مل)

मोहमयं = موہ بھری - اگیان روپ

भेदैक = ایک ہی بھید   प्रवणतया = لگنے سے
کیول بھید ہی بھید ہی ہیں یہ جس اندر   → (یہ اس اندر بھید ہی بھید دیکھ رہی)
↓
یہاں صرف اب بھید ہے -

(بھی اس بالکل ابھید) - شکتی روپ بھید اور ابھید

सर्वप्रमातृणां = جو سب پرماتا ہیں - انکو   बन्धरूपं = بندھن روپ
(جہاں بندھن ہے)

पुंस्तत्त्व = پرش روپ (جیو)
पर्यन्तस्थले = تک
پرش روپ تک جو بھی (ہیں) ہے → انکو لئے

मायाख्यमण्डलम् = مایا منڈل ہے

तत्र = وہ   वक्ष्यमाणम् = آگے کہینگے

पराङ्मुखम् = دور اندر   प्रान्त = اندر میں   समन्तात् = چاروں طرف

स्वीकृत्य = اپنا کر   स्थितम् = ٹھہرا ہے

یہ باقی دو اندر اس مایا اندر اپنے میں ہی ٹھہرائے ہیں - مایا نے انکو اپنے پیٹ میں لیا ہے

प्राज्ञाधिपतिश्च = اس کا ہی اللہ میاں = پربھو مالک اور سوامی بھی

गहना = گہنا प्राभिधाना = نام پرست مذکور: یعنی ہے

— اس اللہ کا ایک بھید ہے — مطلب یعنی نام پرست ہی پرانا لبنا ہے

तथा = اسی طرح सत्वरजस्तमोमयी = ستوگن - رجوگن تموگن بنی - جس پر ایک ہی ستم ہو (اس طرح ست رج تم ہے)

وہ "प्रकृति" پرکرتی → कार्यकरणात्मना = کاریہ اور کارن یعنی

परिणामतया = پریورتن ہونے والی सती = ہوتے ہوئے - ہے غالب ہے

پرکرتی کا نام کارن سب میں شامل ہوتی ہے —

(پرکرتی ہی کا نام ہے — وہ رہی جو اسنا ہی کاریہ اور کارن روپ بنتی ہے)

पुरुषप्रमातृणां پرش یعنی جیو آتما (اس لئے ہے) کو भोग्यरूपा = بھوگنی (اس روپ میں ہو رہی ہے)

सुखदुःखमोहरूपतया = سکھ دکھ موہ روپ سے (اس روپ میں ہوئی ہے)

बन्धयित्री = بندھن میں ڈالنے والی ہے = گرفتار کرنے والی - (جہاں سب کچھ ہونا ہی بندھن ہوتا ہے)

اسی لئے प्रकृत्यभिधानम् = پرکرتی نام کا

परोऽयम् = اور یہ इत्युच्यते = کہا جاتا ہے

तत्रापि = تاہم — پھر بھی (پھر بھی)

महाविभूतिः = بڑی ابھوتی والے श्रीभगवान् = شری بھگوان

७. निरस्य = چھوڑ کے भेदप्रधाना = بھید پردھان ہے

प्रजाधिपति = اس انڈا کا مالک بھی (جہاں بھید ہی پردھان ہے) چھوڑ کے

तथा = ویسے ہی पृथ्वी च = اور پرتھوی کو एवं = ایسے ہی

मनुष्यस्थावरान्तानां = منش سے گھاس پھونس تک (دار) (منش سے نباتات تک)

प्रमाणानां = ان پرمانوں کے प्रतिप्रकाररूप तथा = ہر پرکار روپ سے - قسم قسم کا روپ ہونے سے

स्थूलकञ्चुकमयी = (جہاں ہر پہلو کی) (ستر پوش بنتے ہیں) کثیف لباس کے - ... (ستر پوش)

बन्धयित्री = باندھنے والی - گرفتار کرنے والی (اسی کو اپنی بندش میں - جکڑنے والی)

इति कृत्वा = الگ کر पृथक्यराडम = اس کو پرتھوی انڈ کہتے ہیں

तत्रापि = اس اس پرتھوی انڈ میں चतुर्दशावि = ۱۴ پرکار سے

भूतसर्गो = جیو کی سرشٹی (۱۴ پرکار کی)

دیوتاؤں کی آٹھ پرکار - برہما - پرجاپت - اندر - پتر - گندھرب - رکھشس - پشاچ - گندھرو = 8 }

دوسرا دیا ہوا ... - ... - ... - ... - ...

تیسرے - سیاروں سے منش (جو اس کی یاد میں) ہی ... کا ... میں ...

प्रधानतया = اس میں خاص طور سے

अण्डाधिपो = اس انڈے کا سوامی

भगवान् ब्रह्मा = بھگوان برہما ہے -

एवं = ایسا ہی ہے परमेश्वर विज्ञप्तिमतम् =

یہ بات ... پرمیشور ... کا مت ہے -

इदम् अण्डचतुष्टयं = یہ چار انڈے

भगवता = اس بھگوان نے इत्थं = اس طرح سے

प्रकाशितं = پرکاش کیا ہے پرکاشی ہے परिस्फुरति =

اسی کو جھلکاتا ہے - موجود ہے - سوجھتا ہے - (ان تمام انڈوں کی سوجھ اور موجودگی بھگوان کے پرکاش کی ہے)

(اور ثانی) एवं = ایسا ہی एतत = یہ अण्डचतुष्टयं = چار انڈے

प्रतिपाद्य = سدھ کر کے अत्रैव = اسی میں

भोग्यभोक्तृत्व = بھوگنے والا اور بھوگے جانے والا (چار انڈے میں)

प्रतिपादन = سدھ کرنے میں परतया = پرے سے

विश्वस्वरूप निरूपणाय = لئے وشوسروپ نروپن

(دکھلانے کے لیے)

कारिकामात्र = کاریکا ماتر سے

کہی -

اب دوسری کاریکا میں ہونے والے ہم روپوں میں اُس وشو سروپ کا نروپن کیا گیا ہے -

5

तत्र = [illegible] – ([illegible]) अन्तर = [illegible] – اندر

विश्वामित्र = [illegible] विचित्र = [illegible] तनु = [illegible]

करणा = [illegible] – [illegible] केवल [illegible] संतानम् = [illegible]

भीता च = [illegible] तत्र = [illegible]

[illegible] देवी = [illegible] – [illegible]

[illegible] – [illegible] → प्रिय = [illegible] हव = [illegible]

[illegible] गृहीत = [illegible] – [illegible] पशुभाव:

[illegible] – ([illegible])

[illegible]

तत्र → तेषु चतुर्षु प्रदेशेषु = [illegible]

अ. आगम प्रसिद्धेषु = [illegible]

[illegible] "विश्वम् इदम् अन्तर" → विश्वम इदम अन्तर = [illegible]

कीदृशम् = [illegible] इत्यादि = [illegible]

"विचित्र" → रुद्र-क्षेत्रज्ञ भेदाभिन्ना नानामुख हस्त पादादि रचनारूपा

[illegible]

"विचित्र" [illegible] ता] [illegible]

"तनवः" = [illegible] ([illegible]) →

आकाराः = [illegible] → विविध संस्थानरूपाः = [illegible]

[illegible] प्राणिभृताम् = [illegible] }

Difference in different species which are specific

तथा = [illegible]

[illegible] अन्योन्य भेदेन = [illegible]

([illegible])

اُس پید / اتی ہے

सातिशयानि = زیادتی ہے / ایک دوسرے سے زیادہ (یعنی فوقیت رکھتے ہیں - ایک کو دوسرے سے ـــ)

"करणानि" حواس → चक्षुरादीनि = آنکھ وغیرہ

तत् यथा → وہ یعنی کس طرح / یہ اُن حواس کی ایک دوسرے سے زیادتی ہے } - وہ اس طرح سے ہے -

रुद्र प्रमातॄणां = رودر پرماتاؤں کی

ایک دوسرے میں → निरतिशयानि = } بے حد کی زیادتی نہ ہونے سے / زیادتی سے دور

सर्वज्ञत्वादि गुणा = سب کچھ جاننے کا گن / صفت

गणा = اُن کا گروہ   युक्तानि = اکٹھے ہیں

→ ते - یہ رودر پرماتا   किल = یقیناً

सर्वमिदम् = سب یہ   एकस्मिन् क्षणे ایک ہی لمحہ میں

युगपत् = اکٹھے   ज्ञायते = جانتے ہیں

وہ رودر ایک ہی ساعت میں جان سکتے ہیں - یہ فرق ہے ایک دوسرے میں (سب چیزوں کو).

लभ → सम्पद्यते = ہو جاتے ہیں / ... - یعنی کام ہو سکتے (رودر ایک ساعت میں)

یہ رودر پرماتا ایک ہی لمحہ میں سب ساری چیزیں ایک ہی ساعت میں جان سکتے ہیں - کر سکتے ہیں - دیکھ سکتے ہیں - وغیرہ

جواب شیو برہمانی میں -

क्षेत्रज्ञानां = [illegible] पचुर = [illegible] इतान्येव = [illegible]

करणानि = [illegible] ([illegible]) ([illegible])

[illegible] → परमेश्वर = [illegible] नियतिशक्ति = [illegible]

नियन्त्रितानि = [illegible] सन्ति = ہیں ([illegible])

घटादि पदार्थमात्र = [illegible]

ज्ञान = [illegible] करण = [illegible] समर्थान्येव = [illegible]

([illegible])

न = نہ ते = وہ [illegible] सर्वे = سب ज्ञायते = [illegible]

([illegible]) - وہ سب [illegible] - ([illegible])

नापि क्रियते = نہ ہی سب کچھ کر سکتے ہیں

तत्रापि = [illegible] ([illegible]) योगिनाम् = [illegible] ([illegible])

प्रतिपाद्य: करणानाम् = [illegible]

([illegible]) [illegible]

यत = [illegible] नियतिशक्ति = [illegible]

[illegible] समुल्लङ्घनात् [illegible]

[illegible]

तदीये करणे = [illegible]

दूरव्यवहितं च = [illegible] विप्रकृष्टम् = [illegible]

पापि = [illegible] पारिच्छिन्ने = [illegible]
([illegible])

परप्रमातृगतं च सुख = [illegible]
दुःखादि ज्ञायते = [illegible]

एवं च = [illegible] तिरश्चामपि = [illegible]

[illegible]

नियतिशक्त्या संकुचिता = [illegible]
नामापि
मनुष्येभ्योऽपि [illegible] प्रतिशय = [illegible]
करणानां = [illegible] विद्यते = [illegible]

तत् यथा = [illegible] गावः = [illegible]

स्वगृहे = [illegible] व्यवहितमपि = [illegible]

पश्यन्ति = [illegible] ([illegible])

पश्वा = [illegible] रात्रावपि = [illegible]

मार्गम् = [illegible] ईक्षन्ते = [illegible]

गृध्रा = گدھ योजनशतगतमपि = [illegible]

आमिषम् = گوشت प्रलोकयन्ति = دیکھتے ہیں

पक्षिराजा = [illegible] मक्षिका = مکھیاں

मषक = مچھر पर्ययन्तो = [illegible] ([illegible])

पाकाप्राविद्धोरगा = [illegible] दृश्यन्ते = [illegible]

सरीसृपा = سانپ उरसा = چھاتی سے पन्थानं = راستے

गच्छन्ति = چلتے ہیں [illegible]

ईषा च = [illegible] शृण्वन्ति पादन्यासान् = سنتے ہیں

उष्ट्रा = اونٹ दूरादपि = دور سے بھی गतात = [illegible]

श्वासमात्रेण = [illegible]

सर्पमाकर्षयन्ति = سانپ کو [illegible] इति = اس طرح

एवं = [illegible] सर्वत्र = ہر جگہ

करणवैचित्र्यम् = [illegible]

ऊह्यमे = [illegible] (Likewise)

You can enlarge the idea of vichitarta.

तथा "भवनानि" = ایسے مکانوں کو

प्रागमप्रसिद्धानि = جو شاستروں میں مشہور ہیں

वर्तुल = گول   त्र्यस्र = سہ گوشہ   चतुरस्र = چوکور

अर्धचन्द्र = نیم دائرہ   छत्राकार तथा = چھتری کی شکل اور

ان کی شکل ایسی ہو

سम्प्रतिप्राय संस्थानानि = ان مکانوں کی شکلیں (قریب) → ان کی شکل والے

[illegible]

इति = اسی طرح

"विचित्रो" = طرح طرح → नानाजातिप्राया कृतस्वभावः
طرح طرح کی شکلوں کے بنے ہوئے مکانات

एषो = یہ → "तनुकरराभुवनानां"
مکانوں کی شکل - مندروں کی

Ever under Negeti.

संतानः = نسل → पवित्रत = پاک

बन्धा = بندھا   پاکی   प्रकाशः = روشنی

यस्मिन विश्वस्मिन = جس دنیا میں   नत = جھکا ہوا

एवं विधं = اس طرح   विश्वं = دنیا

مختلف صورتیں - مختلف شکلوں - مختلف مندروں میں مختلف شکلیں اور ان کی مختلف شکلیں
نا نا پرکار کی صورتیں - شکل اور مندر کی اقسام ہیں

اب اس سنسار میں جہاں بھوگنے یوگیہ ہے - وہاں اس بھوگنے والا بھی ضروری ہے - وہ بھوگنے والا شریر دھاری ہے -

एवं विधे च = ایسے ہی کی ; इदम् = اس

भोग्य = بھوگنے یوگیہ وستو ; विश्वस्मिन् = اس سنسار میں

भोक्ता = بھوگنے والا ; आत्मने = آتما کے لئے

= آتما کے لئے ہے ; 'भोक्ता च तत्र देही'

یہ بھوگنے والا کون ہے → तत्र = وہاں ; देही → دیہہ دھاری -

جو انو کو ان تین ملوں نے ڈھکا ہے دیہی بھوگ کو بھوگ رہا دیہہ دھاری سکھ دکھ آدی شریر بھوگنے والا شریر ہے -

→ मलत्रयं = تین میل ; प्रपद्यते = پاتا ہے

देहा = دیہہ ; دیہہ کے ; भोगायतन = دیہی کا بھوگ گھر

विश्वते = ہے اور ; यस्य = جس کی

ہے اور سکھ → دیہی ; प्रशोगा = جو →

دی "देही" — دیہہ دھاری

سکھ دکھ آدی کو بھوگ کرتا ہے

یہی شریر دھاری

इह "स्थिती"

سکھ دکھ آدی ہے جو یہ شریر ہے

उपरिस्थित = [illegible] भोक्ता → [illegible] →

सुखदुःखाद्यनुभविता = سکھ دکھ وغیرہ کو [illegible] والا →

उच्यते इति कथ्यते – [illegible]

ननु = [illegible]

पर प्रमात्रपेक्षया = دوسرے [illegible] پرماتا [illegible]

परमात्रस्यापि = [illegible]

न भेदो विद्यते = [illegible]

کیا कृतः = [illegible]

तद्व्यतिरिक्तो = [illegible] देही = [illegible]

नाम = [illegible] वराका = [illegible]

– [illegible]

[illegible]

प्रदेश = پردیش (ٹکڑا)   ब्रह्मणः = پرا برہم   सार्वरूप्यम्

پرا برہم B سارو روپ کا ایک پردیش ماتر ہی

प्रतीतक्रान्त = ہر الگن میں گیا   प्राविकल्प्यम् = مقادِ کلپ میں کیا تھا

نہ کسی کی کلپنا میں آیا - یہ کہیے کہ کسی نے اس کا پار نہیں پایا -

ایک پردیش ماتر (Space) ہی پرم برہم کا سارو روپ ہے خالی نہیں ہے - اور سارو روپ ہے اور کلپ ہے -

برہم کا کسی کو کوئی جگہ نہیں - وہ ہر ایک دیس میں وِیاپت ہے

एकत्र च = ایک ہی جگہ اکٹھے   तत्त्वेऽपि = تتوں میں [پرا تتو کا (ان تتوں)]

षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपता = 36 تتو روپ میں ہونے

इति न्यायाच्च = اس نیائے سے   एक एव = ایک ہی

स्वशक्तियुक्तो = اپنی شکتی والا   महाप्रकाशवपुरेक = مہا پرکاش شریر والا

स परमेश्वर = وہ پرمیشور   ہی ہے   प्रमाता = پرماتا (جاننے والا)

सर्वतोऽभिन्न एव अवभासते = ہر طرف سے نہ بٹا ہوا ظاہر ہوتا ہے

ततो = اس لیے   भिन्नस्य = بٹے ہوئے کی   स्वप्रकाशमानस्य = وہ خود پرکاشمان ہے

देहिनो = دیہدھاری (جیو)   प्रसितत्वमभ्युपगमेऽपि = اگر مانیں بھی تو =

اس کے علاوہ اگر اس کو مانیں ہی

(وہ بھی جڑ ہی ہے)

प्रकाशमानत्वानुपपत्ते = مگر یہ پرکاش مان حالت (یعنی پرکاش والا ہونا) ہی
ہے اُسی شُدھی میں ہے -
مگر یہ نہ تو کر سکتا ہے اور
نا ہی جان سکتا ہے

اُس کی न = نہ सत्ता = ستا निश्चीयते نشچے کیا جائیگا
(یعنی ست مانا نہیں جائیگا) - پھر اُس میں ستا کیسے رہیگی -

प्रकाशेत चेत = اگر یہ جانیں کہ جانتا بھی ہے - پرکاش } اگر یہ جانیں کہ جیسے
یعنی جانتا بھی اور کرتا بھی ہے } اگر نہیں پرکاش ہے

तस्मिन् = اُس परब्रह्मात्मनि = پرم برہم سروپ میں

तर्हि = تب प्रकाशाभिन्न~~…~~ تب یہ پرکاش سے بھی نہ بنے
ہے

اِکو دوجا एक: प्रमाता = (ایک ہی) اکیلا
ایک ہی جانتا ہے - اور کوئی بھی - (جیو آتما)

पुनरपि = اور بھی ~~किं = کیا परत्वेन =~~

किं परत्वो = کس پر ٹھہرا ہے کیا पर्य = پر

یہ بھید کس پر منحصر ہے } भो
भेद = اسی بنا (کیونکہ اور ہوتا کا) = کیونکہ بھید کا کس सन् = ہوتے ہوئے

इति सर्वं = یہ سب کچھ   समर्थ्यमान = سدھ کر رہے ہیں

प्राह = کہتے ہیں

"शिव एव गृहीत पशुभाव." — شو ہی نے پشو بھاو گرہن کیا ہے

योऽयं भगवान् = جو یہ بھگوان

समनन्तरे = اس کے بعد   प्रतिपादित: = سدھ کیا

(بھگوان کا ذکر کیا گیا ہے)

کیا سدھ کیا : चिदानन्दैकघन: स्वातन्त्र्यस्वभाव: — بھگوان کا سدھ کیا ہے
جو آنند گھن سواتنتریہ سوبھاو والا

وہی "शिव:" تو ہے

स एव स्वरूपगोपनासतत्त्व: =
وہی تو سروپ کا گوپن کرنے سے اسی سے وہ پشو ہے

सन् = ہو کر

स्वेच्छया = اپنی اچھا سے   नट इव = ناٹک والا

لیا देहप्रमातृभूमिकां = دیہہ پرماتا کی بھومیکا کو
جیو ادھیکار کو

समापन्न: = لیتا ہے (جیو کی بھومیکا لیتا ہے)

पाल्यत्वात = پالا جاتا ہے - پالن کیا جاتا ہے

पशुत्वात = پشو ہونا   पशुसत्तालक्षण = پشو سا لکشن ہوتا

ہوتا ہے → सुखदुखादिमये = سکھ دکھادی مے

स्वयं-निर्मित = اپنے آپ سے جو بنایا ہے

(یہ سکھ دکھ وغیرہ انسان نے اپنے کرموں سے بنایا ہے)

प्रस्मिन भोग्ये = جو ہم بھوگتے ہیں

[illegible] भोक्ता देही = دیہہ دھاری پُرش بھوگتا ہے - इति कथ्यते

اسی طرح یہ کہا گیا ہے -

न पुनः = نہیں اور   प्राणविविरिक्त = شو ہر ایک سے الگ

किंचित् पदार्थजातम् = کچھ پدارتھ ہوتا ہے   प्रस्ति = ہے

(شو سے الگ اور کوئی پدارتھ نہیں ہے).

एष एव च भगवान् = یہی بھگوان   प्राण: = بھگوان کو

स्वातन्त्र्यात = اپنی سوتنترتا شکتی سے

भोक्तृभोग्यतथासां = بھوگتا اور بھوگیہ لکشن میں

اپنا آپ ہوتا ہے

इदं प्रमातृप्रमेय युगलकं = پرماتا اور پرمیہ کا جوڑا

क्रीडनकमिव = کھیلنے والی چیز جیسی   समुत्थापयति = اُبھار لیتا ہے

यदपेक्षया = جس کی اپیکشا سے (کھیل کی)

अयं = یہ   भेदप्रथानो व्यवहार = بھید پرتھان کا ویوہار ہے

(اس کارن سے یہ بھید پرتھان ویوہار ہے)

तस्मात् एतदेव = اس کارن سے

परमेश्वरस्य स्वातन्त्र्यं = یہی ہے پرمیشور کا سواتنتر   निरतिशयं = [illegible]

اس سواتنتر میں پرمیشور کی [illegible] ہے

यत् पूर्ण स्वरूपता परित्यागेन = [illegible]

भोक्तृ भोग्य स्वभावे = [illegible]

पशुभावम् = [illegible]   प्रपन्नोऽपि = [illegible]

सर्वप्रमातृणाम् = سب پرماتاؤں کی   अनुभवितृतया = انوبھوکتا ہونے سے

स्वात्मनि = اپنے میں ہی   [illegible]

प्रस्फुरति = فرنا ہے / ہوتا ہے   کیسے؟ کس میں → चिदानन्दैकघनः

← [illegible] ہے

27

एवमपि = اسی طرح   एक = ایک । चित्तस्वभाव: = چت سوبھاؤ

प्रमाता = پرماتا (یعنی دیکھنے والا -)   स यदि = وہی اگر

मायादि = مایا آدی کا   प्रमातृप्रमेयवैचित्र्य = پرماتا پرمیہ - یعنی جیو ... نانا روپ ہو جائے

नानत्वात = نانا پرکار ہونے سے   अनेक = سب

– ایک ہی تھا تو پھر – سب کیسے ہو گیا – یعنی دل میں

ایک ہی ہے تو سب کیوں ہے

इति = ایسا ہی ।   कथं = کیسے   विरुद्धं = الٹا

एकतया = ایک ہونے سے   व्यवह्रियते = دیکھا جاتا

اگر ایک ہی ہے - تو سب کیوں ہے - [illegible] یعنی وہ ایک ہے - کہ سب - [illegible] }   کیسے - کیا کیا ہے - کیا کیا ہے

एकश्चेत = اگر ایک ہی ہے   किमिति = کیوں - کیا ہے

नानारूप: = نانا روپ ہو سکتا ہے

इति ایسا ہی ।   छाया = چھایا   आतप = دھوپ

विरुद्धात = دو دو جو کے (جیسے چھایا اور آتپ) - [illegible]   वत = جیسے

چھایا - آتپ [illegible]

विरुद्धधर्माध्यासः = تو ایک میں دھرموں کا مخالف ادھیاس

समापतति = آن پڑتا ہے न पुनः = نہ بعد

अनेकरूप = ہو انیک روپ एकश्च = ایک ہی

पदार्थ = پدارتھ स्यात = ہے { ایک ہی چیز ہو تو بہت روپ / نہیں ہو سکتا }

सु वदुतकम = [illegible]

→

अयमेव भेदः = یہی تو ہے بھید — ایک ہی انیک نہیں بنتا

भेदहेतु = بھید کا کارن भावानां = پدارتھوں کا

بیان यत् विरुद्धधर्म = جو مخالف دھرموں کا ادھیاس ہے कारणभेदः वा = یا دونوں کارنوں میں بھید ہو — ہے دونوں بھید ہے

{ بھید کا جز کیوں ہی ہے — جو ہم نے بتایا ان دھرم میں ایک ہے اور سب رہتا ہے }

इति = ایسا लौकिकम् = لوک میں جو ہوتا ہے

अत्र = ایسی بات میں दृष्टान्ते = درشتانت प्रदर्शित = دکھایا

दार्ष्टान्तिके = اصل بات → جو درشتانت دیا گیا

18 चौर्ये = چوری میں समर्थयेत =
اب - پسند کرتا = سچ - ٹھہراتا ہے - اسکو سچ کرتا ہے ۔ اب ۲۳۳

(6) नानाविध = نانا پرکار کے वरवर्णिनां = عورتوں रूपं = روپ

धत्ते = دھارن کرتا ہے - کرتی ہے यथा = جیسے अमला = نرمل

स्फटिक = سفٹک جیسے सुर = دیوتا मानुष = منش

पशु = پشو पादप = درخت रूपत्व = روپ پن جیسے کو

तत्वत् = اسی طرح ईश्वरोपि = ایشور بھی اسی طرح

← یہ بھی نانا پرکار روپ دھارن کرتا ہے ۔

'यथा' = جیسے एकोऽपि = ایک ہوکر بھی

'स्फटिकमणिः' = سفٹک منی (ایک ہی ہے)

تو तत् = وہ लाक्षा = لال رنگ नील इति = نیلہ رنگ ہے

ان उपाधि = ان اپادھیوں کے वैचित्र्य = بڑا اس رنگ وچترتا सहस्रधा
سفٹک وچترتا دکھاتا ہے ۔ سہت

तत्र = وہاں वैचित्र्यं = وچترتا

स्वात्मनि = اپنے سروپ میں धारयन् = دھارن کرتا ہے

وہ ہی یہ سفٹک ہو

४६/

तथा विचित्रितो भवति = بہ گونہ رنگ برنگی دھبوں والا ہو جاتا
سو سب یہ بھی تنا ہے ۔ جس میں کا عکس ۔ اس سے وہ دھبوں والا ہوا ہے
اس پر پڑے ۔

न पुनः = پر نہ तस्य = اُس سفٹک کو
स्फटिकताहानिः = اُسکو سفٹکتا ہونے کو کوئی ہانی نہیں ہوتی ہے

एतावता = اتنے سے دھبوں والا ہونے سے

समुत्पद्यते = ہو تی ہے ۔ (نہیں) ۔ (کوئی پیدا نہیں ہوتی ہے)

एतत्रैव = یہی ہے स्फटिकमणि मारा = سفٹک والا ہونا (یہ بات ہر وقت)

کیا ہے ۳

यत् = جو سفٹک तत्र विशेषत्वम् = اُن اُن فرقوں کو ۔ صفائی پر

स्फाटच्छुरितऽपि = رنگ لگ کر بھی دھبے دھبے तादृमन = وہ سفٹک میں
اُسکی اپنا سفٹک ہونا

- کیسے میں स्फटिकमणियाप्रयम् = یہ جو سفٹک میں ہے (تو یہی کیسے ہو ۔)
دھبہ پڑنے سے اُس رنگ
کی چیز ہوتا کو

इति = اسی طرح प्रनाधिता = نہ بادا آئی ہوئی
نہ نشٹ نہ آئی ہوئی

सर्वस्य = ہر ایک چیز کو सर्वदैव = ہر وقت प्रतीति = جان

(یہ جان ''کہیں وُہ ہی ہوں'' ہر وقت ہر جیو میں موجود ہے)

اسی طرح جانی کہ یہ دھبے
[illegible] ہی [illegible] میں جھلکتی ہے ۔
کچھ اُس سے کوئی بادا نہیں +

केवलम् = صرف   प्रत्ये = [illegible]   प्रेमी = [illegible]

लाक्षादयः = لاکھ وغیرہ

स्फुरन्ति = فروزاں ہیں   इति व्यवह्रियते = [illegible] کہا جاتا ہے

न पुनः = نہیں تو

लाक्षाद्युपाधि = لاکھ وغیرہ کی اپادھی [illegible] - لال رنگ [illegible]

पटमिव = کپڑے کی طرح   ते = اور تو   विप्रतिपत्तिः = [illegible]

येन = جس سے   स्वरूपविप्रलोपोऽस्य = [illegible]

स्यात् = ہو جاتا (ذی روح [illegible])

तस्मात् = اس واسطے   एतदेव = یہی ہے

स्फटिकत्वे = [illegible]   मरणं = [illegible]

यत् = जो   उपाधिरूपान् = [illegible]

प्राकाशात् = [illegible]   विभाति = [illegible]

[illegible]

स्वस्वरूपतया = اپنے سروپ سے [illegible]

نوٹ च = بھی पृथक् = علاحدہ

ایشور نے جیووں کو پیدا کیا ہے - اور جیو ان سے (اپنے سروپ سے بھی) علاحدہ ہے -
(یہ دونوں وششٹادویت ہے)

तथैव = اسی طرح → وراشٹ

प्रथम ईश्वरः = پرمیشور स्वतन्त्रः = آزاد ہے

चिदेकघन = جو صرف پرکاش گھن ہے एकत्वेऽपि = اگر ایک بھی ہو ہے

स्वेच्छया = اپنی مرضی سے स्वात्म रूपिणः = سوائے روپ آتما کے

انسان اللہ देव-मनुष्य, पशु-पक्षि-स्थावरा- नानां = دیوتا منش پشو پکشی ستھاور وغیرہ

रूप-श्रोत्रादि पदार्थ रूपाणां = روپ شبد آدی پدارتھ
ایسے پدارتھ روپ

विषभजत = فرق کرنا (...) स्वयं = خود اپنے جو بنائے ہیں

स्वयं निर्मितानां = جو آپ نے بنائے ہیں (ان کی تخلیق ہے)

"रूपत्वे" جو روپ والا ہے वर्ण वैचित्र्य = رنگوں کا عجب ...

स्फटिकमणिवत् = جیسے بلور میں رنگ
اپنے میں ... آتما کا स्वात्माभेदेन =
اپنے روپ سے ... کر

? धारयन् = دھارن کرتے

سوائے روپ آتما ان رنگوں میں ...

اس نا پائیدار سے اوپر کی شے

[illegible] اسکا انداز ۲۰

ततोऽपि = اس سے بھی اوپر   समुत्तीर्णत्वात = [illegible]

प्रक्रम इत्येवम् = ایسے ہی (ہم) : کہ ہوتی ہے

परखण्ड चमत्कारे = بیان سے باہر چمتکار کا
کوئی فقدان نہیں

अपबृंहित = اس چمتکار سے جو دل کے بارے میں
آیا ہے - بڑھا ہوا

नानारूपेऽपि = اگر نانا روپ ہے بھی

एके = ایک ہی میں   स्वात्मनि = اس کی اپنی آتما میں سے ہے

प्रत्यवमृशति = ہر وقت برابر غور کرتا ہے
(بار بار بیان کرتا ہے)

इत्थमपि = اس طرح بھی   प्रस्थ = اسکو
(معروف براہمن کی)

एकत्वाखण्डनामयी = یعنی ایکتا کا جو کھنڈن [illegible]

भिन्नरूपा = اس سے الگ روپ - دو روپ -   देवता: = [illegible]

ایشور کی گرفت میں

कालो = کال   वा = یا   कश्चित् = کوئی

کوئی دفعہ - وہ کال پہلے نا کوئی ہے - جو اس میں نیا کا کھنڈن کرے -
کیونکہ سب اس پر ہیں - اسی سے ہیں -

यत् अपेक्षया = جس کی اپیکشا سے   एतस्य →

स्वात्म महेश्वरस्य   سوائم ... و ... [illegible]

विरुद्ध धर्माध्यासादि दूषणाम्   ... [illegible]

दूषणाम् = دوشن   इत्यतापि = اس لئے بھی

لہذا اسی اپیکشا سے ... دوشنا - کوئی ... [illegible]

साक्षात्कारलक्षणं = ... [illegible]

चित्रलक्षणं = ... [illegible]

नानाभेदसंभिन्नमपि = ... [illegible]

परैरपि = ... اور وں نے   एकमेव = ایک ہی

तत् अभ्युपगतम् = ... مانا گیا ہے ۔ (... [illegible])

यथा = جیسے

नीलादिश्चित्र = ... [illegible]   चित्रविज्ञाने = ... [illegible]

ज्ञानोपाधिरनन्यभाक् = ... [illegible]   अनन्य भाक = ... [illegible]

(... [illegible])

... [illegible]

... [illegible]

اور کو نہ دیکھ سکنے والوں ... جو نہ دیکھ سکتے ہوں

اشاکیہ درشنستں = جن دیکھنے والوں (جیوتوں) کو پورا کیا ہے

ते हि = اور وہ نیتے ہیں — पतन्त्यथ = گرتے ہیں — पुनः = اور پھر

विवेचयन् = وہ اس کو اکیلے اکیلے (جدا جدا) کر کے دیکھتا ہے — گیان والوں اور کی طرف دیکھتے ہیں لیکن وہ گیان نہیں ہیں — وہ ان کا تک دیکھتے ہیں —

وہ سب کی ذات دیکھتا ہے — لیکن گیانی سب ذات میں لوٹ کر اس دات میں دیکھتا ہے —

इति प्रमाणवार्त्तिके = یہ پرمان وارتک میں لکھا ہے

किं पुनः = کیوں پھر — स्वैरं = بے روک — पुरास्य = جو پہلے ہے

ज्ञातुः = جاننے والا — جانتا ہے اور اس کو پہچانتا ہے — चिदेकवपुषः = وہ جو شعور ہی کا روپ ہے

स्वतन्त्रस्य = خود مختار ہے — यौ = جو — इमौ = یہ دو

देशकालौ = دیش اور کال — भेदकतया = بھید کرنے والے ہیں (Parting / shape) — भिन्नतया = بھید سے

अभिमतौ = (یہ بھید کرنے والے ہیں) — ہیں

मूर्तिवैचित्र्य = روپ کا دھاری بنا ہے = یہ دیش بنا ہے (آکار)

क्रियावैचित्र्याभ्यां = اور کریا دھاری بنا — یہ کال ہے

यस्य = جس کے — समुल्लासकतया = اس کی ظاہر ہوئی ہے — پرکاش ہوتی ہے —

स्थितौ = ٹھہرے ہوئے (دیش اور کال)

*۔ اگر یہ دیش اور کال (مقام) اس سمورت سے الگ ہو جائیں (ان کا ٹکڑا ہے) اس طرح سے دونوں [illegible] کی اپنی [illegible] ہو جائے۔

कथं = کیسے (مصرعہ [illegible]) भगवतो = اس بھگوان کی

तस्यैव भगवतो = اسی بھگوان کا व्यवच्छेदको = جدا - الگ / کرنے والا [illegible]

स्यात् = ہو سکتا ہے - کیسے - ([illegible])

यदि = اگر नाम = بھلا

देशकालयो = دیش اور کال کا कदाचिद् = کسی وقت

संविदो = اس سمورت سے भेदेन = بھید سے

स्थितिर् = [illegible] प्रभविष्यत् = ہے

तदा = تب तत्कृतोऽपि = [illegible] विरुद्धधर्माध्यास

उत्पत्स्यते = ہوگا - [illegible] - [illegible]

इति तत्र संभावना = [illegible]

सम्बन्ध तयो = ان دونوں کا यावत् न शक्ति प्रकाशेनैव

[illegible]

स्वात्मसत्ता = اپنے ہونے کی सिद्धिः

[illegible]

20/ इति स्थित इव = [illegible]

अनेक स्वभावोऽपि = [illegible]

एक एव महेश्वरः [illegible] ایک ہی مہیشور [illegible]

[illegible] चिन्मूर्तिः

भेद धर्मी = [illegible]

उ पुनः تو = विरुद्ध धर्माध्यासात् = [illegible]

ईश्वरः = [illegible] اور [illegible] एव — ([illegible])

[illegible] ہے

پرشن یہ پیدا ہوتا ہے - کہ اگر یہی سوت جو ایک ہے - پرماتا بن گئی اور قسم قسم شریر اور تانا بانا رکھو والا پرتھوی - تو جب
چونکہ یہ شریر - بھون آدی سب وناشی ہیں - پیدا ہونے والے ہیں - تو کیا یہ سوت بھی وناشی ہے اور پیدا ہوتی ہے ؟

اوتر / اُتّر

नन = نہیں ہے   एक एव = ایک ہی   सा वितस तावत: = سوت تو

(جب اُس سوت نے پرماتا بن کر)   प्रमाता = پرماتا (جاننے والا)   अभ्युपगत: = تانا بانا - آگے یہ بات مان لی - یہی سوت بدلتی ہے - آگئی اور بن گیا

(دوسری بات اُلٹی گئی) وہی پرماتا ہے - بھون   ⇒   तनु = شریر (اپنے شریروں سے) (۱۴ قسم کے جیوں) - یہی تن بنا ہے - करण = ادرپہ

भुवनता = بھون (جو قسم قسم کے بھون)   قسم قسم

یہی سوت جب اُن میں - چلی | समापन्ना: = بنی ہوا - بنا   सन् = ہوتا ہوا

स एव = وہی   3. अनेकता = ایک قسم قسم   यात: = گیا ہوا ہے - ۸ ردیوں سے

[ایسی ایک ناکو جب بنا کبھی] - ایک بھاؤ کو بنا ہے -

پرشن ہے }   इति चेत् (चित्) = اگر ایسی بات ہے

तर्हि = تب   तनु = شریر   आदि = آدی

جو ناشی ہوتا ہے | विनाशि = نشٹ والا ہے { اب } स एव = وہ سوت بھی

یہ وہ (سوت) بھی نشٹ ہوتی ہے - | विनष्ट: = نشٹ ہوئی - اگر ایسی بات - ناش کو ہو - بدو - ناش ہوتے ہی تو وہی ناش ہوگا - ایسا نہیں

तत् = وہی   उतपन्नौ = اپنے ہو - جب وہ پیدا ہوئی   वा = یا

یہ بات ہے   एष एव = یہی   तदा उत्पद्येत = پیدا ہوتی ہے

یہ بھی جیتا ہے اور جنم لیتا ہے - یو کیا یہی سوت بھی پیدا بھی ہوتا ہے اور ناش کو ہوتا ہے

20/

एवं = اس طرح प्रतिक्षमात् = ہر ایک لمحہ स एव जायते =
لہٰذا وہی پیدا ہوتا ہے - بدلتا رہتا ہے

شش بھاؤ ← परिस्थिते = ہے इत्यादि = یہ آدی کو

षड्भावविकारतया = چھ شش بھاؤ

وہ دل کا ہوتے ہیں - اس طرح ہر ایک لمحہ کی تبدیلی
شش بھاؤ کو کہا جاتا ہے

جو کہا جاتا ہے وہی ... کہا جاتا ہے - व्यवह्रियते = کہا جاتا ہے

पुण्यपापस्वभाव = نیکی بدی کا سبھاؤ कर्मवासनया
نیکی بدی
کرم واسنا سے

एतस्यैव = اسی بھگوان کو
भगवतः

स्वर्गनरकादिभोगः = سرگ نرک کا بھوگ प्राप्तः = پراپت ہوتا ہے

لہٰذا اسی بھگوان ہی کو سرگ نرک بھوگنا ہے

इति = یعنی कथम् = کیونکر उच्यते = کہتے

स्वस्वरूप एव स्थित = سروپ میں ہی تو ہے
اپنے سروپ میں ہی تو ہے - ان بھاؤ کو دیکھو کیا آتی ہے -
جاننے والا - ہی تو ہے - کہ آتما ہی تو ہی -

Introduction کو دیکھو
note ہے

21

(7) दृष्टान्तद्वारा = دریشٹانت ذریعے   यतदपि = یہ بات بھی (یہ شنکا بھی)

समर्थयेत = ثابت کرتا ہے - سمرتھن کرتا ہے

(7) गच्छति = چلتا ہوا - जल = جل   چلتے ہوئے جل میں   इव = جیسے

हिमकर = چندرما   बिम्ब = عکس   स्थिते = ٹھہرے ہوئے کو

स्थिति = ٹھہرنے کو   याति = جاتا ہے

(جیسا جہاں پر جل ٹھہرا ہے - چندرما کا عکس لگتا ہے)

اسی طرح → तनु-करस्य - भवन = شریر - کرن - بھون

نفس جسم قسم ظاہری
سدھی - بھون
میں آتما کو

तथा = ویسے ہی   प्रथम = یہ   اپنے کلاؤں کو   वर्ग को

प्रात्मा = آتما   کو پاتا   3. मेह प्राण = شریر - دوشی

اسی طرح یہ بھون شریر - سدھی درگ چلتا رہتا ہے - جہاں جہاں یہ ٹھہرا ہے - وہیں وہیں اس میں اس شریر کا آتما روپ میں عکس لگتا رہتا ہے -

جل میں جیسے جیسے ہر حرکت ہو - پانی حرکت ہو - ویسے ہی چندرما کا عکس لگتا جاتا ہے - اسی طرح شریر - سدھی - بھون درگ میں جو آتما کا ظاہری قسم قسم عکس یہ سب آتما روپ میں آتا ہے -

21 यथा जल प्रवाहे याति सति — جس طرح جل پرواہ چلتا ہوا ہو

हिमकरबिम्बे = چندرما کا بمب ہے → चन्द्रवपु = چندرما کا شریر

جو وستو کے ... Researcher

वस्तुवृत्तेन = وستوؤں کی ... یعنی کوئی ... (صفت)

पाशप्रस्थ = ...

स्वयम् = آپ (چندرما)

चलत्ता... = ... (آکاش میں ... ابھی ہے ... چندرما دکھ)

जलप्रवाहान्तः = جل پرواہ میں بھی

पतितमपि = پڑا ہوا بھی

तत = وہ (چندرما وکھ) جو جل پرواہ میں پڑا

गच्छति → جاتا

प्रयाति = جاتا ہے — جاتا ہوا جب

इव = جیسے (جاتا ہے)

तथा = اسی طرح

तस्मिन्नेव = اسی وقت میں

क्षणे = اس کشن میں

पयत्र = دوسری جل جگہ میں

जलाशये = جل میں

निःस्तिमित = بند پانی ہو جس میں حرکت نہ ہو

सति = ہو

तत्रैव = وہیں (ناک ... سر) (وہ جگہ ... میں)

हिमकर बिम्बो = چندرما کا بمب

स्थित = ٹھہرا

गच्छति = جاتا ہے

इव = ہو

اسی طرح میں یہ چندرما ایک جگہ ٹھہرا ہوا ہے۔ چندرما کا عکس جل میں دکھتا ہے۔ یعنی جہاں جل ٹھہرا نہیں ہے۔ وہاں چندرما کا عکس بالکل صاف نہیں دکھتا تو اچھوم ہوتا ہے۔

इति = یہ / یوں   उभयथा = دونوں طرح سے   सर्वप्रमा: = سب پرماتا لوگ
तृप्ति:

एतत् = یہ بات   संभाव्यते = مانتے ہیں / سمجھا جاتا ہے

न पुनः = نہیں پھر   परमार्थेन = سچائی سے   तत् = وہ (صدا [illegible])

तथैव स्यात् = ایسی ہی ہو – [illegible]

اصل میں تو [illegible] [illegible] ہے [illegible] [illegible]

नापि = نہ ہی   जलगतौ = جل میں [illegible]   देशकालौ = دیش کال میں

भेदकतया = بھید [illegible]   {[illegible]}

चन्द्रमसः स्वरूपं = روپ [illegible]   गगनस्थं = آکاش پر [illegible] ہے (آکاش میں)

पराकृष्टात = [illegible]

केवलं जलमेव तादृशम् = صرف جل ہی ایسا ہے –

([illegible] ہے – [illegible] ہے – [illegible] ہے –)

[illegible]

पथ च = اور ہی →

तत्प्रतिबिम्बितस्य = [illegible]

[illegible]

22/ चन्द्रबिम्बस्य = چندرما بمب

जलगत = جل میں گئے ہوئے   चलत्ता = ہلنا - ہلنی

अचलत्ता = نہ ہلنا - ٹھہرا ہوا / ٹکا ہوا   رشمی   भेदो = بھید

व्यवह्रियते = دیوہار میں کہا جاتا ہے   ~~अथ~~ =

پانی والے چندرما کی نہ ہلتا ہے نہ اٹھتا ہے - پرا رشمی بھید معلوم ہوتا
ہے - کہ یہ ہلتا ہے اور ہلتا صرف عکس ہی جل میں گیا ہے اور اسکی ہے
نہ ہستی کی - اسے دیوہار کہا جاتا ہے

इति = ایسا   एतावता = اتنے سے

गाङ्गजलगतस्य = گنگا جل میں گیا ہوا

कर्दमपतितस्य = کیچڑ میں گرا ہے   वा = یا

प्राप्नोति = حاصل ہوں   स्वस्वरूपतायां = اپنے سروپ میں

न = نہیں   काचित = کوئی   क्षति = نقصان

کسی کا عکس گنگا میں پڑے - یا کیچڑ میں - چندرما کو کیا نقصان ہوا - کوئی نہیں

तथैव = ویسے ہی ۔ प्रथम आत्मा = پرما

चैतन्यस्वभाव: = جس کا سبھاؤ چیتن ہو ۔ स्वयं = آپ ہی

निर्मिते = بنائے ہوئے ۔ तनु-करण-भुवन समूहे = شریر اندریوں بھون

समूहे = جمع - ڈھیر ۔

प्रविश्य स्थित = داخل ہو کر (اس میں ٹکے ہیں) ۔ یا ۔ समुत्पन्न = اتپن ہوا ہو (یا اتپن ہے)

वा = یا ۔ प्रविश्य: = داخل ہوں گے ۔ یا ۔ [illegible]

समुत्पन्नश्च = پیدا ہوگا ۔ इति = ایسا جو بھی [illegible]

माया व्यामोहितानां = مایا سے موہت ہوئے لوگوں کے لئے جیو ۔

व्यवहारमात्रम् = صرف ویوہار ماتر ہے ۔

एतत् = یہ ۔ जलगत चन्द्रवत = پانی میں چندر کی طرح ۔ × مثال ہے

مایا میں پھنسے ہوئے لوگوں کے ویوہار ماتر سے اتما ہی "×" کی طرح کیا ہے ۔ یہ بھی سمجھ ۔ پیدا ہوگا ہے ۔ اور یہ رہے گا ہے ۔ اور کچھ نہیں

[illegible — margin notes in Urdu beside the entries]

23

न पुन स्वत्मा जायते म्रियते वा = پھر کبھی نہ پیدا ہوتا نہ مرتا ہے

ईति = یعنی۔

गीतासु एवमेव उक्तम = گیتا میں ایسا ہی کہا گیا ہے -

नजायते = پیدا ہوتا ہے نہ ... म्रियते वा = یا نہ مرتا ہے

कदाचित = کسی وقت کو — नायं = نہ یہ آتما

भूत्वा = ہو کر - ہوکر — भविता = ہونے والا ہے - ہوگا — न = نہیں

[illegible] — भूयः = پھر — ہونے والا ہے — अजः = نہ پیدا ہونے والا — नित्यः = ہمیشہ

शाश्वता = سناتن — अयं = یہ — पुराणो = پرانا قدیم ہے

न = نہیں — हन्यते = مارا جاتا ہے

हन्यमान शरीरे = مرنے پر
اگرچہ شریر مارا جاتا ہے
(تو بھی مرتا نہیں)

یہ آتما ... [illegible] ... نہ پیدا ہوتی ہے
نہ ... [illegible] ... ہے -

23 तस्ताम् = اس سے ان کے　　प्रथमआत्मा = پرآتم

महेश्वरः = جو سنسار کے　　स्वतन्त्रः = سوتنتر ہے جو

सर्वे स्वात्म प्रत्यवमर्श स्व स्वभावः = سارے اپنے سروپ پان
ساتھ اندر سوائم سروپ میں پرامرش ہو سکتا ہو والے
کر پرامرش کرتا ہو شکتی والا ہے

स्वप्रमातृधाम = سارے پرماتا کی شکل
پرآتما سب پرماتا میں رنگ ہو رہا ہے یہ جیکتا ہے -

प्रभावितृतया = اندر ہی جو رہے　　प्रथमान = سب وہ پرماتا اور
باشندے جیکتا ہے / میں رنگ ہو رہا ہے
باش ہے جو - اسی میں ہے ہے

ततः = اس سے ان کے

تبھی اس کا ایک شکتی لدا کو سچی ایک لدا وہ کبھی ہی کسی وہ بھی ان اندر کبھی اس میں ہی
तत प्रवस्था = جو ادھر سے اسی جس　　रा विप्रलाप =
باش ہو رہے ہیں - جیسے پرچیشت اس کا اندر کی ہی اور شکل
या समुत्पत्तौ = اپنی ہی پر
یا ایک پراپت - یا اپنی پر

سروپ میں ہو پرتریا ہے - یدا کیا ہی
स्वस्वरूप इव = ۳ سروپ سے ہے
لہر کچھ لیکن

(اپنی اور یا دونوں) - (اور کسی بھی ایک پرکاش ہی ہو ان - یا اپنی ہو یا
اسی شکتی اور سنکوچ ان میں پرتو اور دیکھ کر ہے ہو رہے ہے -
یہ شکتی سروپ ہو رہا ہے

सतदेव = ہی ہے　　दुर्घटकारि = جو نہ بنے والا
وہی تھا - بیدا ابید ہونا لہر
ابید کا بید ہونا -

جو نہ ہو سکے وہی ہونا وہی ہے اس کا کام ہے سچ کی وجہ

۲۳/ ایسا मेद्रप्राणत्वे = جسم پران بھاؤ

संवित्तत्त्वस्य = سموت تتو کی
چیتن بھاؤ کی ہے

جیسے = यत् = ऽ. तथा तथा = اس اس پرکار سے
(روپ سے)

पशुप्रमातृतया = پشو پرماتا بھاو سے
(جیو بھاؤ سے)

स्वर्ग नरकादिक भोग भोक्ताऽपि = سورگ نرک آدی کرم پھلوں کے میں
انکو بھوگنے والا بنکر بھی اور بھوگ کرتا ہے

सर्वानुभवितृतया = سب اُن سب میں
انوبھو کرنے سے

- اُن سب میں انوبھو کرنے سے یہ صرف سموت ہی ہے -

संवित्स्वरूप एव = صرف یہ سموت سروپ ہی ہے

بھگوان نے ہر کا بھید کیا اور کو پراپت نہ کرایا - بھگوان یہ سب دیہ کا کام کرتے ہیں - جب آنند پرکاش انکو پرکاش کرتا ہے
سے تب ہی

23

प्रत्युत = بلکہ   पुण्य-पाप-स्वर्ग नरक-क्षुत्पिपासादि के = پن پاپ - سورگ نرک - بھوک پیاس آدی وغیرہ کو - اس استھول شریر کو ہی جو ہیں - یہی بندھن کا ہیتو ہے -

योऽयं = یہی جو   पुरुभावा = پیدائش کو

बन्धकतया = بندھن ڈالنے والا ہونے سے   नियतः = مقرر کیا گیا ہے

اسی سے (یعنی پن پاپ والا ہونے سے) ہی بندھن کا ہیتو ہے -

(استھول) یہ اس → सः = وہی   यदि = جب   भवता = آپ نے

स्वात्मप्रकाशिन = اپنے سروپ میں پرکاش کرنے

प्रकाशित = اپنا سروپ پرکاشت → परामृष्ट
کیا گیا ہے - سروپ کا پتا لگایا
= پرکاش کیا ہوا ہو

स्यात् = ہے   तदा = تو

यथा उक्तं = جیسا کہ کہا ہے   स्वात्मान = اپنی آتما کو

स्तौ = اس ادا   लभते = پاتا ہے

بہ جس سے اسکی یہ سب سستا مل گئی - کیا یہ کسی کو سنشو رسکتا ہے - البتہ نہیں ہو سکتا -

23/

अन्यथा = اگر آپ نہ ملیں گا

निस्वभाव एव भूय = کچھ یہ سب کچھ ہو سکتا ہے
भवेत = نفرت ہے - نفی ہو جس

कथं = کیسے स्वात्मन: = سو سروپ ہے

महाप्रास्य = اس کا

स्वरूपविप्लोपं उच्यते = کو اس سروپ - آپ کا جاتا ہے

کچھ کیسے کہا جائیگا - کہ یہ جس نہیں ہوں -

सर्वथा = طور طرف निर्मितमेव = بنا ہوا ہی

संक्षायं = کچھ طرف سے ہوئی - وہ بنا ہوا ہے

समुत्पाद्यं = اپجاوی - یا پیدا کی वा = یا

स्यात् = ہوگا देशादिरूप = دیش وغیرہ

اگر سوت

لہذا یہ ... - بنا ہوا ہی ہے

بنا ہے -

23 ہر طرف ہر وقت جو دشونتی ہے ۔ اُسی کو ناش ہے ۔ اُسی کو شکل دکھائی دیتا ہے
نہ کہ سوکھائی کو ۔

न पुनः = نہیں پھر   नित्यं भाति = جو نت دکھلائی

चैतन्य = شعور

समुत्पत्तिविनाशौ = اُپجنی اور وناش

कदाचित् भवेताम् = اس مخصوص مرتب کو اپجنی اور وناش اور کبھی نہیں ہے / نہیں ہے

(وناش اور اپجنی صرف دیکھاوٹ کو ہی ہے)

نہ ابھی اپجن اور وناش اور اپجنی نہیں ہے ۔ اپجنی اور وناش ہے ۔ اور ہر روپ سے دکھائی دیتا ہے

तस्मात् = اس کارن سے   एक एव = ایک ہی ہے

आत्मा = آتما   ग्राह्यग्राहकतया = جو گرہن کرنے والا ہونے سے اور گرہن ہونے والا ہونے سے

नानारूपस्वभावः = نانا روپ سبھاؤ   सन् = ہوتے ہوئے

पुनरपि = پھر بھی

सर्वानुभवितृतया = سب کو انوبھو کرنے والا ہونے سے

انوبھو کرنے والا ہونے سے ہر ایک تجربہ میں دکھائی دیتا ہے ۔

सर्वस्य = سب کی

एकतया प्रथते = ایک ہی روپ سے دکھائی دیتا ہے

२५/. इति न काचित् = اس میں اور دور کی کوئی دخل نہیں ہے

अद्वयवादस्य क्षति.

لہذا دونوں ہی یہیں ہیں ۔ یہ صرف ایک ہی ایک ہے ۔ (اس بات کے اور ثبوت کی کوئی ضرورت نہیں)

ترجمہ इत्थमपि = اس طرح بھی سर्वेषाम् = سب کچھ کا (سبوں کا) प्रथम = پہلے

प्रात्मा = آتما (یعنی سب کا آتما ہے) विश्वप्रपञ्चभाव = اس سارے پرپنچ کا (ظاہر ہونا)

स्वभाव = سوبھاؤ ہے एव = ہی संविन्मात्रपरमार्थः = سموت ماتر پرمارتھ

सर्वावभासः = سب کچھ کا پرکاش ہے — اصلی سب کچھ سموت ہی ہے

सर्वत्रसंविदनुगतम् = کیونکہ ہر ایک چیز میں بھی سموت ملا ہے — کیونکہ سب کچھ سموت ہی ہے

इति युक्त्या = اس دلیل سے / اس تحقیق سے (اور) और आगमाभ्यां = اور شاستروں سے

प्रतिपादितश्चेत = اگر سمجھایا گیا ہے — اگر ایسی دلیل سے کہ سموت سے ہی سب کچھ بنا ہے — ایسی ہی شاستروں کی تحقیق سے سمجھایا ہے

किमिति स न प्रतीयते = تو وہ کیوں نہ پایا جاتا ہے

लोष्ठादावपि = ڈھیلے آدی میں بھی, अविशेषात = فرق نہ ہونے سے

(سموت کا پرکاش مٹی پتھر آدی اور ڈھیلوں پر بھی پڑتا ہے — کہ اس میں کوئی فرق نہیں ہے)

स्वात्मतया = سوآتم سروپ سے स न प्रतीयते = کہ وہ کیوں نہیں ظاہر ہوتا — پایا جاتا ہے (جب کہ اس کا پرکاش کسی فرق کے بغیر ہر ایک چیز پر ایک جیسا ہے)

اگر ایسا ہی ہے — کہ ہر ایک چیز میں بھی سموت سروپ ہی ہے — تو مٹی اور ڈھیلے آدی جڑ پدارتھ میں بھی

سموت سے پرکاش بغیر کسی فرق کے پایا جاتا ہے — کیوں وہ سوآتم سروپ سے پایا نہیں جاتا ہے — (یعنی سموت پرکاش)

[illegible]

२५

वा प्रत्ययपगमे वा = [illegible] یا جڈاجडव्यवस्था = جڑ اور [illegible]

[illegible] (جڑ ہے)

इयं = یہ

भासमाना = [illegible]

न = نہ

[illegible]

सगच्छेत = [illegible] ۔ جب یہ [illegible]

[illegible]

ہے ۔ [illegible]

लोकव्यवहारश्च = जडाजडरूप: [illegible]

[illegible]

[illegible]

इति = اسی [illegible] कथमेतत = [illegible] स्यात् =

[illegible] ۔ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ہے ۔

इति, पाह = [illegible]

یہ ایک قسم کی ...

(8) राहु = راہو ग्रहणीयोऽपि = پکڑا ہوا यथा = جیسے

جیسے تارا منڈل سب آنکھوں سے دکھائی دیتے ہیں لیکن راہو نہ دکھنے پر بھی :-

शशि बिम्बस्थ = چندرما منڈل میں ٹھہرا   प्रकाशते = ظاہر ہو جاتا ہے

کہ جب چندرما کو گرہن لگتا ہے ۔ تو ادرشٹ ہو کر بھی دکھنے لگتا ہے ۔ یہ راہو

(جو اس کا عکس چندرما میں پڑتا ہے ۔)

तद्वत = اسی طرح   सर्वगतोऽप्य = سب میں گیا ہوا بھی / وہ یا کہ ہر جگہ ہی

प्रथम आत्मा = پرماتما

اگرچہ سب وشیوں میں آتما سب میں ہے لیکن یہ بدھی میں ہی دکھائی ہے

(دشیے یہ آتما ... ہے ×) विषय = وشیوں کو   प्राश्रयवान = آسرے والا ہے ۔ پکڑنے سے

جو وشیوں میں ٹھہرا ہے ۔   براہ راست

धीमुकर = بدھی کے آئینے میں

(جب آتما کا عکس بدھی کے آئینے میں لگتا ہے تو دکھتا ہے)

(×. جیسے کھڑکی بند ہوں ۔ کمرا ہو ۔ وہاں ہے دکھنے ۔ یہ عکس جب بدھی پر پڑتا ہے ۔ تو یہ آتما دکھتا ہے ۔ یعنی سننا ۔ دیکھنا ۔ وغیرہ یہ وشیے ہیں)

جیسے راہو آکاش میں ہو کر بھی دکھائی نہیں دیتا ۔ دکھائی تب ہی دیتا ہے جب اس کا عکس چندرما پر پڑتا ہے ۔ اسی طرح یہ آتما ہر ایک چیز میں ہو کر بھی وشیوں میں آسرے کر جب بدھی میں عکس ڈالتا ہے تو دکھتا ہے ۔ آئینہ میں آتا ہے ۔

(صرف اعلا بدھی والوں پر عکس پڑتا ہے)

आकाशे = آکاش میں   राहु: → راہو →

सर्वत्र परिभ्रमत्रापि = ہر جگہ ہوتے ہوئے بھی   न उपलभ्यते = پایا نہیں جاتا ہے

(جیسے لوگ نہیں دیکھتے)

جس وقت آتما وشیوں کی طرف جاتا ہے ۔ اس وقت بدھی والوں ... "प्रात्मा धीमुकुरे प्रकाशते" میں ہی دکھتا ہے

25/

स एव = وہی ہے पुन = پھر ग्रहोपरागकाले = گرہن کال میں

चन्द्रमूर्तिस्थः = چندرماں کی مورتی میں ٹھہرا ہوا

प्रथमानः = پھیلتا ہے अपि राहुः = راہو بھی [illegible] کھاتا ہے

یعنی گرہن لگتا ہے

इति परीक्ष्यते = اسطرح پرکھا جاتا ہے

अन्यथा = اگر یہ نہ مانیں स्थितोऽपि = ٹھہرا بھی اگر ہے

भवचक्रे = سنسار منڈل میں अस्थित इव = نہ ٹھہرا سا ہوا ہے

(دکھائی دیتا ہے)

~~اگر اسکا نہ مانیں تو بھی~~

ہے اگر یہ نشٹ ہوتا ہے (رانچو) دکھائی دیتا ہے - لیکن وہ بھی یہ سنسار منڈل میں اصلی ٹھہرا ہوا ہے

तथैव = اسی طرح (اسی طرح) इहापि = یہاں بھی

(دنیا میں - دنیاوی کرن میں بھی)

सर्वान्तरतमत्वेन = سب کے اندر ہونے سے

स्थितोऽपि = ٹھہرا ہوا بھی اگر ہے प्रथमप्रात्मनो - پہلے

स्वानुभवे = اپنے انوبھو میں एकस्वरूपतया = ایک سروپ سے

اتنے ہی سروپ سے یہ ہوتا ہے

ایک ہی سروپ ہوتا ہے

प्रत्यक्ष परिदृश्यमानः = ہر حقیقت سے نظروں آنے والا सर्वस्य = سب کی کو

तथा = اسی طرح न उपलक्ष्यते = ظاہر نہیں کیا جا سکتا ہر کسی نہیں ہوتا

اسی طرح یہ آتما بھی ہر ایک صورت میں ہوتے بھی (یہ آتما) اپنے آپ کو سرور سے
جو ہر حقیقت نظروں میں آنے والا بھی ہے - لیکن ہر ایک سے بھی الگ ہے اسے ظاہر نہیں
کیا جا سکتا - یعنی ہر ایک اسکو اسطرح نہیں دیکھ سکتا -

यदा = جب पुनः = پھر पुर्यष्टक = آٹھ (پوری) [illegible]

प्रमातृणां = جاننے والوں बुद्धिदर्पण = بدھی آئینہ →

प्रतिभामुकरे = [illegible] ग्राह्य = [illegible]

व्यवस्था ~~काले~~ = [illegible] आलोक (प्रकाले) = [illegible]

ग्राह्य व्यवस्था आलोक = سب [illegible] کی [illegible]

प्रविद = [illegible]

विषया = [illegible] स्वीकारणा = [illegible]

[illegible] "भ्रमणामि" [illegible] — [illegible]

اسطرح [illegible] ہے -

یہ اہم وشئے اندر سے پرکٹ ہوتا ہے -

25/ इत्येवम् = اس طرح ; पदे = میں ; प्रतीतिविषयो भवति (یعنی ظاہر ہوتا ہے)

اس وقت یہ اہم پرتیتی وشئے بنتا ہے - یعنی اس وقت یہ جانتا ہے - کہ میں کرتا ہوں -
میں سنتا ہوں - میں دیکھتا ہوں - ایسے ایسے اہم سے سب کچھ پرتیت ہوتا ہے -

(پرتیتی تو پہلے بھی موجود ہے - لیکن ایسے موقعے وشئیوں سے الگ ہو کر یہ پرکٹ صاف ہوتا ہے)

तदा = تبھی ; ग्राहकस्वभावतया = گراہک یعنی لینے والے کی طرح
(جو یہ انو بھو کرتا ہے)

[illegible] लोष्टादावपि = یہ سب پتھر وغیرہ ڈھیلا وغیرہ میں بھی [illegible]
جو سب لوشٹ کی طرح ہے

स्थित ज्ञान = ٹھہرا ہوا گیان ; स्फुटरूपः = پرکٹ روپ سے

[illegible] तत्रैव = وہیں پر (یہ بھی گویا ہیں) ; स्वात्मा = وہ اپنی آتما [illegible]

प्रकाशते " - پرکٹ ہوتا ہے ; सर्वैःसह = سب

[illegible] स्वानुभवैकरूपः = [illegible] ; प्रतीयते = جانا جاتا ہے
یعنی جانا جاتا ہے - کہ یہ آتما تو کچھ [illegible] ہے - یہ [illegible] ہے -

लोष्टादौ = پتھر وغیرہ میں ; अत्यन्त = بہت
तमोव्याप्त = [illegible] ; स्थितापि = [illegible]

अवस्थित कल्पो = [illegible]   प्रसौ = [illegible]

[illegible]

प्रथते = ظاہر ہوتا ہے [illegible] → राहुर् प्रकाशो यथा =

جیسے آکاش میں راہو (پرچھائیں) آکاش ہی میں [illegible] — لیکن [illegible]

[illegible]

एवम् प्रिय भगवान् = اسی طرح [illegible]   मायाशक्त्या = [illegible]

स्वात्मकल्पेऽपि = آپ ہی کے اپنی کلپت [illegible] بنا ہے   भावबर्गे = [illegible] → [illegible]

कांक्षित = [illegible]   पर्याप्त स्वरूपान् = [illegible]

वेद्य स्वरा ज्ञानेऽपि = [illegible]

रूपहन्ता = [illegible]   अवस्था = [illegible]

रस प्राभाषित्वात् = [illegible]

वेदकीकरोति = ویدک بناتا ہے

[illegible] → [illegible]

26. काङ्क्षित = چاہا ہوا کی   वेद्यीकरोति = جاننے یوگیہ بنا رکھا

(یعنی اس عبادت منڈل میں ایک حصہ کو جاننے والا بنایا یعنی
(حصہ کرنے والا بنایا اور ایک حصہ کو جو کہ یعنی جاننے کی چیز بنائی)

यत = جو کہ   प्रपेक्ष्यता = دیکھتے (دیکھنا یعنی دیکھنے کی - وہ اور وہی -)

पृथं = یہ   जडाजडव्यवस्था स्वरूपो = جڑ اور اجڑ دو قسمیں (کا سروپ) سروپ

भेदव्यवहारा = یہ بھید دو طرح (ان اور اناد)

सुस्थित = ٹھیک ٹھہرا ہوا । एव = ہی   उपपद्यते = سدھ ہوتا ہے
- ایسے بنا ہوا ہے - یہ سدھ ہوتا ہے۔

तेन = اسے / اسی نے   लोष्टादि: = لوشٹادک جڑ پدارتھ } یہ

वेद्यत्वात = ویدی ہے   जड: = جڑ ہیں
جو پدارتھ ہیں
- ویدی ہی جڑ ہے

اور वेदकत्वात = جاننے والے ہونے سے / ہونے سے ویدک پدارتھ   पृथक्प्रमापि = سچ

اور प्रजाड: = گیان اجڑ ہیں / اجڑ ہیں   न पुनः = نہیں پھر

परमार्थेन = حقیقت میں   परमेश्वरापेक्षया = پرمیشور کا تعلق سے (دیکھیں تو یہ بات ہے) - پرمیشور کے اعتبار کی اپیکشا سے

ज्ञाज्ञव्यवहारा: = گیانی اگیانی ویوہار نہیں ہے -

یعنی جب پرمیشور کی اپیکشا پر نگاہ کی جاتی تو گیانی اگیانی ویوہار نہیں ہیں +

(9)

اوشنکا :— ननु = پرشن ہے   सर्वप्रमातृणां = سب پرماتاؤں کی   बुद्धौ = بدھی میں

चेत् = اگر   स्वात्मनोऽपि = اپنے آتما سروپ کا (سوروپ)   प्रविभागेण = بنا فرق کے / کوئی بھی فرق نہیں ہے

प्रस्फुरणं = جو سفورنا ہے - اپنے سوروپ کا سفورن ہے

پرشن ہے کہ جب سب پرماتاؤں کی بدھی میں بغیر کسی فرق کے آتما کا سفورن ہے - (جب آتما سب میں ایک جیسا ہے)

तर्हि = تب   ते सर्वे = وہ سارے پرماتا   किमिति = کیوں نہیں

स्वात्मविदः = سوآتم کو جاننے والے (سوروپ کو جاننے والے)   न स्युः = کیوں نہیں ہے

(کیوں وہ سب پرماتا اپنے سوآتم کو کیوں نہیں جانتے - یعنی ایک جیسا کیوں)

اگر ایسی بات ہے تو سارے پرماتا اپنے آتما کو کیوں نہیں جانتے - (یا تو سارے ہوں)

یا तत् ज्ञानवन्ता = اس برہم گیانی ہوتے   मा वा भूवन् = مت بن جائیں

(یا ایسے نہ ہونے چاہئیں)   یعنی یا دوسری بات یہ ہے کہ کوئی برہم گیانی نہیں ہونا چاہئے

جب آتما سب میں ایک جیسا ہی ہے تو یا تو سارے برہم گیانی ہوں - یا

کوئی بھی نہ ہو - (ایسا کیوں نہیں)

26/

جب سب آتما میں کوئی فرق نہیں ہے } विशेषाभावात् = کوئی وشیش (فرق) نہ ہونے کی وجہ سے } یعنی جب فرق ہی کوئی نہیں۔

کچھ ایک جو سنسار اوستھا میں بھی سواتم گیان سے جیون مکت ہوتے ہیں۔

यत् = جو परन्तु: = لیکن संसारावस्थायामपि = سنسار اوستھا میں بھی

केचन = کچھ ایک स्वात्मज्ञानात् = سواتم گیان کے ذریعے

जीवन्मुक्ता = جیون مکت ہیں (کیونکہ ان کو سواتم گیان ہو گیا ہے۔)

सर्वज्ञत्व-सर्वकर्तृत्वशालिनः = سروگیتا اور سرو کرتا کی شکتی والے ہو جاتے ہیں

केचन = کچھ ایک اور स्वात्मज्ञानयोग्या = سواتم گیان کے یوگیہ

اور بعض کوئی دوسرے [illegible] والے ہیں۔ प्रारब्धवन्ध = پراربدھ کرم والے — سواتم گیان کے یوگیہ [illegible]

इह पर्यन्त = یہاں تک [illegible] ہیں۔

अपरे = دوسرے اور स्वात्मज्ञानरहिताः = سواتم گیان سے رہت

सन्ता = [illegible] آسرے ہوئے — ہیں

اسی لیے کہا ہے → धर्माधर्मनिमित्त = دھرم اور ادھرم — [illegible] اس نمت سے

शुभाशुभकर्म = شبھ اور اشبھ کرم (نیکی بدی)

بھی निगडपुनर्बन्धनद्वारा = کرمی بندھن - پھر نئے پیدا ہونے والے
کرمی بندھنوں سے بندھے ہوئے رہتے ہیں - (اسی بندھن میں بندھ جاتے ہیں)

بھی संसारिणः एव = بھی سنساری ہی (آواگمن میں لگے ہوئے جیو)

कथम = کیسے   एतत = یہ بات

संगच्छते = جوڑ کھاتی ہے →

جب یہ بات ہوتی ہے کہ دنیا پر [illegible] ہے - ہر ایک میں ہے - تو یہ بات کیسے ہے - (کیسے جوڑ کھاتی ہے)
ایک برہم گیانی ہے - ایک جیون مکت ہے - ایک بندھا ہے اور سنسار آواگمن میں (پھنسا ہے) →

اس طرح کہہ کر
इत्थम = اسطرح   पृष्टः = اس نے پوچھی (اسے پوچھنے پر)   सर्व = سب کچھ
कृत्वा = کرکے - کر کے   स = یہ سن کر بات [illegible] جواب دیتا ہے -

पारमेश्वरः = پرمیشور نے   शुभकपातो = [illegible] (یہ سچی بات)

विशृङ्खलः = لگام سے آزاد - روک ٹوک سے آزاد

इति = اس طرح سے کہا ہے

(یہی ایک بھگوت [illegible] ہے جو لگام سے آزاد ہے - [illegible])

27

(1) आदर्शे = آئینے   मलरहिते = میل سے بغیر پر

यत्वद् = جیسے   वदने = منہ   विभाति = بھاس پڑتا ہے

صاف شیشے میں صاف منہ دکھتا ہے -

तत्वत् = اسی طرح   प्रियम् = پیارا

प्राव प्रणिपात = اُس سے ہو گیا ہو شوقی ٹھکانا اور گڑ ہے   (اسی طرح)   विमले = نرمل بن گیا ہو

س → धीतत्त्वे = بدھی تو   भाति भास्वरूपः = پرکاش روپ جھلکتا ہے

(پرکاش نما سا ہے - اِس بدھی میں (نظر) آتما پیارا روپ کے

جس طرح نرمل آئینہ میں منہ صاف دکھائی دیتا ہے - جو کوئی بھی اُس آئینہ میں ہو

دیسا دکھتا ہے - اسی طرح جب پریم پریم کا شکتی پات سے

بدھی ویسے نرمل بن گیا ہو - تو پیارا آتما صاف پرکٹ ہوتا ہے -

مل ہوتے ویسی عکس صاف نہیں آتے - اِس لئے صاف قسم و فرق منہ میں معلوم پڑتے ہوتے

← اپنا منہ کچھ الٹا ملٹا ہی دکھتا ہے -

27

दर्पणे = آئینہ میں मालिन्यरहिते = میل کے بغیر यथा = جیسے

آئینہ میں جیسے کہ بھی ... کسی فرق کے بغیر

निर्विशेषरूपादि = کسی فرق کے بغیر गुणागणयुक्तं = گنوں کے سموہ سمیت

मुखं = مکھ चकास्ति = چمکتا ہے۔ یعنی جیسا مکھ ہو۔ ویسا ہی

کسی فرق کے بغیر یعنی ہو بہو مکھ دکھتا ہے۔

آئینہ میں دکھتا ہے۔ ویسا ہی

न = نہیں स = وہ दृश्या = دکھ

کوئی فرق نہیں ہے۔ उपस्थित = ہے

यं = جس طرح विनिवृत्तमल = دور گئے ہوئے میل سمیت

جس میں میل دھند لگی ہوئی

दर्पणे = آئینہ (یعنی صاف آئینہ)

न स्वीकरोते = انگی نہ کرے

(یعنی وہ کوئی سی چیز ہے جو آئینہ اپنی اندر جب وہ میل رہتا ہو۔ نہیں کرتا ہے۔ یعنی ہر کوئی عکس دکھلا آتا ہے۔ (صاف آئینہ پر ایک چہرہ کا پورا عکس اپنی شکار کرتا ہے)

اسی طرح समल = میل سمیت दर्पण = آئینہ کو तु = لیکن

मुखम = مکھ प्रत्याति प्रायमपि = کسی قدر سمیت اور بھی

آئینہ صاف نہ ہو تو مکھ ... صاف ظاہر نہیں ہوتا

ایسے دو مکھ کا اپنی شے سمیت - اپنے مکھ کے عکس میں فرق دکھتا ہے۔

श्यामलत्वात् = نہ صاف ہونے سے

لہذا یہ الٹا ہی کچھ دکھتا ہے۔

वैपरीत्येन = الٹا प्रकाशते = چمکتا ہے۔ دکھتا ہے

اُن بیوں کو پیاری ہوئی

27] नापि मलिनः = نہیں تو میلا (میلا آئینہ)　　तदीयान् = اُس کے گُن

स्वीकर्तुम् = سوئیکار کرنے کو　　फलम् = نتیجہ — گُنوں کو سوئیکار کرنے کا نتیجہ

یہ دل سوست آئینہ اُسکے منہ کا سایہ گُن سوئیکار کرنے کا مسمر نتیجہ نہیں ہے —

یعنی اُس میں اُسکے منہ کا ہوبہو عکس نہیں آسکتا ہے — کیونکہ یہ آئینہ صاف نہیں ہے

प्रयुत = (ادھوری) بلکہ - زیادہ　　ततः = اُس آئینہ میں　　न्यस्त = رکھا ہوا

मुख = منہ درست　　पुमान् = پرش　　मुखम् = مکھ

अन्यथैव = ادھوری ہی بدلا　　श्यामलत्वात् = نہ صاف ہونے سے

उपेतम् = اُس کو پیٹ　　अवलोक्य = دیکھکر

स्वात्मना = اپنے آپ کی　　लज्जाम् = شرم

आवहति = دھارن کرتا ہے - محسوس کرتا ہے - اُٹھانا

اسے آئینہ میں پرش اپنا مکھ ادھوری بدلا ہوا دیکھکر شرم محسوس کرتا ہے -

विकृत = بگڑا ہوا / دیکھا درست ہے　　मम वदनम् = "میرا مکھ"

इति = اسطرح ہوتا ہے

(محسوس کرتا ہے کہ میرا مکھ ادھوری ہوتا ہے)

ایسا دل صاف نہیں ہے

لیکن اس میں شیشہ نہیں پرش اپنے مکھ کو ادھوری بدلا ہوا دیکھکر شرمندہ ہوتا ہے -

اُس کا اشارہ

27 तथैव = ویسے ہی "प्रावस्य" → स्वात्मना = اپنا روپ

या प्रसरो = جو پھیلی अनुग्राह्यस्या = جو سروپ کی
انوگرہ کا روپ

"प्राप्ति" حقیقت

तस्या = اُس کی جب पातः = پات پڑے →

اُس انوگرہ سروپ کا —

→ جو پار ہوتا ہے स्वकिरणाविस्फारः = اپنی کرنوں کا روشن ہونا ہے — اپنا سروپ چمکتا ہے

तेन = اُس سے समार्जिते = مانجھا ہوا — صاف کیا ہوا

ہوا प्रतिभामुकुरे = بدھی کا آئینہ — جب وہ صاف ہوا ہو

تو ان کا بدھی درپن صاف ہوا ہو جاتا ہے { पाशव-मायीय-कार्ममल = اِن تینوں واسناؤں کا ناش ہونے سے
वासना प्रक्षयात्
کاریہ — آنو ماں مل
بنا विपादीकृते = صاف ہوا ہو — نرمل بنا ہو

کچھ بنا ہو किञ्चिच्चित = کچھ پرکاش کی प्रपश्चिमजन्मनां = جنم کے
اب جن کو یہ جنم آخری ہے —

ایسے پرماتاؤں کو प्रमातॄणां = اُن پرماتاؤں کی (یعنی پرماتا ایسے ہیں) →

جو اُن کو "भाः" پرکاش → प्रकाशा "रूपं"

यस्य = جس کی ... وہ پرم شیو پرکاش روپ ہے

28/ इति = پرادھکچھ ہے   स = وہی → پرماتما

भास्वरूप: → وہی پرکاش ہے - پرکاش سروپ ہے

स्वात्मा = اپنا سروپ   यावत् = جتنا

सर्वज्ञत्वादि गुणगणायुक्तः = ان گنوں سے جتنا یوکت ہوتا جاتا ہے

तावान् = (اتنے گنوں سے)   एवभासते = بھاستا ہے - اپنے کچھ پرشوں کو -

اتنا ہی وہ بھاستا ہے

(پرماتما وہ جتنے گنوں - اتنے گنوں سے یوکت اپنے پرشوں کو بھاستا ہوتا ہے)

येन = جس سے   केचनैव = کچھ ہی پرش

ते = وہ   स्वात्मस्वरूप प्रथनात = سواتم سروپ کی پرتھا سے

संसार मध्य पतिता अपि = سنسار میں پڑے ہوئے بھی

اگر دنیاداری میں ہوں

مگر وہ मुक्तकल्पाः = مکت ہیں - {اپنی مکت کی جیسی کی جاتی ہے}

وہ آپ ہی   सातिशयाश्च = اتی شے یوکت

(کیونکہ آپ وہ لوگوں کے مقابلے میں اتی شے (بڑھ کر) یوکت ہوتے ہیں -)

ان میں سب سے اتی شے ہوتا ہے -

२४ केषांचिदेव = کچھ کو परमेश्वरतिरोधान = پرمیشور کی طرف سے چھپاؤ (ان کا)
प्राप्तया سمجھی - حاصل شدگی

आणव - मायीय - कार्ममल [illegible] - آنول
समाहृक्षादिते
کو → बुद्धितत्त्वे = [illegible]

[illegible] भारूपोऽपि = [illegible] مالिन्यात = [illegible]
आत्मा [illegible]

[illegible] भातोऽपि = [illegible] अप्रभातकल्पः = [illegible]
(ستے میں) برابر - سمان [illegible]

येन = [illegible] ते [illegible] संसारकः = سنساری

[illegible] → पशवः : . پشو इति → [illegible]

अभिधीयन्ते = [illegible]

अन्येऽपि = [illegible] اور [illegible] उभय = دونوں

[illegible] प्राप्ति = [illegible] योगात् = جوڑ سے
([illegible])

प्रमातारः = [illegible] आरारूक्षवः: [illegible]

+ [illegible]

28/29 इत्थं = اس طرح तीव्र = سب سے تیز मन्द = سست

मन्दतर = سب سے کم क्षिप्रादि = جلدی भेदेन = اس بھید سے

शक्तिपात वैचित्र्ये = شکتی پات کی وجہ سے

کرنے والی بات کسی میں کم - کسی میں زیادہ - اور کسی میں کچھ نہیں

اسی شکتی پات کی وجہ سے ہے -

सर्वत्रापि = ہر جگہ - ہر ایک میں उद्योगे = دھارن کرنا چاہئے -

(اسے دھارن کرنا چاہئے - کہ کسی میں زیادہ ہے - کسی میں کم اور کسی میں کچھ نہیں)

उपेत्य = اتر کر (شکتی پات سے بدھ) न = نہیں

मायान्तः = مایا تک میں पाति = بچاتا ہے

नियति शक्ति = پابندی کی شکتی — اسی سے

समुत्थापने = اٹھانے کے لیے → अश्वमेधादिकं = اشومیدھ وغیرہ

(جیسے کہ اس سے سب سے شکتی پات)

اور یہ بابا میں بڑے بھی نہیں سنتے اور سمجھ گئے۔ جب دھیان آدی کرکے آتما کو چھٹکارا کرنے کا یتن ہے
دوسر نہیں اٹھا سکتے۔

29 वा = या जप ध्यानादि = جب دھیان وغیرہ (آدی)

प्रयत = اور کچھ यात्किंचित = کچھ कर्म = کرم

मोचन हेतु = چھٹکارا کرنے (کیلئے) प्रात्मनः = اپنے آتما کو

(یہ اپنے آتما کو چھٹکارا نہیں کرتے ہیں)

تجربہ तस्य = (یہ بابا اوتار) اس کا हि = بھی سے मायात: = مایا سے

समुत्तीर्णत्वात = پار کرنے سے - اتر جانے سے

جب دھیان کو بید بھاؤ میں { भेद प्रधाने = بید بھاؤ वस्तु = چیز

तत्साधनाय = اس کے (مکتی) سادھن न प्रकल्पते = سمرتھ نہیں ہے - کام نہیں آتا ہے -

(بابا سادھن استعمال نہیں کرتے)

جب ... سب بید بھاؤ میں - یہ کیسے مکتی کا سادھن ہو سکتا ہے -

यत भी तस्य = یہ کیا ...

२९/ न = نہیں प्रज्ञे = میں [illegible] वेदै = ویدوں سے

न = نہیں तपसा = تپ سے न = نہ दानेन = دان کرنے سے

न च = نہ ہی यज्ञया = یگیہ کرنے سے

ان سب میں ہدایت نہیں ہوتی ہوں - بھگوت

इति = ایسی तस्मात = اس کا باعث ہے एकमेव = ایک ہی

अत्र = اس بات پر परमेश्वरानुग्रहः = پرمیشر کا انوگرہ ہی

कारणम् = کارن ہے

अकृत्रिमम् = نہ گھڑا ہوا मन्दबुद्धीनाम् = کم عقل لوگوں کو

وہ انوگرہ کیسا ہے "نہ گھڑا ہوا" - کس کے واسطے (؟)

اس کا [illegible] - اسکا کارن [illegible] کن کو [illegible] [illegible]

यदुक्तम् = جو کہا ہے - دوسرا پران

इच्छातु = ارادہ کیا प्राक्रियापातापो = [illegible] جب [illegible]

स्वापयित्री = سونے والی स्वतन्त्रताम् = سوتنترتا کو

धी = بدھی کو कारणकलाधाता = کارن کی

धाता = [illegible] [illegible]

چاہیئے نہیں ہے

وجہ

नैव = نہیں   किंचिद् = کسی چیز کی   अपेक्षते =
نہیں رکھوان کارن کلا کی کوئی ضرورت نہیں رہتی ہے ـ

ایشور شکتی پا سکا اور اس کی ہمیں ضرورت نہ پڑتی ہوتی ہے ـ یعنی شکتی حاصل ہو سکتی ہے ـ بڑھنے دار کارن کلا کو درکنار کسی چیز کی اپیکشا نہیں رہتی ہے ـ

पशुपक्ष्यादयः = پشو پرندے - جیو ہیں   तु = تو سے

परमेश्वरतिरोधान शक्ति = پرمیشور کی جو چھپانے والی شکتی ہے

संसरणहेतुरेव = وہ ان کو سنسار میں آنے جانے کا کارن بن جاتی ہے

यत्र = جہاں   एव = یہ ہی

स्वस्वरूप अप्रथनात् = اپنے سروپ کا نہ جاننے سے

शुभाशुभकर्मनिरता = اچھے برے کرموں میں لگے رہتے ہیں
اچھے برے کرموں میں لگے ہیں

सुख दुःखादि भोग भाजः = سکھ - دکھ آدی بھوگوں کو بھوگنے والے بن کر

पुनः पुनः = بار بار

अस्मिन = اس سنسار میں   संसरन्ति = آتے جاتے رہتے ہیں
بار بار اسی سنسار میں آتے جاتے ہیں ـ

30/

तस्मात् = اس لئے प्रमातृता = پرماتا کی حیثیت

स साधारणोऽपि स्वात्मनि = اپنا سروپ اگر ایک ہی جیسا ہے - اگر اوروں میں بھی ہے یہ سب کا ایک جیسا ہی ہے۔

प्रकाश्य प्रकाशक रूपे = پرکاش اور اپرکاش روپ میں

प्रनुग्राहक = اس کی انوگرہ شکتی (پرکاش) तिरोधान शक्ति = کا تروھان شکتی (اپرکاش روپ)

انوگرہ شکتی پرکاش روپ ہے - تروھان شکتی اپرکاش

द्वे एव = یہ دونوں شکتیاں ते = وہی دونوں

मोक्ष बन्ध प्रविभाग हेतुः = موکش - بندھ - بھاگ بند کرنے کا ہیتو = ٹو ٹکڑے اور تقسیم

جو مکش اور بندن کا وبھاگ کرنے کا ہیتو ہے

یعنی تروھان شکتی والے اگیانی (بندن) میں آگئے اور

انوگرہ شکتی والے جیون مکت ہو گئے - ایسے وبھاگ میں + مقرر ہے -

(یہ بھی شکتی کا دوار ہے)

پرماتما کی میں سادھارن روپ دونوں شکتیاں
انوگرہ اور تروھان پرکاش اور اپرکاش
موجود ہیں جو جو دونوں - یہ دونوں اسکو دکھتی
والے دکھائی دیتی ہیں اور بندھن میں
ڈالنے میں مشغول

30/ यत्नुक्रमे = اپنا پن ہے - (

बध्नाति = باندھتی ہے / باندھتی ہے — कांचिदपि = کوئی بھی شکتی - اندرونی (تیرودھان شکتی)

प्राकार प्रबन्ध प्रशक्ति = جو شکتی جو بے حد شکتی والے — وہ کی شکتی ہے

سب سے بڑھ کر [illegible] ہے -

(تیرودھان شکتی)

अत्रस्थम् = اس جیو کو — (جو شریر کو جانے) — باندھتی ہے

प्रापिहेता = [illegible]

جس کے نہ آنے والی (ہے مایا شکتی) - [illegible]

یہی تیرودھان شکتی

کیسے باندھتی ہے — भवपाशजाले = سنسار کی (واسنا) روپی

جال سے - رسی سے (یہ اس جیو کو باندھتی ہے)

ज्ञानासिना = گیان روپی تلوار سے — च = بھی — विविच्छ्य = کاٹ کر

(جو دو دیوار [illegible])

गुणान् प्रपाकान् = ان سب گنوں کو

(بندھن روپی گنوں کو)

द्रव्यो = دوسری (اندرونی شکتی) — करोति = کرتی ہے

प्रामुख्ये = سمجھ — पुरुषं = پُرش کو

विमुक्ता = [illegible] -

ٹوٹی اور کٹک شکتی - کون سی شکتی جو اننت مرہم مرہم سے لگی ہے ~~اس مریض~~ کو جو کسی سے نہ دینے
والی ہے - اس مریض کو سنسار کی پاش جال رسیوں سے باندھ دیتی ہے -
دوسری شکتی یعنی انوگرہ شکتی اسی مریض کو جب اس نے گیان کی تلوار سے بندھن کی گنڈوں
کو تلوار سے کاٹ دیا - تو مکتی کا سنکلپ کر دیتی ہے -

شاستروں کی پرمانوں سے

۳۰ (10)

एवम = اس طرح   इदं सर्वं = یہ سب کچھ   प्रागम = شاستر   स्वानुभवन् = انوبھو

آدرشا

युक्ति = اور یکتیوں دلیلوں سے   प्रतिपाद्य = سدھ کرکے

جو شاستروں اور یکتیوں سے ہم نے سدھ کیا

پہلے شبد پایا

यत् = जो.   प्राक = پہلے اوپر،   प्राक्त्याद्यारा उ चतुष्कं = شکتی اور کرم چار اند

प्रतिपादितं = سدھ کیا   तदन्तरालवर्ति = اس کے بیچ میں جو ظاہر ہے

समुत्पत्ति क्रमेण = اُتپتی کرم سے

षट्त्रिंशत् तत्त्वात्मक = ۳۶ تتو روپ   जगत = جگت

यत् लग्नं = جس پر یہ ظاہر ہوا   भाति = بھاستا ہے (سب سے پہلوں پر بھاسمان)

یہ جو ... ظاہر ہوتا ہے وہ سب ہے

तत् = وہ   प्रथमत = پہلے   कारणाकारणं = جو کارنوں کا بھی کارن ہے

परमशिव स्वरूपं = پرم شو روپ

कारिका द्वयेन = دو کاریکاؤں سے کہتا ہے
प्राह ॥

اس طرح سے یہ سب کچھ جو ہم نے شاستروں اور انوبھو یکتی سے سدھ کیا۔ ~~جو کچھ آگے ...~~
جو پہلے شکتی اند چار تتو سدھ کئے جو اس میں اُتپتی کرم سے ظاہر ہوئے ۳۶ تتو روپ
جگت ظاہر ہوتا ہوا بھاستا ہے۔ اسے سب سے پہلے جو کارنوں کا بھی کارن پرم شو سروپ ہے۔
سب سے پہلے ان دو کاریکاؤں سے کہتے ہیں:-

وہ پرم شو کا روپ ہے -

30/31 (10) भारूपं = پرکاش روپ   परिपूर्णं = پورن، بھرا ہوا   स्वात्मनि = اپنے ہی سروپ میں

विश्रान्तता = ٹھہرا ہوا (اپنے ہی سروپ میں قرار کرنے والا)

महानन्दम् = بڑے آنند والا ہے   इच्छासंवित्करणैः = اچھا، سمجھ، گیان اور کریا سے

निर्भरितम् = بھرا ہوا

अनन्तशक्तिपरिपूर्णम् = اور جو اننت شکتیوں سے بھری پوری ہے -

(11) सर्वविकल्पविहीनं = سب وکلپوں سے رہت   शुद्धं = شدھ (بے داغ)

शान्तं = شانت (وکلپ اچھا - کریا - جہاں پر کچھ نہیں جہاں) - लयोदयविहीनम् = لیہ اور اُدے سے رہت - جس کا ناش ہے نہ اُتپتی ہے -

यत् = جو   परतत्त्वं = سب سے اُتم تتو   तस्मिन् = اُس پرتتو میں - اسی پرتتو میں

विभाति = ظاہر ہوتا ہے   षट्त्रिंशदात्म = 36 تتوں والا   जगत् = جگت - یہ 36 تتوں والا جگت -

یہ سارا جگت (36 تتوں والا) اسی پرتتو میں ظاہر ہوتا ہے

یت " کے تیں - اس کا جب پر ہے وہ پر لکھا ہے - پورن شروع ہے - جہاں (جب ہم آگے بتلائیں گے) شروع ہے ...
ولستار اس شروع میں تت پرکاش روپ سے ٹھہرا ہے - یہی ولستار اگر اس سے پرکاش ... ہے ...

(103)

यत → एवं-विधं = اس طرح کا   पर → पूर्णा = پورن ہے

प्रावतत्त्व = شروع ہے   तत्र = اسی پورن شروع میں   प्रारादि धरा पर्यन्त = شروع سے ... تک

वक्ष्यमाण = جو ہم آگے بتلائیں گے   विश्व = جگت   विश्रान्त = ٹھہرا ہے (اسی پرکاش میں)

सत् प्रकाशात = ست اور چمکنے والا ہے

तत् प्रभिन्नमेव = اس سے پرے نہیں ہے (شروع روپ ہے)   चकासत = چمکنے والا ہے

युक्त्या = برہان سے / انومان   उपपद्यते = سدھ کیا جاتا ہے

इति यावत = اس طرح سے بیان تک (جب تک یہ یہی کرتا ہے)

ननु = پرشن ہے   तन्यते = ولستار کیا جاتا ہے   सर्व = سب کچھ

सर्व وہ ہے → तन्वादि = شریر آدی وغیرہ   यत = جو ... तत

ہے तत्त्व = وہی تت ہے (Screen)

तननात = ولستار سے   वा = یا   तत = وہ

इदं फलयं = جب تک ... (تت ... ہے)

دوسرا ... - تت ... ہے جب تک ...

جو برہم تک پہنچا دیتا ہے - وہ بھاو "ست" کہلاتا ہے

31/ तस्य भाव = اس کا بھاو (اس کا مطلب) इति वा = اس طرح سے بھی

तत्त्वम् = ست ہے [یہ ست پد کا ارتھ ہے]

इति = اس طرح एवमपि = ایسا ہی (اسی طرح) तत्त्वव्यपदेशा = ست کا نام

उपायं = (یہ ست کا) ज्ञानापादक = گیان پیدا کرنے والا جو برہم کو سمجھ کرتا ہے

اس طرح سے یہ ست پد برہم کو سمجھ کرتا ہے - کہ یہ کوئی برہم ہے

جو برہم کو سمجھ کرتا ہے -]

कथं = کس طرح (یہ جو ست پد ہے یہ کیسے برہم کا بتا دیتا ہے)؟

चित्स्वरूप = چت سروپ भगवति = بھگوان میں

परमाश्रित स्यात् = کس طرح اس برہم میں ہو سکتا ہے

(کیسے ہم برہم کو ست کہہ سکتے ہیں - جو ست پد برہم کا بودھ دیتا ہے)

उच्यते = جواب دیتا ہے

उपदिश्य = برہم کو اپدیش کر کے जन = لوگوں उपदेक्षया = اپدیش سے اس کا

شبدوں کو اپدیش کرکے

यावता शब्देन = جتنے شبد سے

جتنے شبدوں سے اس کو سمجھ کر بتاتا ہے - اس کا ست ہے

प्रतिपाद्यते = سمجھ کر بتاتا ہے

(یعنی جتنے شبدوں سے اس کو سمجھا کر سمجھ سکتے ہیں)

یہ نوٹ شبد تو ششیوں کو سمجھانے کے لئے استعمال کیا ہے۔ ورنہ اصل میں تو ... دیکھیں۔ دراصل وہ برہم شو ہی کا نام نوٹ شبد سے ہے

32/

तावता = اُتنے شبد سے   तत्र = اس جگہ   तत्त्वव्यपदेशो = تت نام ہے۔

اس جگہ نوٹ شبد کا نام اس برہم شو کو ہم اس وقت تک ہی دیتے ہیں۔ جب تک ششیوں کی سمجھ میں آئے کہ برہم شو کیا ہے۔ یہ نوٹ شبد تو صرف پہچان کے لئے ہوتا ہے۔ ورنہ برہم شو کا کیا نام ہو سکتا ہے۔ یہ اس سے پرے ہے۔

वस्तुत: = واسطو سے   न = نہ   नाम   لہذا

ورنہ ہر بار کہنے سے ایسی بات نہیں ہے۔ (برہم شو نوٹ نام سے نہیں) — یہ صرف سمجھانے کے لئے ہے

कीदृशं = کیسا ہے   तत् = وہ   पर = پورن   तत्त्वं = نوٹ

وہ پورن نوٹ کیسا ہے؟

جواب:— भा: → प्रकाश = پرکاش   रूप → स्वभाव

جس کا سوبھاؤ پرکاش ہے۔ جو کہ خود پرکاش ہے۔

اس سے نام بڑا ہے (لہذا)   महाप्रकाशवपु: = مہا پرکاش شریر والا   इत्यर्थ: = ایسے ارتھ ہے

یعنی مہا پرکاش سروپ۔ جو شیوں کا جوتی۔

तथा = ویسا   "परिपूर्ण" → निराकाङ्क्षम = اسکو کسی چیز کی ضرورت نہیں۔ اسکو کچھ نہیں ڈھونڈنا ہے۔ کسی چیز کی کامنا ہی نہیں۔

निराकाङ्क्षमपि = اچھا رہت بھی   ~~اگرچہ کامنا نہیں پھر بھی~~

स्फटिकमणि = سوچھ پتھر   یا   दर्पणादि = آئینہ وغیرہ کی طرح

आदि = جو   वस्तु = پدارتھ   भवति = ہے

یہ پرکاش روپ ہوتے ہوئے بھی کیا یہ مہا پرکاش وغیرہ میں؟

(حاشیہ:) ~~سفٹک منی آئینہ~~ وغیرہ کی طرح نرکانکشا ہوتے ہوئے بھی کیا یہ سفٹک منی آئینہ کی طرح جڑ ہے

32/ इत्य आह = یہ کہا ہے   स्वात्मनि → स्वभावे

اپنے ہی سوبھاؤ میں

یہ کیسے ہو سکتا ہے → अखण्ड अकृता = ٹکڑوں سے خالی جو نہیں بنایا گیا
चमत्काररसे

اُسی چمتکار رس میں

یعنی स्वात्मन स्वभावे

اسی پر विश्रमात = اُسی پر ٹھہرا ہے

"महा आनन्दः" → परा निर्वृति = بڑی خوشی

यस्य = جس کو   इति = یعنی اس طرح, یہ اسی طرح - جس کو بڑی خوشی ہے

تب ہی تو
तत = تو   एव = اسی طرح   परम = بڑی 3

अल्हाद = سکھ (یہ) اسی کو   स्फुरत्ता = سفورن

اس کا सारत्वात = [illegible]   - اس سفورن کا سار ہونے سے

जिस चीज़ کو شرما नہیں
प्रकाश्य स्फटिकादि = سفٹک یا آئینہ جو چمکتا ہے { سفٹک آدی چمکنے والے پدارتھ } جیسا ہے سے جو جڑ ہیں

जडात् = جو جڑ (ہیں) اُن سے یہ بہت اونچا ہے

یہ ! اس سے वैलक्षण्यम = وللکشن ہے

یہ پرکاش اس پرکاش سے وللکشن ہے

شبھ اور سفٹک جڑ ہے
اسکو صفائی کا غرور ہے
یعنی اسکو پتا اور نہیں ہے
لیکن وہ پرکاش [illegible]

उक्त = کہا   भवति = ہے

32 अत एव आह — اسی لئے کہتے ہیں 'इच्छासंवित्करैर्निरितम्'

→ इच्छा-ज्ञान-क्रियाप्राप्ति स्वभावमेव

→ इति — اچھا گیان کریا کی سوبھاو ہوتی ہے = न पुनः = نہ پھر → otherwise

प्रान्तब्रह्मवादिना (भिन्न) = شانت برہم واد والے — ویدانتی کے لئے

प्राप्तिविरहित = ... जाड्यकल्पनः = جڑ روپ ...

अन्यत् च — اور بھی "अनन्त प्राप्ति परिपूरकम् →

निसंख्या = بے گنت धरण्याद्या = زمین سے لے کر ... नानारूप आत्मका

शक्तयः = شکتیاں → ہو گئی ہیں इच्छा-ज्ञान-क्रिया शक्तीनां

= اچھا گیان کریا شکتیوں کی पल्लवभूता =

برگ بنے ہیں (...)

ब्राह्मयाद्याः शक्तयः = براہمی آدی شکتیاں

शब्द राशि = ...

समुत्थाः = پیدا ہوئی ہیں

ताभिः = انہیں شکتیوں سے "परितः → چاروں طرف → समन्तात् = چاروں طرف

पूर्णं → व्याप्तं = ویاپت तत एव = اسی سے

(اسی سبب سے)

33/ उल्लसन्त्य = اٹھتی ہیں ۔ तत्रैव = وہیں ۔ भ्राम्यन्ति = گھوم جاتی ہیں - چلتی ہیں ہو اسی میں رکتی ہیں -

इति = اسطرح ۔

एवं = ایسے ہی ۔ परावाग्रूपे = پرا واک روپ ۔ भगवति = اسی بھگوان کی =

स्वातन्त्र्यम = سوتنترتا ہے ۔

उक्तं = کہا ۔ स्यात = ہے ۔

ननु = شنکا پیدا ہوتی ہے ۔ वाग्रूपं चेत् परं तत्वं = اگر یہ پرم تتو واک روپ ہے - تو اس میں شبد ہی ہے -

तर्हि = تو ۔ कल्पनिके = کلپنا کیا ہوا ۔

تب یہ شبد کیا ہوا ہو گیا - { शब्दसंभिन्नत्वात = شبد کا ساتھ ملا کر ہونے سے شبد تو کلپنا کیا ہوا ہوتا ہے - سو تو یہ کلپنا کیا ہوا ہے -

اس شبد جو پرکاش روپ ہے اس کا کلپنا سے جوڑ کیسے ہو سکتا ہے - कथं शुद्धप्रकाशवपुषि , = کس طرح جو شبد جو پرکاش شریر ہے
कल्पनायोगः = اس میں کلپنا کا جوڑ کیسے ہو گیا - ہے آیا -

इत्यादिप्रायेण प्राह = اس غرض سے کہا ہے

وکلپ اُس وقت اٹھتا ہے جب دوسرے کو جو ایک مقام میں ہو اس کو الگ کیا جائے۔ } نیرو وکلپ دوئی سے رہت

33 सर्वविकल्पविहीनम् → تب وکلپوں کے بغیر

परं प्रमातरि = پر پرماتا پر   योऽयं = جو یہ } جو اُس پر پرماتا کا چمتکار ہے۔ اگر وہ واک روپ بھی ہے، وہ نروکلپ ہے

{ پر اہم بودھ کا چمتکار ہے۔ } पराहन्ताचमत्कारः = پر اہنتا کا چمتکار ہے   स = اگر وہ

वाग्रूपोऽपि = اگر وہ واک روپ بھی   निर्विकल्पः = نروکلپ ہے

× विकल्पो = وکلپ   हि = کیونکہ   पर्यायोल्लक्षण = دوسرے کو لکش کرنا یعنی (دوسرے چیز) وکلپ اُس وقت اٹھتا ہے جب ایک میں سے دوسرے کو الگ کیا جاتا ہے - دوسرے چیز کو لکش بنانا۔

Differentiation

{ دو روپ ہے۔ جو یہ دو ہیں } द्वयं = دو   घट = گھٹ   अघट = نہ گھٹ = پٹ (جو ایک دوسرے کے برخلاف ہیں)

सम्पूर्ण اُسی کو   उपादिपन = قبول کرنے والا (idea)

प्रथायात् = بیٹھ   व्यवच्छेदः = نہ   घट = گھٹ کو

{ نہیں گھٹ کو رکھ کے ... } निश्चिनोति = نشچے کرتا ہے (یہ وکلپ ہے جو فرق) × جب دو چیزیں ہوں۔

= اسکو وکلپ کہتے ہیں + ... اسکو گھٹ سے الگ کرتا ہے۔ وہ شئے ...

اسطرح اگر وہ پرم شو واک روپ بھی ہے سو ان نروکلپ

प्रकाशस्य = پرکاش کو   पुनः = پھر

पराहन्ता चमत्कार सार स्यापि = پر اہنتا کا چمتکار ہے اُس رس سوست ... ہو

×۔ وکلپ اسکو کہتے ہیں جو دوسرے چیز کا ... یعنی کہتے ہیں ... جیسے دو چیزیں - گھٹ اور پٹ
جہاں ہم ... نہیں وکل ... نہیں - جہاں ... وکل ... نہیں یہی ... ہوتا ہے

33 न = نہ अप्रकाशरूप: = نہ پرکاش روپ प्रकाशात = پرکاش سے

पर: = دوسرا प्रतिपक्षतया = مخالف ہونے سے

न = نہ विद्यते = ہے

پرکاش سے الگ کچھ نہیں جس کو ہم کہیں کہ یہ اپرکاش ہے

यच्च व्यवहरन्ति = جسکو برتتے ہیں

तस्य = اس کو विकल्परूपता = وکلپ روپتا

اسلئے جو کچھ بھی ہے اس میں اس کے یہ وکلپ روپ نہیں ہے

व्यवहर्तृणां = برتنے والوں کا हि = کیونکہ पृथक् = الگ

प्रकाशात्मा = پرکاش آتما

सदा प्रकाशवपुषि = پرکاش شریر

प्रकाशते चेत = اگر

تب یہ پرکاش دکھائی دیتا ہے

तर्हि = تو بھی

तत = اسی संवेदनरूपेण = گیان روپ سے

तादात्म्य प्रतिपत्तेः = ایک ہونا प्रतिपाते = جانا

اسی کو دیکھنا ہے

٭ ۔ جو بیدارتھ سموت پرکاش ہے یہی پرکاش ہے ۔ تو اُس کو اس کا پرکاش کو کیسے ہیں [illegible]

اُس میں پرکاش کیسا رہے کیسے ہو سکتا ہے ۔

33/ (111) سموت پرکاش دو ساتھ ملیا ہوئی ۔

इत्यादिन्यायेन = = اس نیائے سے ۔ योऽपि पृथः = جو بیدارتھ ہی

प्रकाशस्वभावतो = پرکاش روپ ہونے کی

यातः सन् = ہو کر ۔ یعنی پرکاش سوبھاؤ ہی

स कथं = وہ کیوں ؟ — سوبھاؤ کے

तस्यैव = اُسی سوائم کے ; व्यवच्छेदकः = الگ کرنے والا بنے ۔ کیسے ؟

येन = جس سے ; विकल्परूपतां = وکلپ روپتا

तत्र = اس میں ; ~~समावेशात~~ = ~~समान~~

समावेश — [illegible] ; समं प्रावेशत = اسی میں داخل ہوئے ۔

(یہ وکلپ) یہ اُس سوائم کو کیسے الگ نہ کر سکتا ہے ۔

یعنی [illegible] ← पृथः = جدا اجزائی ; प्रतिपक्षतया = مقابلے میں ہونے

न = نہیں ; प्रकाशेत = چمکتا نہیں

(اگر مقابلے میں رہے تو نہیں چمکتا ہے ؟ — (وکلپ)

مقابلے میں [illegible] نہیں چمکتا [illegible]

اسے یہ دوسرا پرکاش اسکے مقابلے میں نہیں چمک سکتا ہے ۔

[illegible]

कथं = [illegible] इह = اس دنیا میں

प्रकाश्यमान: = جو ظاہر ہو رہا ہے پदार्थ: = کوئی بھی چیز

प्रतिपक्षरूपो ऽस्ति = [illegible]

इति = اس لئے परिच्छेत्तुमपि = [illegible]

प्रकल्पेत = Caudo [illegible] (‏[illegible]‏)

इति यत् किंचित् एतत् स्यात् = جو کچھ ہے

यत: = چونکہ सर्वं = سب

व्यवच्छेदात्मकं = [illegible]

[illegible] → विकल्प — [illegible]

[illegible] → 'विकल्पैर्विहीनकं'

"[illegible]".

34/

(113)

अपरिच्छिन्न स्वभावे = نہ بٹے ہوئے سوبھاؤ والے

परं तत्त्वम् = یہ شو تتو ہے

एत एव आह = یہی کہا ہے

प्रबुद्धम् = (ہے) روشن (یہ) इति = ایسا विमलं = (ہے) نرمل (یہ)

→ विकल्पमय्या = وکلپ سے بھری

प्रसिद्धि — मय्या = [illegible] । प्रभावात् = اُس کے اثر سے

(وکلپ سے بھری ہوئی [illegible])

तथा = ایسا ہی ہے "प्रान्तम्" →

ग्राह्यग्राहक समुत्थक्षोभावात् = [illegible]

[illegible]

[illegible] "प्रान्ते"

प्रान्ति सामरस्येन = [illegible]

([illegible])

स्वरूपस्थं = [illegible] ([illegible])

[illegible]

न पुनः = [illegible] प्रपञ्चं = [illegible] घ्राकलं = [illegible]

कल्पितं = [illegible] ([illegible])

[illegible]

34/ अस्य च = (اور اس کا) "लयोदयविहीनम्"
پیدا اور نیست ہونا ⟶ جو پیدا نہیں ہوتا نیست نہیں ہوتا

مشرقی | پرمان सकृद्विभातोऽयमात्मा = یہ آتما - ہمیشہ روشن - باطن ظاہر

इति कृत्वा = یہ کر   सनातन = سناتن

एते = ان سب کا   भूतभविष्यद्वर्तमान =

جہاں تو کال کا قدم نہیں دھرتا - | कालः = کال   جو کال بھوت بھوش ورتمان سے یہ روپ ہے
तत्र = وہاں   न क्रमते = نہیں چلتا ہے   سمرتھ نہیں ہے — اس پر

یہ کال اس پر نہیں پیر دھر سکتا ہے - کال کا وہاں پیر نہیں جاتا ہے

यतः = جس سے   کیوں   कालस्य = اس کال کو

یہ کال بھی تو اسی سے زندہ ہے | तत एव = سمرتھ سے   اسی سے
समुल्लास = اُلّاس ہے - زندہ ہے

یہ کال بھی اسی سے زندہ ہے -

یہ اتپتی اور وناش سے بھی باہر ہے | इति समुत्पत्तिविनाशबहिष्कृतं =
اس نے اتپتی اور وناش سے باہر ہے

جہاں اتپتی اور وناش نہیں ہے

جب سی ہم پرکرت کو الست رنگی ہار کرں (مانیں - جانیں) تب ہی تو وشنو وشیوم (تانانا) سوم ہو -

35

... परतत्वे = پرکرت प्रभ्युगत = رنگی ہار کرنے پر

جب ہم یہ کہیں کہ پرکرت ہی ہوا

کو विश्वस्य = جگت کی विश्वत्वम् = جگت بھاؤ

جگت کی تانانا -

उपपत्रभ = ...

इति प्रतिपादित स्यात = ... یہ بات

35.

(116)

اِنتر گٹا = नतु = لیکن برہم تو

(12) एव विधे = اِس طرح کے   परतत्त्वे = برہم تتو میں   भाति = باستا ہے

जगत् = جگت اس پر باستا ہے   इति = ایسا   यत् = جو (برہم)

प्रतिपादितं = سدھ کیا

तत् = وہ   कथम् = کیونکر   स्यात् = ہے   एतत् = ایسا

کیونکر ہو سکتا ہے - کہ جگت اس برہم تتو میں باستا ہے!

यावता = جتنا   परतत्त्वापेक्षया = برہم تتو کی اپیکشا سے

جتنی برہم تتو کی اپیکشا کی جائے - (جتنا جتنا ہم آگے چلے جائیں)

اس وقت کا ... { न किंचित् = نہ کچھ   भेदने = بھید سے

भातु = جگت ہی   प्रागल्भेत = ہو سکے

جتنی جتنی ہم برہم تتو کی اپیکشا کریں - ہم دیکھیں گے اس میں نہیں کوئی وستو خود جگت واقعی نہیں ہے -

اور گیان ...   ततो = اس برہم تتو سے   भिन्नं = جدا   चेत् = اگر کوئی

जगत् = جگت   भासते = باستا - باستا ہے

तदा = تب   प्रद्युम्नवाद स्वराज्ञो   ادویت واد

स्वराज्यता = ٹوٹ گیا

اس وقت کا ادویت واد کا کھنڈن آتا ہے

35 [illegible] एवमिदं चेत = اگر یہ [illegible] "जगत प्रकाशते"

شبہ - [illegible] इति = کہ ، कथं वाचो युक्ति: - [illegible]

इति = کہ दृष्टान्तद्वारेण = [illegible]

तत् = وہ = भेदाभेदरूपं = بھید ابھید [illegible]

उपपद्यते = [illegible]

एतत् समर्थनाय = [illegible] प्राह = [illegible]

(12) दर्पण बिम्बे = آئینہ میں - درپن کا عکس

यत् वत् = جس طرح   नगर = نگر

ग्रामादि = گاؤں وغیرہ   चित्रम = نانا پرکار کے

अविभाग = نہ الگ (اس شکل میں ہو الگ نہیں ہے)
لگتے ہیں - یہ ساری چیزیں آئینہ کا حصہ ہی ہیں - آئینے اور ان چیزوں میں کوئی بھنتا نہیں ہے

भाति = دکھائی دیتے ہیں   विभागेनैव = الگ سے بھی

परस्पर = آپس میں (لیکن آئینہ سے کوئی الگ نہیں ہیں)

दर्पणात् अपि च = آئینہ سے بھی اور
(ایک دوسرے سے بھی یہ چیزیں الگ الگ ہیں اور آئینہ تو ان سے الگ ہی ہے)

(13) विमलतम = بے حد نرمل परम = اُتّم भरैव = کبھی
(ہم سمجھ کر بھی نہیں دیکھ سکتے)

बोधात = سمجھ سے پرے
جاننے میں نہیں آتا ہے ततवत = اُسی طرح

विभागशून्यमपि = ویبھاگ رہت ہے प्रत्येकं च =
آپس میں (ہر ایک میں الگ)

ततोऽपि च = اس کے بعد بھی

विभक्तामं = باگ میں آیا ہوا - ہر ایک میں آیا ہوا جیسے

भाति = بھاستا ہے जगत् यतत् = یہ سارا جگت

جو نرمل تر یعنی بے حد نرمل ہے وہی اُسی طرح اس ... میں ویبھاگ رہت ہو کر بھی (دیکھو ہر ایک ...)
باگ میں آیا ہوا دکھتا ہے - یہ سارا جگت اسی میں بھاستا ہے -

36/

(126)

यथा = جوں   निर्मले = صاف   मुकुरान्तरी = آئینے میں

नगर-ग्राम-पुर-प्राकारादि-स्थल-नद-नदी-ज्वलन-वृक्ष, पर्वत
पशु-पक्षि-स्त्री-पुरुषादिके =
نگر - گاؤں - پور - قلعہ - اتھل - محل - ستھل - ندی - آگ - درخت - پہاڑ - پشو
پرندے - استری - پرش ادی -

सर्व प्रतिनिम्बतया = ان آئینہ میں عکس لگنے سے

चित्रे = نانا پرکار   स्वालक्षणायन = اپنا سروپ دکھلانے میں

{ نگر - نگری شکل دکھلاتا ہے - ستھل - ستھل کی شکل آئینہ میں
دکھلاتا ہے - اسطرح ہر ایک چیز اپنا اپنا الگ سروپ دکھلاتا ہے - }

नानारूपे भासते = نانا روپ ہوتا ہے

[illegible]   प्रविभाग = اس آئینہ سے الگ میں → [illegible]

[illegible]

उपरागात् = آئینے سے   प्रविभक्ते = سے بنا

सत् = ہے   भाति = [illegible]

तत् प्रभेदेनैव = [illegible] اس [illegible]   अन्तर = [illegible]

प्राकार = قلعہ

समर्पयापि = [illegible]

36/

तत्र = وہاں بھی   अभेदेन = ابھید سے

भासमानमपि = بھاسمان بھی   भाति = چمکتا ہے

" विभागेनैव च परस्परम् = — ایک دوسرے سے الگ بھی دکھتا ہے
یعنی آپس سے نہ بھی دکھتا ہے —

इति = یعنی

अन्योन्य = ایک دوسرے   स्वा लक्षणायेन = اپنا سوروپ دکھتا ہے

यथा घटात = گھٹ سے   पटो भिन्नः = پٹ بھن ہے —

(جب اپنا اپنا سوروپ الگ الگ دکھائی دیتا)

ویسے ہی । परात् घटः = پٹ سے گھٹ بھن ہے

{ گھٹ سے پٹ الگ ہے اور پٹ سے گھٹ بھن دکھتا ہے — }

इति विभक्ततया स्फुरति = اس طرح الگ سا سوروپ ظاہر ہوتا ہے — ہر ایک کا —

यथा तत् अन्तर्गता = ویسے ہی اس کے اندر گئے ہوئے   हि = کیونکہ

भावाः = پدارتھ   पृथक्त्वेन = الگ الگ سے

परामृश्यन्ते = پرامرش کیا جاتا ہے (سوچا جاتا ہے)

— الگ الگ پدارتھوں کا پرامرش کیا جاتا ہے

36/ न पुनः = نہ پھر   ते दर्पणा त्यक्त्वा = اُن آئینوں کو چھوڑ کر

पृथक = الگ   किंचित = کچھ   उपलभ्यते = پایا جاتا ہے

اگر آئینے چھوڑ دو - تو شہر کہاں پا سکتے ہیں - اس میں انکا عکس ہی نہیں آتا -

لیکن اور   किन्तु = لیکن   दर्पणा सामरस्येन = درپن سامنے ہی
ان شہروں کی سمتیں ہوتی ہیں - یہیں

स्थितमपि = ٹھہرا ہوا ہے (اگر یہ شہر ملتا ہے اسی دنیا میں ٹھہرا ہوا ہے)

सवीता = سورج (
معروف ہے

भित्रं = جدا   जगत = جگ

प्रतीयते = ہوتا ہے

एवमपि = ایسا ہی   धरादिप्रतिबिम्बेन = دھرتی کے عکس کا پڑتا ہے

दर्पणास = آئینہ   तर्हि = تو (جب ہی)

अन्तराहित = چھپی ہوئی (بھرا ہے)

स्यात = ہو   یہ شہر میں پا سکتا ہوں
آئینہ ان عکسوں سے بھرا ہے۔

چونکہ آئینہ اُدھر [illegible] میں کہیں نہیں [illegible] [illegible]

اسا نہیں ہے - کہ آئینہ ہو کہیں نہیں رہ جاتا -

36/37 एतत = یہ / اِس   न = نہیں   इत्यत्राह = اس لئے کہا

दर्पणादपि च = اور آئینہ سے بھی

→ न = نہ   केवलं = صرف   स्वयं = آپ ہی

भाव = بھاؤ - خیال   दर्पणान्तरगता = آئینہ میں اندر گئے ہوئے

तु भिन्ना प्रकाशन्ते = تو الگ الگ ظاہر ہوتے / لیکن حقیقت میں - نہیں { یہ عکس تو الگ الگ دکھتے ہیں -

यावत = جب تک   दर्पणादपि = آئینہ سے بھی

व्यतिरिच्यन्ते = الگ ہی ہیں (آئینہ سے الگ

यतो = جس سے   दर्पणः = آئینہ (یہ)

तत्तत्प्रतिबिम्बमयोऽपि = اُن اُن عکسوں والا بھی

तेभ्यः प्रतिबिम्बेभ्यः = اگر (یہ آئینہ) ہو گا / اُن عکسوں سے

سمجھ میں اتر آئے گا (حاشیہ): لیکن یہ دیکھ لو کہ ... اُن عکسوں میں ... -

समुत्तीर्ण स्वरूपतया = اس سے اوپر اٹھ کر (آئینہ)

चकास्ति = چمکتا ہے (یہ آئینہ اُن عکسوں سے اوپر ہی ہے -

اگر آئینہ ... ہو ... عکس ... - لیکن آئینہ ... ہو جاتا ہے -

न पुनः = نہیں پھر   तन्मध्ये = اس میں   संक्रान्तं = گیا
(آئینہ وہ عکس سے بھی نہیں بنتا ہے)

यन्न च = جس سے   न दर्पणः   آئینہ نہیں ہے

इति प्रतीतिः स्यात् = ایسا ہو سکتا ہے → ایسا نہیں ہے

सर्वस्य = سب کا (ہر ایک چیز کو)   पुनः = پھر

तत्तत्प्रतिबिम्बग्राहकोऽपि   وہ وہ عکس کو لینے والا بھی

दर्पणोऽयम् = مگر یہ بھی کہتے ہیں - یہ
"یہ آئینہ ہے" - ہر ایک ایسا لگتا ہے - یہ سب کو ایسی جانتی ہے - جس پر کوئی بادا نہیں ہے -

इति = اس سے
प्रबाधिता = اس میں نہیں بادا   प्रतिपत्तिः = جانی
(اس کا جانا نہیں ہوتی - کہ یہ آئینہ ہے یہی نہیں آئی)

नापि = نہیں بھی   धराधि = [illegible]

दर्पणा = آئینہ کی   विधिनावशिष्ठ = [illegible]
(یہ [illegible] آئینہ کی [illegible])

اس طرح کا عکس ہے ... بالکل عکس جیسی ہی ہوتا ہے ... نہیں موجود ہوتا ہے -

اسی عکس کو ... ہوتا ہے کہ آئینہ ہے

[illegible]

यन = جس ([illegible]) "[illegible] परा"

[illegible]

[illegible] पदर्पिरा [illegible]

([illegible])

इति = اس طرح   स्वस्वरूपता हानिः = اپنے سروپ [illegible]   हानि = نقصان

यत्र = جہاں   जायेत = پیدا ہوتی

مطلب [illegible]

[illegible]

[illegible]

यथा कृत = [illegible]   काल = [illegible]

भवेत = [illegible]   न = نہ   तत्र = اس جگہ

स्वभावविप्रलोपाय = [illegible]   भवति = ہے

at diff times or diff places the ~~Condition~~ Property is the Same ([illegible])

तस्मात् = اس لیے

तत तत प्रतिबिम्बसादृश्य = [illegible]

सत् = [illegible]   [illegible]

37/ स्वात्मनि = اپنے سروپ میں   दर्पणे दर्पण एव

-جیسے آئینہ میں آئینہ ہی   - [illegible] =

इति च [illegible] न काचित् = کوئی

This thing remains the fact.

प्रतिबिम्बवाद ख्याति = عکس واد کی

ख्याति = کہنا   اس عکس واد کو کہنے میں {کچھ بھی}

جس کو عکس کہا جاتا ہے یہ سب بھرانتی ہے

स्पष्ट = صاف   उच्यते = بولا (دوسرا شلوک)

भ्रान्ति = بھرانتی   एषा = یہ {یہ سب بھرانتی ہے}

کیا گیا

यत् = جو   उक्तं = کہا گیا   दर्पणे = درپن میں

इस्ती = ہے   इति = ایسا   परामृश्यते = [illegible]

तत् = وہ   पुनः = پھر   दर्पणे = آئینہ میں

स = وہ   कश्चित = کوئی   विद्यते = ہے

(اور جو عکس درپن میں ہے وہ کوئی اور شے نہیں ہے)

37 तथात्वे = ویسا ہونے میں   पथक्रिया विरुद्धता =
([illegible]) — [illegible]

भ्रान्त्यैव = بھرانتی سے
[illegible] भ्रान्त्यैव = بھرانتی سے   एव = ہی

निश्चय: = نہیں کیا جاتا ہے (ورنہ اس کا ثبوت ہو سکتی)

एतावता = اتنے سے (ثابت کیا گیا)   प्रतिबिम्ब वादिन = اس پرتبمب واد کے
दृष्टान्तः = درشٹانت   तावत् सिद्धः = سدھ ہو گیا

38 भ्रान्तिस्तु = بھرانتی تو   स्वरूप = یعنی بھرانتی کا
[illegible] بھرانتی کا ہونا ہے

समनन्तरे = اس کے بعد
निरूप्यते = نروپن کیا جاتا ہے

तत् वत → ویسے ہی   तथैव — ایسے ہی

दर्पणादिषु .... = [illegible]

(तथैव) اس درشٹانت سے

34/ — "विमलतमपरमभैरवबोधात्" →

زیادہ — "प्रतिप्रायेन" = برابر طرح، विगलित = پگھلی

کالک یعنی ناپاکی — कालिकात = سیاہی (یعنی ناپاک میل) سے پیدا ہونے والی

पूर्णानन्द उतारिक्तात् = پوری طرح آنند کی زیادتی سے

प्रकाशात् = اسی پرکاش سے

"जगत" → प्रथमे = دنیا پہلے

بعد از پرتو — "विभागशून्यमपि" = جدائی سے خالی بھی →

दर्पणप्रतिबिम्बवत् = آئینے میں پرتو کی طرح

ततः प्रकाशात = اسی پرکاش سے (پیدا ہونے سے) प्रविभक्तमपि = الگ الگ بھی (جدا جدا)

الگ — परस्परं च = آپس میں بھی विभक्तत्वेन = جدا جدا ہونے سے

ग्राह्यग्राहक उपेक्षया = گرہن والا اور گرہن کرنے والے کی

- اپیکشا سے

(129)

38/ पंच नानारूपं = نانا روپیں प्रथते = پھیلتا ہے

(یہ صفت - اس کیا برائی شہ صرف ہیں) بھاستا ہے

"ततोऽपि च → اس سے بھی ۔

१ → बोधादपि = اس بودھ سے بھی उन्मग्नमिव = ابھرا ہوا

प्रभाति = بھاستا ہے (صفت) "اوپر اٹھا ہوا"[2]

२५०३ यतो = جس وجہ سے बोध: = یہ بودھ - گیان

तत रूपतयापि = اس اس روپ سے

प्रथमान: = پھیلتا ہوا ہے اگر مگر तत: اس سے

समुत्तीर्णः = ابھرا ہوا اس پر ابھرا प्रथते = پھیلتا ہے - (بودھ روپ کو اثر ہی ہے)

यथा प्रतिबिम्बेभ्यो दर्पणः = جیسے ہر ایک سے آئینہ الگ ہے اور کبھی ہوتا ہی ہے

एवमपि = اسی طرح سے

बिम्ब भाव प्रतिबिम्ब साक्षित्वात् = [illegible] اس کو دو پنوں سے دیکھنا - آئینے کے مانند ہے

38/

प्रकाशा = ظاہر ہوتی ہے विभावेभ्यः = دوسروں ...

सम्प्रतीशः = دکھلائی دیتا ہے - ہوتا ہے

ہے کیوں ... सर्वस्य = ہر ایک چیز کو (سب چیزوں کا) पुनर्भवितृतया = (دوبارہ ہونے والے) =

स्वस्वरूपेण = اپنی اصلی صورت سے पश्येत = دیکھتا ہے

ہر ایک چیز کی نوع سے ... } ہے - ہر ایک میں (دیکھا جاتا ہے) - دکھائی دیتا ہے

भगवतोऽपि = بھگوان کا بھی

देशकालाद्यभेदः = دیش سے - کال سے - آکار سے

केवलम् = صرف पुनः = اسی طرح ...

प्रकाशते = ظاہر ہوتا ہے स्वपरावत = اپنے اور دوسرے ...

न पुनः = نہ کہ پھر

स्वं रूपं = اپنے روپ کو संभिन्नात्ते = ملا ہوا ہے

(یعنی ملا ہوا ہے -)

[illegible] ... ہر وقت ظاہر ہے - آنکھ ... [illegible]

38/39 रूपत एव = [illegible] एका = [illegible] अनेक = بہت
स्वरूपादि [illegible]

= [illegible] बाध एकमेव = [illegible]

[illegible] صورت ایک ہی ہے - [illegible]

बोधाभ्यां उपगत चित्र-ज्ञानवत् [illegible]

[illegible]

[illegible] ایک ہی ہے -

किंतु = [illegible] दर्पण प्रकाशात् =

39 آئینہ پرکاش ہے - اس سے

स चमत्कारस्य = [illegible] صورت کو

चित प्रकाशस्य (جیسے پرکاش (چمتکار پرکاش)) - صورت پرکاش کو

इयान = اتنا [illegible] विशेषः = فرق ہے

جیسے پرکاش کی آئینہ پرکاش سے اتنی فرق ہے۔

جیسے پرکاش [illegible] چمتکار پرکاش اتنا فرق ہے -

39

- यत्तदपरो = جو دوسرا ہے سو स्वच्छता

स्वच्छतामात्रसनाथे = نرملتا ماتر سے سوبھت کی گئی ہے

باہر کی چیزوں کا عکس جو اس میں ہے - { भित्ते = بھیت बाह्यमेव = باہر ہی ہا

नगरादि = نگر آدی (باہر) ہے प्रतिबिम्बेन = عکس لگنے سے

اس چیز کا عکس دیکھا جاتا ہے + प्रतिभात = پرتیت ہوتا भाति = بھاستا ہے

+ مگر न तु स्वात्मनि = یہ عکس جو اس میں

لگتا ہے تو آئینے کے اندر نہیں (اس کا باہر کی چیز سے ہی ہے)

रूपतो = اس طرح سے दर्पण = آئینہ میں

اس طرح سے اس میں "एवं हस्ते" = یہ ہاتھ میں | اب بھرانتی کیا ہے [illegible]

एवं हस्ते (پاٹھ بھید) [illegible]

इति = اسی طرح یہ جانتا ہے

स = وہ भ्रान्तः = بھرانتی ہے

स्यात् = ہے { - یعنی بھرانتی میں ہے (کیونکہ یہ سب ظاہر ہے)

39

प्रकाश: = پرکاشتا ہے ... پر = پر

स्वात्म ~~आभित्तौ~~ चमत्कारसार: = کے اپنے آتما کے چمتکار سار روشن ہے

स्वेच्छया = اپنی اچھا سے

स्वात्मभित्तौ = اپنی آتما کے روپ کی دیوار میں — प्रमेयेन = [illegible]

परामृशन् = پرامرش کرتا ہے

[illegible] स्व संवित उपादानमेव = اپنی ہی سموت اس کا مواد ہے — (تمام چیزیں اپنی ہی سموت ہے) کا رنگ ہے

विश्वम् = رس دنیا کو — आभासयति = بادشاہت کرتا ہے

विश्वस्य ~~स्व~~ आभासनमेव = دنیا کا باہر آنا ہی ہے

[illegible] विमीतृत्वं = [illegible] — भगवत = رس بھگوان کا

इति परामर्श एव = اسی طرح پرامرش ہی ہے

जडात = [illegible]

इपीरा प्रकाशादि: = [illegible]

انوکھا بنانے والا

یہ ذکر دوسرے کا ہے { वैलक्षण्यापादिके = عجیب بنانے والا

یعنی جو الگ ہے -

मुख्य रूप = ٹھیک ٹھیک इति

جو ہر شخص کا درشن ہیں - درشن یہ عکس خود بنی بنائے -

(سوامی جی) یعنی سروپ ہر شخص درشن ہوتے ہے - اس پر منتر اری لیے {

پر Screen خود ابتدائی ہے -

एतत् यव = یہی بس = ناشر کا (اکھنو لیا)

विवृति विभाप्रीन्याम = دو روپوں کی درشن میں

उत्क्रम = الٹی

प्रतर = سو ہی ... प्रविभाति = چمکتا ہے

सकले = سارا जगत = ملک

अतमनील = اپنے آپ میں यतवत = جیسے

31 विचित्ररचना = نانا پرکار کی بناوٹ سے

मुकरान्तराले = آئینہ میں کی اسی طرح ( )

बोध: - سمجھ پुनर = پھر

निजाविमप्रदान = جو اسکے اندر درشن युक्त्या = اس یکتی سے

सारयुक्त्या

विश्वं = دنیا کو परामृशति = پرامرش کرتا ہے

کیونکہ یہ جو دنیا کو پرامرش کرتا ہے اپنی یکتی سے

नो = نہ मुकुरः = آئینہ तथा = اسطرح

तु = لیکن — آئینہ اسطرح میں رہتا - وہ طرح ہے - وہ درشن میں رہتا ہے

इत्थं परमेश्वरस्यापेक्षया = اسی طرح جب پرمیشور کی اپیکشا سے

پرمیشور بھاؤ کی اپیکشا سے

स्वाङ्गनिर्मिते = اپنے انگ بنائے ہوئے (اپنے اندر) भावराशौ

یہ اسکا اپنا ہی انگ اسنے بنایا ہے

४०/ न काचित् भेदम्आप्नोति = نہیں پاتا کوئی بھید برائی

سدا ہیں - اس کو یہ بھرم نہیں ہے کہ یہ برا انگ نہیں ہے -

اسکو یہ خود معلوم ہے - اس کو کوئی بھرم نہیں - یہ بھرم تو دوسروں کو ہی ہے

मायापमात्रपेक्षया = مایا پرمانا کی اپیکشا سے

= جیو کی اپیکشا سے

तु = پرتو योऽयं = جو یہ

भावभास: = بید کا باس ہے (یہ جیو کی اپیکشا سے ہے - کیونکہ وہ مایا پرمانا ہے)

سدا جیو دوسے → एष = یہی

प्रतीत्वारख्या तिरुपा = پردرشتا نہ ماننا (جو دوسروں کی بات ہے)

भ्रान्तेत = یہی برائی ہے وہ بالکل نہیں →

पूर्णस्य = پورن روپ سنتاس ہر हृदयात्मनो = دونوں کا ایک

रूपस्य = روپ سے (مستحکم)

40/

अप्रख्यानम = نہ بھاسنا } دکھائی
نہ پرکاش }

अप्रथा = نہ بھاسنا

पूर्णं न भासते = پورن بھاسنا نہیں
ہوتا

اور किंतु = لیکن

अपूर्णा = ادھوری ہوتی ہے

स्वरूप = سوروپ

भासते = بھاسنا ہے ہوتا ہے

भेद एव प्रतीयते
प्रती यते بھید ہی معلوم ہوتا ہے

इति यावत = اس طرح ہے

تاکہ
तस्मात् = اس لئے

निरवयवत्वाय = دوشکل رہت

प्रतिबिम्बवादः = اس کو کہتے ہیں
بڑی عجیب بات - دیس میں دو شکل کو دیکھیں -
دیس میں دو شکل نہیں رہتی - یہ اس کے واسطے سمجھوتا

14

(138)

40/

ادھر سے (۱۴۱) इत्थं = اس طرح سے परतत्त्वस्वरूपनिरूपणा = پرتتو کا سروپ اسکا نروپن کیا۔ وہی پہلے بتلا چکے ہیں۔

पूर्वं = پہلے جو کہہ چکے ہیں

ليا प्रकाशप्रविभेदन = پرکاش کی تقسیم (الگ الگ کرنا) जगतः = جگت کی

~~[illegible]~~ [illegible] سے

षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकस्य = جو 36 تتووں کے स्थितिं विधाय

{پہلے [illegible]} – [illegible] اگر [illegible] تو اسکی [illegible] (اس جگت کی) ← اسکی [illegible]

पुनरपि = پھر بھی एतस्य = اس جگت کی

समुत्पत्तिक्रमेण = پیدائش کے کرم سے प्रतितत्त्वं = ہر ایک تتو کا

स्वरूपं = سروپ कारिकाभिः = کاریکاؤں سے

प्रतिपादयति = سمجھاتے ہیں،

(14) शिव - शक्ति - सदाशिवताम् = شو شکتی سداشو کو

ईश्वर विद्यामयीं = ایشور اور ودیا کو तत्त्वरूपाम् = تتو روپ کو

[illegible] 5 8 प्रकाशिनां = ۵ پانچ مخصوص ان پانچ विभक्तभावेन =

भासयति = بھاسا دیتا ہے تقسیم کرنے سے - بیان کرنے سے

- شو شکتی سداشو ایشور ودیا ان پانچ مخصوص تتووں کو [illegible]
[illegible] بھاسا دیتا ہے -

41/ योऽयं = جو یہ   परीद्भाव: = ظہور   परतत्त्वनिरूपणाया
= پرم شو کا ہر طرف سے ظہور دکھانے کے لئے

समनन्तर = فوراً । प्रतिपादित = ثابت کیا ہوا   स्वरूप: = [illegible]
[illegible] ۔ اپنے بعد اس [illegible] کا

[illegible]   स्वस्वरूपरूप: = اپنے ہی روپ میں ۔   या: = جو

शक्तय: = شکتیاں → [illegible] चित्-निर्वृता-इच्छा । ज्ञान - क्रिया, रव्या   چت - آنند - اچھا - گیان - کریا

रव्या = نام والی   3.   पञ्च = پانچ

प्रपञ्चप्रतिभातहेतुभूता = [illegible]
[illegible] } یہ [illegible] پانچ [illegible]
پانچ [illegible] ۔

तासामेव = انہیں پانچ [illegible] । भिन्नत्वेन = بھن ہونے سے (اپنے [illegible]).

तद्व्यावृत्त्या = الگ الگ ہونے سے (یہ [illegible])
[illegible] - ([illegible])

इमौ = یہ دو "तत्त्वदशौ" = تتو دشا

पंचसंख्यामत्रिताना‍मेव = پانچ تتوں کی ہی

भासयति = ظاہر کرتا ہے

[illegible] یہ [illegible] (پرم شو) ان پانچ [illegible] ([illegible])

41

स्वालक्षणायेन = (اپنا لکشن (سروپ)) प्रकटयति = (اظہار کرتا ہے)

[illegible]

इत्यर्थः = (اس کا ارتھ ہے)

कीदृशी तावत् ? = وہ کیسی ہے؟

इत्याह = (کہتا ہے) "शिव" इत्यादि

شو وغیرہ لفظ

शिवश्च शक्तिश्च - तयोः शिवश्च = شو شکتی - ان دونوں کا شو

तयोः भावो यस्याः = [illegible]

सा = [illegible] तथोक्ता = [illegible] ता = [illegible]

तथा = [illegible] "ईश्वरविद्" → प्रकृति = [illegible]

यस्याः = [illegible] सा = [illegible] तथा = [illegible]

इह = [illegible] प्रतितत्त्वं = [illegible] स्वरूपं

पश्यति = دیکھتا ہے

[illegible]

५। तथा हि = [illegible] सर्वप्रमातॄणाम् = [illegible]

अन्तः = اندر पूर्णाहन्ता चमत्कारमये [illegible]

सर्वतत्त्व उत्तीर्णां = [illegible]

[illegible] → महाप्रकाशवपु = [illegible]

[illegible] यत = 3. [illegible] चैतन्यम् = [illegible] एतदेव शिवतत्त्वं = [illegible]

[illegible] तत्र = [illegible] तदेव निरूपणम् [illegible]

उपदेशाजन = [illegible]

अपेक्षया [illegible]

तस्यैव भगवत = [illegible] चित्रूपस्य आनन्दरूपा [illegible]

[illegible] "विश्वं भवामि" [illegible]

इति परामर्शातो = [illegible]

[illegible] विश्वभावस्वभावमयी [illegible]

संविदेव [illegible]

[illegible] "विश्वं भवामि" [illegible]

सांविद्व = [illegible]   किंचित = کچھ [illegible]

उदछ्रूनतारूपा = [illegible]   سرو भावानाम् = ساری [illegible] سب پدارتھوں کا

बीजभूमिः = بیج بھومی (بیج)   इयं = یہ [illegible]

शाक्यवस्था = (جو) شکتی اوستھا [illegible]

एषैव = یہی [illegible]   विश्वगत = [illegible]

स्रष्टृ संहार = [illegible]   उपचारात = [illegible]

कृपा = [illegible]   पूर्णा = پوری [illegible]

उभयरूपापि = دو روپ والی [illegible]

एकैव = ایک ہی [illegible]

गीयते = گائی جاتی ہے [illegible]

पुनरपि स्तत्रैव = [illegible] विश्वसमुत्पत्तिबीजभूमौ

(اس [illegible]) [illegible]

→ महाख्याति = [illegible] ख्यायो [illegible]

महेशस्य [illegible] प्रशमिदम् →

इति प्रभेदेन = [illegible] (پربھید [illegible]) → [illegible]

[illegible]

(14) (144)

42 पूर्णाहन्तामयो = [illegible] यः ३. चमत्कारो
([illegible])

ज्ञानप्रधान्यात = [illegible] क्रियाभागस्य = [illegible]

अप्रकन्ता विश्रान्ते [illegible] सर्व = [illegible]

सदाशिवदशा = [illegible]

शिव = [illegible] मन्त्रमेश्वर : प्रमातारः तिष्ठन्ति = [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

तथा = [illegible] अपितु = [illegible] "अहमिदम"

[illegible] अभेदेन = [illegible]

अहन्ता और इदन्ता में [illegible]

[illegible] समधृत तुलापुटन्याय = [illegible]

[illegible]

यः ३. स्वात्म चमत्कारः = [illegible]

स एषा = [illegible] तस्य = [illegible]

ईश्वरवस्था = [illegible]

14

स्फुरति = [illegible] प्रमातारः = [illegible]

मन्त्रेश्वराः = [illegible]

स्फुरति = [illegible] इदन्ताप्राधान्येन [illegible]

अहन्तागुणीकारेण [illegible]

[illegible] "अहम् अहम्" [illegible]

इदम् इदम् — [illegible]

इत्येवंरूपः = [illegible] 3. चमत्कारः = [illegible]

स्थायी — जात = [illegible] प्रकार उद्भूगुली निर्देश

बालस्येव

([illegible]) = [illegible]

एतदेव = [illegible] बोधसारत्वात = [illegible]

भगवत = [illegible]

प्रबुद्धविश्वात्मत्वम् = [illegible]

पत्र = [illegible] विश्वस्फुरणेन सह = [illegible]

सप्रकाश्यवस्तु = [illegible] तु [illegible]

मन्त्राणाम् = [illegible] वाचकतया = [illegible]

([illegible])

(14)

(146)
43

43

[illegible]

सप्तकोट्य = [illegible] मन्त्रराट् = [illegible]

वाचकतया = [illegible] प्रनुग्रहस्वभावह [illegible]

पद्मन = [illegible] = [illegible]

वाच्यान = [illegible]

मन्त्रमहेश्वर - मन्त्रेश्वरान् - [illegible] =

प्रति प्रवर्तिष्यन्ति

विख्यातत्वे = [illegible] विद्येश्वर प्रभावनाम्

- [illegible] - [illegible]

बोधरूपत्वा = [illegible] या = 3

प्रविष्टा [illegible]

भेप्रथा = [illegible] सा = [illegible]

मायोपाधिकृतत्व = [illegible]

इति प्रागमेषु = [illegible] اسی

गीयते - [illegible]

मायोपरि महामाया = [illegible]

اگر یہاں [illegible]

43 ([illegible]) ... [illegible]

43 इति = اس طرح   येने = جس سے   तत्रस्था = اس میں رہنے والا

मन्त्रा = منتر   महामाया प्रत्नु प्रविष्णात = مہا مایا میں داخل ہونے [illegible]

[illegible] } प्रणवः = جو ... [illegible]   इति उदयन्त = اس طرح پیدا ہوتے ہیں [illegible]

मायातत्त्वोपरि = مایا تتو سے اوپر   शुद्धविद्याधश्च = شدھ ودیا سے نیچے ([illegible]) [illegible]

[illegible] विज्ञानकला = وگیان کلا   प्रमातारः = پرماتا

[illegible]   प्रारब्ध मलभाजनः = [illegible] } [illegible]

एवम् एकमेव इदं शिवरूपं → اس طرح ایک ہی یہ [illegible]

तुर्यातीतमपि → = تریا سے اتیت بھی [illegible]

[illegible] } तुर्यरूपतया = تریہ روپ سے [illegible] } [illegible]

→ तत्त्वपञ्चतया = پانچ تتو [illegible]

([illegible]) — [illegible]   गीयते = گایا جاتا ہے

([illegible])

(14)

(148)
43

(43) तस्मात् = اس لئے   एक = ایک

एष = یہ   स्वतन्त्र = خود مختار   कर्ता = کرتا

प्रकाशेत = ظاہر کرے   यस्य = جس کا

"प्रकाशमिदम्" = یہ پرکاش   इति = ایسا

सदाशिवेश्वरभूमौ = سداشو اور ایشور بھومی میں   यः = جو

[illegible] प्रकाशः = پرکاش ہے   एतदेव = یہی

शुद्धवेदनरूपे = [illegible]

करणे = [illegible] ے

वक्ष्यमाणे = آگے کہے جانے والے

मायातत्त्वादि धरान्त = [illegible]   तत्त्वसमूह

कथितम् = کہا گیا   इत्येव = ایسا ہی

कर्तृ = کرتا   करण = [illegible]

क्रियारूप = [illegible]

[illegible] एक स्वर = [illegible] / स्वात्म महेश्वर स्वयं: [illegible]

[illegible] परप्रमाता = पर [illegible]

([illegible])

विजृम्भित = [illegible] ([illegible])

(150)

44/ (15)

परमं = 2 यत् = 3. स्वातन्त्र्य = [illegible]

दुर्घट संपादनं = [illegible] संपादि = بنانا - کو ازنا

[illegible]

كہا = मदेः प्रास्य = [illegible]

ہے یہی देवी माया शक्तिः = [illegible]

ہے یہی स्वात्मवारसा = [illegible] - [illegible]

शिवस्यैतत् = [illegible]

[illegible]

[illegible]

"परमम" → अनन्यापेक्षं = [illegible] यत् = 3

N.B. [illegible] परमाशिवास्तु = [illegible] स्वातन्त्र्यं → [illegible]

विश्वनिर्मातृत्व = [illegible] सैव = [illegible]

इयं = یہ मायाख्या शक्ति [illegible]

[illegible] तस्य = [illegible] शक्तिमतः = [illegible]

[illegible] → मीयते (ناپا جاتا) → परिच्छिद्यते (حد بندیا جاتا) = اندازہ کرنا

धरान्त : = [illegible]

प्रमातृ प्रमेय प्रपञ्चो = [illegible] Cause & effect

यया = جس سے [illegible] सा = وہ (ह) माया = مایا

विश्वमोहकतया → [illegible] वा = یا माया

एषा = یہ देवस्य → دیو کی → क्रीडाशीलस्य

क्रीडाशीलस्य = کرینڈا شیل کی ([illegible]) संबन्धिनी = [illegible]

इति कृत्वा = [illegible]

"देवी" — دیوی [illegible] → کرینڈا شیل [illegible]

न पुत्र : = نہ پتر ब्रह्मवादिनामिव = [illegible]

व्यतिरिक्ता = [illegible] काचित् = کوئی

माया = مایا उपपद्यते = [illegible]

[illegible]

[illegible]

45 कीदृशं = کیسا   तत् = स्वातन्त्र्य = خود مختاری

'दुर्घटसंपादनम्' इति → दुःखेन = مشکل سے

घटयितुं = بنانا   प्राकट्यम् = ظاہر ہونا

- [illegible] - [illegible] - [illegible]

مشکل سے بنانا ہے → 'दुर्घटस्य' = مشکل سے

कार्यस्य = = کام کا (جو مشکل سے بنے) - کام کا ہے

प्रमातृ प्रमेयरूपस्य = جاننا اور جاننے والے کا اور جو کچھ جانا | اس کا ہے | [illegible]

Cause/effect "संपादने" = بنانے میں   प्राप्ति प्राप्यकम् = (اس کی پہنچ کو پہنچنا - [illegible])

"एषैव = یہ   माया = [illegible]

स्वेच्छया = اپنی مرضی   पशुभावम् = [illegible]

'शिवस्य स्वात्म' = [illegible]   'आपन्नस्य' स्वात्मावरणं = اپنا [illegible]

→ स्वस्वरूपगोपनारूपम् → [illegible]

स्व [illegible]

153

آنو مایا - کارن مل

من مل

प्राणादि मलत्रितयम् = پرانو آدی تین مل ہیں

(کا سروپ آنو ہی تین مل ہیں)

वक्ष्यमाणे च = آگے جو بتلائیں گے — प्राधानिके = پرادھانک

सुखादिरूपे = سکھ - دکھ - موہ روپ — भिन्ने = بھن

भोग्ये = بھوگ — यत = 3 भोक्तृरूपे = بھوکتا روپ

3. पुंस्तत्वं = پرش تتو

तत्स्वरूपम् = اس سروپ — प्राह = کہا ہے

(16) माया परिग्रहवशात् = مایا کے گرہن کرنے سے

बोधा = — मलिन = — पुमान् =

पशुर्भवति = پشو ہو جاتا ہے

काल - कला - नियति वशात् =

राग - अविद्या - वशेन = — راگ لعد —

संबद्ध = — [ ]

"माया" → स्वीकार = [illegible] पारतन्त्र = [illegible]

[illegible] सर्वज्ञत्व-सर्वेकितत्व मयाऽपि बोधः = [illegible]

सर्वज्ञत्वादिगुणा अपहृतस्तेन = [illegible]

([illegible])

[illegible] प्रत्याहाररूपम् =
[illegible]
[illegible] } प्रत्याहार मतलब [illegible]

[illegible] [illegible] प्रपन्नः = [illegible] –
([illegible])

येन = [illegible] घटाकाशवत् = [illegible]

पूर्णस्वरूपात् = [illegible] → चिदाकाश

एवं च ऐश्वर्य = [illegible] – [illegible] [illegible] =

परिमितीकृता = सन = [illegible]

[illegible] – [illegible] – [illegible]

तदेव = اسی ہی - وہی   पुंस्तत्त्वम् = پرش توت کے تئیں -

उद्यते = اٹھایا

प्रेतो मायाया = [illegible]   पाल्य = [illegible]

पाद्यश्च = [illegible] - इति = یہ

"पशु" → پشو

प्राग्‌व - मायीय - कार्म मल स्वभावानां [illegible]

पाशानां = رسیوں (کی)   भोजनम् = [illegible]

प्रत्यक्ष = [illegible]   'काल कला' = [illegible]   इति = [illegible]

वक्ष्यमाणस्वरूपैः = [illegible]

कालादिभि = [illegible]   प्रोतप्रोत तया = [illegible]

स्मयक = [illegible]   'नद्धा' → इब्धः = [illegible]

इत्येने = [illegible]   तत्त्वषट्कवेष्टित = [illegible]

वेष्टित = [illegible] - [illegible] یہ   पुंस्तत्त्वम् = [illegible]

(مالک) امیرا
بڑی (۷) ...

कालादीनां = کالادی کا   तत्त्वानां = تو

एतत् = یہ   वेष्टनक्रमेण = لپیٹ کر

جو یہ مرتبے لپٹتا ہے - وہ اب سکڑتا ہے -

पुनैव = اسی وقت / ابھی } किंचित् = کچھ

यस्मैव = جس کو   सर्वात्मनैव = سب روپ سے

سب روپوں سے - ہر روپ سے

जानामि = جانتا ہوں

मायासहितं = مایا سمیت   कञ्चुकषट्कम = چھ کنچک

مایا سمیت چھ کنچک

प्रसंगे = اس جگہ   इदम् = یہ

अन्तरङ्गम = اندرونی / آدرونی   इदम् = یہ   उत्तमं = اعلیٰ ہے

اس کو

اندرونی اوپر - جس پر کوئی ... - آدرونی

پیشِ نظر اس کو اندرونی آدرونی ہے -

... اس کو

... کا کام -

اس طرح — इत्थं = اس طرح ، स्वतन्त्रोऽपि = خود مختار ہوتے ہوئے بھی (آزاد) ہوتے

स्वमायया = اپنی (انیتی) مایا سے — यथा = جیسے

اپنی مایا سے ہی اس چھوٹے پن کو — अपूर्णत्वं = اس چھوٹے پن کو — प्राप्तः = پہنچا

(مایا سے پورن کھنڈ کا بن گیا - سنکوچ میں آگیا - تو آدمی بن گیا -)

तथैव = ویسے ہی — तदीय = اس کی

اپنی گیان کریا شکتی — ज्ञान-क्रियाशक्ती = گیان اور کریا کی شکتیاں — جس سے وہ سروگیہ - سروکرتا تھا

संकुचित = وہ بھی سنکوچ میں آگئیں - — रूपस्य = اس کی

पशुरूपस्य = پشو روپ کو - اسی

اس پشو روپ کا چھوٹی سی طاقتیں سنکوچ میں آگئیں -

ان شکتیوں کو نام بھی بدل گئے - — विद्या-कले → ودیا اور کلا شکتی → کیونکہ وہ سروگیہ - سروکرتا بھی سنکوچ میں آگئی

यथा = جیسے — राज्ञा = راجہ نے

جیسے کسی راجہ نے کسی کا سارا دھن چھین کر اسے کچھ دیا — अपहृतसर्वस्वस्य = چھینا ہوا [illegible] — सर्वस्वस्य = سارا دھن، پونجی کو

اس کو [illegible] گزارے کے لئے کچھ دیا -

अनुकम्पया = دیا سے — जीवनार्थं = گزارے کے لئے

[illegible]

47/ किंचित = [illegible]   धन = [illegible]   स्तोक = [illegible]
क्षीयते = [illegible]

तथैव = [illegible]   प्रभुत्वम = [illegible]

बोधस्य = [illegible]   प्रापकस्य = [illegible]
अपहृत [illegible]

सर्वेश्वरत्वादि = [illegible]   किंचित = [illegible]

[illegible] कृतार्थतापरमार्थ = [illegible]   ज्ञातव्य = [illegible]

[illegible] उपादीयते = [illegible]   इति = [illegible]

[illegible] ज्ञत्वस्यैव = [illegible]   प्राधान्यात = [illegible]

कालादीना = [illegible]

ज्ञानातिना = [illegible]   अन्वया = [illegible]

दीप्यते = [illegible]

([illegible])

"इदं कुचुकषट्कम" [illegible]

उक्तरूपया मायया = [illegible]

"परास:" = [illegible] → आरोमल आपहस्तित सर्वे ज्ञात्वादि

→ [illegible]

[illegible] पर्स:

स्वरूपादिकम = [illegible]

[illegible]

[illegible] स्वर्गस्य = [illegible] कालिकेव = [illegible]

[illegible] → पुन्तरत्तु = [illegible] → नित्रं = [illegible]

कथितम = [illegible]

किंरूपम ? [illegible]

"एधुना" इत्यादि → [illegible] 3

"एधुंनैव जानामि" → स प्रश्नः = [illegible]

47 वर्तमानतया = جو اس وقت موجود ہے
درمیان میں سے

इदं प्राक् = پہلے - اور یہ وقت ۔ मया = میں نے

یہ جانتا ہوں - وہ جانا ہے - (ابھی) یا جانوں گا - (آئندہ)

ज्ञातं = جانا ہے (یعنی دریافت کیا تھا گیا ہوں) three tenses

जानामि = جانتا ہوں ज्ञास्यामि = جانوں گا

इति एवमपि कृतं = ایسا ہی کیا ہے

ابھی یہ کرتا ہوں - وہ کروں گا - وہ کیا تھا ایسا گیا

करोमि = کرتا ہوں करिष्ये = کروں گا

इति — ایسا ۔ ज्ञानक्रियास्वरूपेण = یعنی جاننا کرنا کا صورت سے (یہ جو)
یعنی جاننا کرنا کیا گیا ہو

भावनापि = اور بھی خیال کو
بیداری کو

ایسا سوچتا ہوا ہے -

तथा कलयन् = ایسا سوچتا ۔ प्रवाहक्रमात् = ان باتوں کو - بہاؤ کے

یہ اس کو کال کہتے ہیں -

इत्येषो = یہ ایسا ہے
اسی

कालः = کال (وقت)
(کال کا گیا تاکہ ہے)

تھوڑا سا / तथा = تھوڑا سا (किंचित्सदेव) کچھ ہو تو / इति = ایسا

محدود ہونا - / प्रविच्छिन्नमेव = جدا کیا / करोति = کرتا ہے (کرے)

Limitation - محدود - حد بندی ہوا

کلا → محدود کرنا

سب کچھ / सर्वं कर्तुं न क्षमम् = سب کچھ کرنے کی
سمرتھ نہیں ہے -

धरमात्रकरस्याम् (ساری) = صرف تھوڑا سا کرنے والا ~~تھوڑا سا~~ / प्रभवति = سمرتھ ہوتا ہے -

دوسرے کے لیے / न परार्थे = کسی دوسرے کے لیے نہیں

इति = ایسا ہی / एतत् = یہ

कस्य कस्यां = اس کی / कलातत्त्वम् = کلا تت
(کلا تتو)

"इदमेव" इति → یہی ہے / नियतात् = مقرر،

कार्यत्वात् = کام کا ہونا، مقرر / नियतं कार्य = مقرر کام

جو کیا جائے / यत् क्रियेत = جو کیا جاتا ہے / کام جو مقرر ہے

اسی طرح [illegible] [illegible] ہے

यथा वह्नेरेव धूमः = جیسے آگ ہی سے دھواں ہے — (صرف یہی ہے)

[illegible] — یہ نہیں ہے

جیسے اشومیدھ آدی یگیہ [illegible] [illegible] اور سب [illegible] [illegible] ہیں

अश्वमेधादिकर्मणा = اشومیدھ وغیرہ کرم سے — स्वर्गादिफलम् = (سورگ وغیرہ کا پھل)

न सर्वस्मात् = نہ سب سے [illegible] ملتا ہے (بلکہ [illegible] ملتا ہے)

इत्येवं नियमेन = "اسی طرح کے نیم سے" یعنی [illegible]

स्वसंकल्पकृत = اپنے ارادے سے بنایا ہوا — कृत = بنایا ہوا

कर्मप्रबन्ध = کرم کا سلسلہ / [illegible] — [illegible] = اس سے پیدا ہوئے

पुण्यापुण्ये = پن اور پاپ — आत्मा = آتما (یہ اپنا آپ)

नियमयति येन = "جس سے وہ باندھا جاتا ہے" — [illegible]

ان کاموں سے اپنے آپ کو پابند کرتا ہے — یعنی اس طرح کے سورگ میں جانے کا اور اس طرح کے نرک میں — پھر ان کاموں سے وہ بندھ کر [illegible] بدلے میں اور جنم مرن میں آتا جاتا ہے)

ततस्तस्य नियति तत्त्वम् = [illegible] → [illegible] तथा = [illegible]

"सर्वात्मना" इति [illegible] या = इ. इदम् =

[illegible] | अपूर्णम्मन्यता = [illegible] (अपने आप को) सर्व = [illegible] ([illegible])

मम = [illegible] इदम् = [illegible] उपयुज्यते = [illegible]

[([illegible]) ([illegible])]

भूयांसं = [illegible] मा = [illegible] कस्यचित् = [illegible]

([illegible]) ([illegible])

न भूवन = [illegible] इत्येतत् = [illegible]

([illegible])

= [illegible] पशोः [illegible] रागतत्त्वम् = [illegible]

[illegible] बुद्धिधर्मो यो रागः = [illegible] स = [illegible] एकत्र = [illegible]

[illegible]

[illegible] It is only one parent : कुत्रापि = [illegible] कान्तालक्षणस्यार्थे = [illegible]

([illegible])

[illegible] | अपेयात् = [illegible] अपायाद्धे = [illegible]

"अपैतु मे रागः" [illegible] इति = [illegible]

[illegible]

(164)

درمیانی درجہ کا راگ کسی حصہ میں ہی ہوتا ہے۔ یہ راگ تھوڑے میں ہے

48/49 प्रभिषङ्ग मात्रे = ڈھکا ہوا ماتر (ڈھکے ہوئے کسی شئے کی)

یہ راگ اسی راگ کے برابر نہیں جہاں برابر حصہ کی ڈھکا رہتا ہے

न सर्वीकाङ्क्षामयस्य = یہ نہیں ہے سارے کی جو ڈھکا ہے
اس سے راگ ہوتا ہے
برابر نہیں ہے۔
یہاں تو کسی ایک حصہ پر راگ کرتا ہے۔

ادنیٰ کا راگ تھوڑا ہے

तथा = ایسے ہی "जानाति" جانتا ہوں →

इति इस किंचिद = کچھ بھی

اور اسی طرح میں درمیانی ہے۔ ... سامنے ہو (حرف) ...

परोवर्ति = جو سامنے ہو - جو سامنے آیا ہو   यदादिकं = وغیرہ
{(جو نظر میں ہو - سامنے ہو (حرف))}

न पुनर = نہیں تو   दूरं व्यवहिते वस्तु = دور اور ڈھکا ہوا

سر دیکھا - دیا ہوا نہیں تھا

वस्तु = چیز (وہ نہیں جانتا تھا)

इति विख्यातत्वम = یہی ہے دیا ہوا ہے

प्रबुद्धविद्यापेक्षया = شروع میں ... (سمجھ)

कारिकायाम = اس کاریکا میں جو لفظ 'प्रविद्या'
اور دیا ہوا ہے

कथितम = کہا گیا

49/ इति न पुनर् [illegible] वेदनाभावात् = [illegible]

{ اور مطلب یہ جاننا نہیں ہے۔ [illegible] ابتک نہیں ہے کہ یہاں مانا نہیں
الٹا نہیں ہے۔ [illegible] }

"माया सहितं" = [illegible] भेदप्रथा = [illegible]

उत्तम = [illegible]

सतत = [illegible] कञ्चुकषट्कं = [illegible] पशुता = [illegible]

+ ([illegible]) [illegible]

---

१७ कथं = کس طرح एतस्य (कुचकाक्षटकस्य) = اس کم بخت کا

कृपणं प्रति = بیچارہ پر अन्तकद्रुम = انت رنگ دالا

[illegible] طرح ہے اس بیچارہ -

اس طرح ہے :—

(18) कुल्बकामिव = کی طرح برس (اخری کو) Rice ← Lowest cover of

तुराउलकरण = چاول تاثر -(چاول فول)

विनिविष्टे = [illegible] भिन्नापि = [illegible]

प्रमिया = [illegible] - [illegible]

اس طرح - [illegible] भजते = [illegible]

तत्र = [illegible] - [illegible]

विप्लुष्टि [illegible] — [illegible]

کہ → शिवमार्गैकस्य योगेन = [illegible]

اس [illegible] - اس [illegible]

[illegible]

वास्तव वृत्त = اصل حالات کو دیکھو ۔

49 वास्तव = اصلی - वृत्तेन = حالت → دراصل

"भिन्नमऽपि कञ्चुकं" چھلکا بھی الگ ہونے پر अभिन्दा (तया) = چاول نہیں الگ (اس کے ساتھ ملا ہوا)

" प्रभिन्दा तण्डुकण विनिष्ठमें - چاول کی صورت میں پھیلا ہے इति

प्रभेदेन = الگ ہونے سے तण्डुलान्तश्च = چاول میں

उत = اور [illegible] भासेत = ظاہر ہو

निपुणैरपि = ماہروں سے بھی यत्नत = کوشش سے

प्रक्षिप्यमाण = ڈالا ہوا - دیکھا جاتا ہے

तण्डुलस्य = چاول کا अन्तरङ्गत्वात = اندرونی ہونے سے ۔

~~कञ्चुकस्य~~ (पृथक) न अवतिष्ठत = الگ نہیں رہتا

तथा = ویسا ۔ एतत = یہ → یہی मादिकुञ्चुकम = چھلکا

प्राणा: = جان → तण्डुलस्थानी (यस्य) = چاول کی جگہ

अन्तरङ्गत्वात = اندرونی ہونے سے (چاول جیسے)

कञ्चुकस्थानीयम = چھلکے کی جگہ → (چاول)

व्यतिरिक्तमपि = الگ ہو کر بھی अव्यतिरिक्त (तया) = ملا ہوا

50/

اس میں — पूर्णा संवित्स्वरूपम् = پورے شعور کی — [illegible]

شک کا پیدا ہونا } प्रादुश्चि = پیدا ہوئی   स्थितम् = ہے (یہ شک)

(اس طرح پورا شعور ہی اس جگہ شک کے اندر پیدا ہوا ہے).

इति घोष: = اسی طرح باقی

एवमपि = اس طرح بھی   दुर्निवार = مشکل ہے

یہ شک دور کرنا مشکل ہے کیسے دور ہو سکتا ہے؟

कथं = کیونکر   तत् = وہی شک

विलीयते = لیے ہو جائیگا — ختم ہو جائیگا   کیسے دور ہو سکتا ہے؟

इत्यादि = وغیرہ وغیرہ

"अत्र ते" وغیرہ → "तु:" → विशेष =

اس شک کا کوئی علاج نہیں ہے۔

न = نہیں ہے   अन्य: = دوسری   خصوصیت ہونے پر

अपि = اس پر → شک دور کرنے   उपाय: = اپائے ہے

اس جگہ "तु" ہے — اس لیے شک میں اس کا کوئی علاج نہیں }

"प्राक्तस्य" → स्वात्ममहेश्वरस्य = سوائے اپنے ... (آتما)

यो = جو   असौ = وہ

وہ "मार्गः" "راستہ" (تو مارگ ہے) → "परम-अद्वय-चिदानन्द-एकघनो ऽस्ति

پرم جو ادوے ہے - جو شنکر پرکاش ہو رہا ہے - اس سے بنے میں میں ہوں

मम एव = میرا ہی ہے   इदं = یہ سارا دکھائی دیتا ہے

(اپنی ہی شکتی کو اپنی وکاس کو) ہوں   स्व शक्ति विजृम्भण मात्रम् = اپنی ہی شکتی کا وکاس مات، ہوتا ہے

{اپنی اپنی شکتی کا وکاس سو ہوا - گرنا یعنی اپنی شکتی کا وکاس ہونا ہوں}

इति = ایسا   या = جو ہے

स्वात्मस्वरूपविभूति ⟶ ہے جو وبھوتی - اپنے ہی سوروپ کی سوامی سروپ =

सा प्रत्यवमर्शरूपा = پرامرش روپ ہے [یعنی یہی پرامرش]

By adopting this road. सरणि = راستہ مार्गः ‌ – وہ راستہ ہے جو پرامرش کرنا – ‌ وہی پرامرش

"तदभिमुखत्वं" اس کی طرف منہ کرنا → ध्यान = Concentration اس پر دھیان رہنا

تت = اُسی کا   निभालनपरत्वं = اُسی کا منن کرنا – وہی پرامرش کرنا

وہ راستہ - स एव योगः = وہی یوگ ہے → योगः →

पूर्णरूपतया = پورن روپ سے   परमः = پرم ہے

By himself स्वात्मनि = اپنے ہی سروپ میں   स्वस्वरूपत्वेन = اپنے سروپ کے طور پر

संबन्धः = اپنا اپنا ہی یوگ ہے یعنی یہ سمبندھ ہے   واحد کیا ہے

तेन = [illegible] - [illegible]

तत = [illegible] उक्तस्वरूपम् = [illegible]

कुञ्चकम् = [illegible] विशेषेण = [illegible]

[illegible] प्रवृद्धिं भवति " [illegible] - [illegible]

[illegible] स्वयमेव = آپ ہی विशेषेण = [illegible]

[illegible] विलयं सेवेत = [illegible] - [illegible]

एतत = یہ उक्तं = کہا स्यात = ہو

[illegible] यदा = جب परमेश्वरप्राप्तिपात = [illegible]

= [illegible] विशुद्धहृदय = [illegible]

پس पशु = [illegible] भवति = [illegible]

[illegible] तदा = تب "प्रहमेव महेश्वरः" [illegible]

इति = [illegible] स्वात्मज्ञान = [illegible] - [illegible]

प्राविर्भावात = [illegible] [illegible]

جو کچھ کوئی نے اسکو آبجھا کو نہیں پایا

स्वयमेव = آپ ہی   पपुंस्त्वापादकं = [illegible]

कुञ्चिकावरणं = کنجی اور   विलीयते = جو دب جاتا ہے / گم ہو جاتا ہے —

न तु ... = پر   तत्र = اس بات پر

स्वात्मज्ञाने विहाय = سوائے گیان کے ... الٹا نہ کرے —

मायीयं = مایا والا ... مایا کا پایا ہوا ہے — بے ہودہ   किंचित = کچھ   निपात प्राप्ति समुच्चय (جو کہ نہیں پایا جاتا)

कर्मि = کرمی - کرنا (وہ)   جو بھی شخص ... اس میں جا ملے

نہیں وہ کرم اس مایا کو دور کرنے میں ہیں

प्रगल्भते = سمجھتا ہے   وہ مایا کو وہ اور اس سے نہیں سکتا ہے - یہ صرف سوائے گیان ہی ہے - جو اس کو اڑا سکتا ہے۔

الٹا نہ کرے کہ یہ سوائے جاننا چھوڑ دے کیونکہ نیشی سے اٹھے ہوئے (بنے ہوئے) کرم ہی ہیں۔ اُن کے کرنے سے یہ مایا سے ٹھیک طور نہیں ہو سکتا ہے۔

19/51

(19) एवंविधस्य = اس قسم کے [illegible] प्रयोगः = [illegible]

मोक्षसुखं = [illegible] भोग्येन = بھوگنے سے [illegible] माध्यमं = [illegible]

इति = [illegible] प्राधानिके = [illegible] پرکرتی

तत्त्वसर्गम = [illegible] سرشٹی आह = کہتا ہے

सुख-दुःख-मोहमात्रं = سکھ دکھ اور موہ ماتر

निश्चय = ارادہ ([illegible]) संकल्प = [illegible]

अभिमानाद् = [illegible]

प्रकृति = پرکرتی ([illegible]) अपथ = [illegible]

अन्तःकरणं = اندرونی → [illegible] मनोऽहङ्कृति =

[illegible]

51

सत्व-रजस-तम - सां यत = ستوگن - رجوگن - اور تموگن کا   यत = جو   सां = سامیہ جو یعنی -

"सुख-दुख-मोहात्मकं" = یعنی سکھ - دکھ - اور موہ   सामान्यं रूपं = سمانیہ روپ - ایک جیسی برابری

अग्राह्यभावो यत्र न उपलभ्यते = جہاں انت یعنی کمی نہ پایا جاتا ہے - ایک ہی سا ہے -

सां = ० मूल कारण = مول کارن = پرکرتی ہے →

प्रकृते अनन्तर = پرکرتی کے بعد   कार्य रूपं = پرکرتی سے کارج بننے والا
پیدا ہوا ہے انتہ کرن

अन्तः करणं = انتہ کرن یعنی   الگ الگ - دیکھو - पृथक = الگ الگ

یعنی جو ٹھیک ہے - وہ ہے "निश्चय" इत्यादि → निश्चय → इदं एतादृक
(انسکر پر) - یہ الگ ہے - وہ ہے → ←

"संकल्पने" = سنکلپ وہ ہے → मननम् = منن (یعنی)

"अभिमानो" → ममता → ممتا   इति
اس طرح

अभेरणं = اس طرح " बुद्धि:, मनो, अहंकार "
بدھی - من اور اہنکار کا ہم کرتے ہیں -

एवं-रूपं त्रितयम = یہ تین طرح انتہ کرن ہے
"अन्तःकरणम्"

19 51/52

अङ्गाङ्गिभावेन = [illegible] गुण = [illegible]

गुणानां कार्यं [illegible]

[illegible] भूतक्रियापेक्षया = [illegible]

वै = [illegible] कारणम् = [illegible]

[illegible]

बाह्यकरणानि प्राह [illegible]

[illegible]

(20) श्रोत्रं = (کان سے) त्वचा = [illegible] चक्षुः = [illegible]

रसना = زبان (Taste) घ्राणं = ناک [illegible] बुद्धीन्द्रियाणि =

[illegible] प्राणदायी = [illegible]

वाक् = [illegible] पाणि = ہاتھ पाद = پیر

पायु = [illegible] उपस्थ = [illegible]

= [illegible] पञ्च = [illegible]

53. वक्ष्यमाणे = "آئندہ" کہے جاویں گے   "श्रोत्रादौ" = کان آدی سے

विषये = چیزوں میں   ज्ञानप्रधानानि = گیان پردھان

श्रोत्रादीनि = سننا، دیکھنا، سونگھنا   یہ پانچ گیان پردھان ہیں
- یہ گیان اندریاں ہیں۔

क्रियाप्रधाना = کریا پردھان   च = بھی   इन्द्रियाणि پانچ [illegible]
पाँच

"वागादीनी" = واک آدی بھی ہیں   वागादीनि

بولنا وچن   वचनादान   لینا   = प्रदान = دینا

[illegible]   विहरण = چلنا   विसर्ग = چھوڑنا
= خارج کرنا

आनन्द = آنند ([illegible])   कर्मेन्द्रियाणां विषया: = یہ کرم اندریوں کے
وشے ہیں

इति उभयथा = دونوں طرح سے۔

[illegible]   "शृणोमि" = سنتا ہوں   "कथयामि" = کہتا ہوں   इति =
[illegible]

अहङ्कारानुगमात् = اہنکار کے [illegible] سے۔ [illegible]

अहंकारकार्याणि = [illegible]

[illegible]

یہ شبد آدی کرم جو ... ہیں انکا ... ہے۔

52/53. एषो शब्दादि विषयस्वरूपं = ان کا سبد آدی روپ وشے
कथ्यते ... وہ ... ہے

(21) एषां = ان کا (سبد وغیرہ) ग्राह्या = گرہن کرنے کے قابل विषय = وشے

सूक्ष्मः = (بہت) سوکشم (تو) प्रविभाग = وبھاگ رہت
(ان میں کوئی تقسیم نہیں)

यः स्यात = جو ہے ...

तन्मात्र पञ्चकं = پانچ تن ماترا ... तत् = اور وہ ...

शब्द, स्पर्श = سبد - ... - روپ - رس - گندھ
रूप, रस, गन्धः

ज्ञेय कार्यतया = جاننے کا ... स्वीकार्यो = ...

यः = جو एषाम = ان کا

इन्द्रियाणां = اندریوں کا "विषयो" → गोचर = وشے

स्यात = ہے - स=वो कीदृशः = کیسا ہے

... प्रविभागवर्जितः = وبھاگ سے ... → विशेषेण = خصوصیت - خاص

... बहिष्कृत = ... सामान्यात्मा = سمان روپ

... सूक्ष्मो = سوکشم योऽस्यौ = جو یہ ...

... भवेत = ہے ...

53/

21// तद्भव शब्द = یعنی ہوتا ہے شبد اوکی सामान्य ~~सामान्य~~ = سامانیہ

→ शब्द तन्मात्रा = شبد ہیں ماتر | شبد ہی ہے اور کچھ نہیں
یعنی کان کا گوچر صرف یعنی شبد
وہی ہے
= اسی کو
श्रोत्र

श्रवण प्रत्यादि = اسی طرح اور دل کا وشے جاننے
چاہئیں - یعنی زبان کا ناک کا وغیرہ جاننا چاہئے۔

وشے اور وشئی کو گرہن کرنا

विषय-विषयित्वा = وشے اور وشئی
{ دیکھنے والا اور
دیکھنے والی چیز }

परस्परापेक्षात्वात् = آپس میں परस्पर
= ایک دوسرے کی اپیکشا سے ان کی - یعنی کان سے ہی شبد سنے جاتے ہیں - اور شبد کے لئے شبد ہی ہوتا
جاننے کے لئے اور کچھ نہیں

इन्द्रियवत् = اندریوں کی طرح इदमादि = اسی طرح سے

کان کی اپیکشا سے شبد وہ ساتھ ہی ہے

तन्मात्र पञ्चकम् = یہ پانچوں ماتر سمجھ

پانچوں ماتر یعنی اہنکار ہی کا ہیں -
आहङ्कारिकमेव = یہ سب اہنکار کا ہی مانا ہے -
یعنی یہ اہنکار سے ہی نکلے ہیں ۔

———o———

53/

(12) विषयाणां = ولی ویژیوں کا (objects) परस्परसांकर्य = آپس میں ملنے سے

पृथिव्यादि = پرتھوی آدی (5 مہا بھوت) कथम् = کس طرح ہیں ؟ इत्याह = دکھاتے ہیں

एतत् = یہ ولیژیوں (objects) = संसर्गवशात् = ایک دوسرے سے مل جانے سے

تقول ہی بار بار

स्थूला = موٹے ہو کر विषय = ولیژے

भूतपञ्चकताम् = پانچ بھوت بن جاتے ہیں

प्रयाति = ہو جاتا ہے → नभः = آکاش

पवन = ہوا तेज = آگ सलिल = جل पृथ्वी च = پرتھوی بھی

एतेषां संसर्गवशात्" → परस्पर = آپس میں ایک دوسرے سے

संघर्ष = رگڑ کھانے سے सामर्थ्यात = اس سامرتھ سے

या = جو विशेष = خصوصیت (Resultant) स्थूलो विषयः"

स एव = وہی भूतरूपता याति = بھوت روپ ہو جاتے ہیں

तथाहि = وہی دکھاتے ہیں

शब्दतन्मात्रात् = شبد تنماترا سے शब्दविशेष = شبد وشیش

नभो = آکاش जायते = پیدا ہوتا ہے

शब्दस्पर्शाभ्यां = شبد اور سپرش سے ہوا पवनः = ہوا

५४ रूपसंयुक्ताभ्याम = روپ کے ساتھ ملے ہوئے ہیں (شبد اور سپرش)

४ तेजश्च = تیج بنا ہے   एताभ्यां = ان تینوں مل کر

एभ्यो = ان تینوں مل کر – شبد سپرش روپ   रसयुक्तेभ्यो

رس کو ملا ہے - رس کو

आप: = جل بنا ہے

गंधसंयुक्तेभ्यश्च पृथ्वी = گندھ کے ساتھ جو ہر ایک ملا ہوا تو پرتھوی
ان سب نے تو بنائی ہے

इति कृत्वा ~~एकोत्तर~~
गुणा पंच महाभूता = اس طرح 5 مہابھوت بن گئے

"कार्य कारणा(नि) अनुगुणानि" = کاریہ بنتا ہے کارن کے گنوں سے
مطلب کاریہ میں ہوں گے وہ سب
جو کارن میں ہوں گے –

کاریہ بنتا ہے کارن سے جو اس میں گن ہوتے ہیں تو یہ بھی میں ہوتے

یعنی یہ اسی طرح ہے کہ پہلے ایک ہی گن اور پھر دو گن تین ہوتے گئے وہ بھوت بنا - اسی طرح ان میں

इति कृत्वा = یہ کر کے   एको = ایک   उत्तर = ایک ایک آگے

उत्तरगुणानि = { ایک کے آگے دو ہوں، ساتھ ملے ہوئے، اور آگے اور گن ہوں، بنے ہیں – }

इति = اس طرح   एवम् = اسی طرح

एषा = یہ   प्रकृति: = ہے پرکرتی

कार्यकारणात्मा = کاریہ اور کارن روپ

पुरुषस्य = پرش کی   इच्छया = پرش کی اچھا سے

(۱) آتو = سروپ کی نہ جاتی - نہ بدلنے والی

(۲) جاپا ہو

(۳) کام — ناس ہو - پرکرتی میں - پرکرتی (یوکاتی)

54 भोग्यतया = بھوگنے کا ہونے प्रवृता = پرورتی میں آئی

پرش م کرنے کے لیے بھوگنے میں لگی ہے

इति = ऐसा बदात्रिप्रात्तत्वा = 36 ...
(मक)

जगत् - جگت विभज्य = تقسیم کرکے الگ الگ प्रीतत इव = پرکاش ہو کر

निरूपितम् = بیان کیا

माया कुंचकवत् = مایا کے کنچک کی طرح प्रकृते = پرکرتی نے ہی

कञ्चुकता = کنچک کا पुरुष = پرش کو

प्रीत = ... पाड = ...

پرکرتی ہی پرش کی سمجھ میں آئی - مایا کی طرح -

(23)

तुषइव = ... की तरह तण्डुलकाशा = چاول کی طرح

प्राबृणोत = ... آدرن کیا प्रकृति पूर्वकः सर्गः = پرکرتی پورو ک ... سرشٹی

पृथ्वी पर्य पृन्ता = پرتھوی تک पर्य = ...

चैतन्यं = ... चैतन्य ... देहभावेन = دیہہ بھاؤ سے

آدرن کرتی ہیں — کا ادرکرنا ...

...پرکرتی — سمجھ ...

23

"पुनरपि" [illegible] → प्राथमिकः = [illegible], संगी = [illegible]

धरापर्यन्तः = [illegible]

तुराडुलकणा [illegible] यथा = [illegible] "तुषा" = [illegible]

→ धान्यचर्म = [illegible] cover "समावृणुते" = [illegible] →

समाच्छादयति = [illegible], तथैव = [illegible]

मायाकञ्चुकेन = [illegible] 3. कञ्चुकस्थानीयेन [illegible]

समावृत = [illegible]

"चैतन्यं" = [illegible] पुनरपि = [illegible]

tradition [illegible]

→ तुषस्थानीयेन = [illegible] → "दृढभावेन" [illegible]

एतत = [illegible] समावृणुते = [illegible]

ततः = [illegible] प्रतिप्राकारतया = [illegible]

? स्थगयति = [illegible] पत्रं = [illegible]

इमे = [illegible] प्रमातारः = [illegible] →

[illegible] :—

23/ (182)

وسیع ہرہاتا - ہرہان - ثنو ضمیر یاتا -
٣ ٢ ١

55 कलाभि → [illegible] इन्द्रियमातृभिः

سیندریوں کی ماتراؤں سے

کلا میں شروں کلا ہے - اس طرح ناٹک میں کئی کلا ہیں -

विघ्नपा = خصوصیت سے ... प्रणतानि ... انسے ہوئے

दक्षस्वभावा = [illegible] सकला —— سکل ہرہاتا

इति उद्यन्ते = اس طرح ہیں

विघ्नपवर्जिता = جہاں ان سے ... بغیر ... विघ्नहा = وسیع کے بغیر

फलयाकला = [illegible] इति च = اسی طرح

एवं = प्रावादि = ... सकलान्तः = اس سکل تک

प्रमातृसप्तक * = ان سات ہرہاتا کی سوسٹ

सनाथ = اس ... (ان سات میں بھی ...)

रुद्रक्षेत्रज्ञाधि = [illegible] अधिष्ठितं = [illegible]

जगत = جگت

इति = اس طرح

[illegible]

55 कञ्चुकान्नत्यस्य = [illegible] पर-सूक्ष्म-स्थूल [illegible] =

रूपताम् = [illegible]

[illegible] - [illegible]

(24) परम = [illegible] (…), प्रावरण = [illegible] — मल = [illegible]

इह = [illegible] सूक्ष्म = [illegible] मायादि = [illegible]

कञ्चुके = [illegible] स्थूल = [illegible] →

बाह्यं = [illegible] ([illegible]) विग्रहरूप = [illegible]

कोशत्रयचैव = [illegible] वेष्टितो = [illegible] ह्या = [illegible]

प्रात्मा = [illegible]

चैतन्यस्य = [illegible] - [illegible] स्वस्वरूप = [illegible]

प्रपहस्तेन = [illegible] सतत्त्वा = [illegible]

→ प्रख्यात = [illegible] प्रावः मलः

→ [illegible]

[illegible] →

184

२५/

५६

→ आन्तरः = بالکل اندر کا → Innermost Layer.

स्वरूपस्य कालिकेव = جیسے سونے کی سیاہی کا رنگ "परम" (زیادہ)

आवरणं → छादनम् = Cover

तादात्म्येन = ایک ہی طرح اس طرح — स्थितत्वात् =

मायादि विद्यान्ते = مایا سے دوسرا ہوتا

कञ्चुकबद्ध = کنچک — सूक्ष्मम् = (سوکشم)

आत्मन आवरणम् = آتما کا پردہ

तण्डुलस्य कम्बुकामिव = جیسے چاول کا ...

पृष्ठपातित्वेन = ... आस्ते = ہے

येन = جس سے (اوپر) भेदमयी = بھید ...

ज्ञातृत्व-कर्तृत्वादि = ... प्रथा = (پرتھا)

24 - [illegible] ہوتا ہے - [illegible] ہوتا ہے - پرکٹ ہوتا ہے

56 प्रथेत = [illegible] इति = [illegible] [illegible]

मायीयो मल: = [illegible]

एतदपेक्षया = اس کی نسبت "बाह्य" - [illegible]

तुष स्थानीयं = [illegible] - प्राधानिकं = [illegible]

शारीरस्तत्तालक्षा याम = [illegible] { [illegible] }

कावरकं = [illegible] स्थूलो = [illegible]

[illegible] → त्वङ्-मांसादि रूपत्वात् = [illegible]

एष तृतीय: कार्मो मल: = [illegible]

येन = [illegible] प्रमाता = [illegible]

प्रामा प्राम = [illegible] कर्म = [illegible]

संचय = [illegible] भोजन = [illegible]

भवति = [illegible] → [illegible]

24/25

एवम = ایسے प्रनेन = اس، पर-सूक्ष्म-स्थूल = پر - سکشم - ستھول یعنی

"कोषत्रयवेष्टितो" " تین کوشوں میں ۔ रूपेया

वेष्टितो = لپٹا ہوا [illegible] विकस्वरोऽपि = اگرچہ [illegible]

घटाकाशवत् = گھٹاکاش کی طرح संकुचितीकृत: = سنکوچت سا ہے

کون ہے "आत्मा" → इति - पृथ्वी इति [illegible]

جب (اتما اس ...) سے [illegible] (آکاش ...) [illegible]

یعنی گھٹاکاش کی طرح ۔ گھٹ ختم ہونے سے آکاش آکاش ہی رہتا ہے ۔

(25) अज्ञान = اگیان 3. तिमिर = اندھیرا اس योग = [illegible]

एकमपि = ایک ہی स्व = اپنا स्वभावात्मा त्मानं =

آتما کو ... (سروپ کو ہے)

اس کو ग्राह्य-ग्राहकनानं گراہیہ - گراہک (یعنی ...)

वैचित्र्येण = اس نانا ... ہے [illegible]

अवबुध्यते = جانتا ہے (اپنے آپ کی)

(... جاتا ہے - حالانکہ یہ ایک ہی ہے - اس کی وجہ صرف یہی اگیان ... ہے).

[illegible] → एष कोशत्रयम् संबद्ध आत्मा = یہ تین کوشوں سے ... باندھا گیا ہے ہوا آتما

आत्मख्यातश्च = یہی آتما ...

اگیان م اندھکار سالم سمبندھ ہونے سے

یعنی جو اندھکار

57 अन्धकार संबन्धात् = اس کے سمبندھ سے

एकमपि = ایک ہی کو اگر ہے → अद्वयस्वभावमपि = نہ دوسرے سبھاؤ والا - صرف یہی بھاؤ والا (کوئی دوسرا نہیں)

"स्वे" → "जिने" = اپنا   न = نہ   अप्रत्ययात् = دوسرے سے نہیں ہوتی

جو اپنے کو ہی

उपनतम् = حاصل ہوا [یہ اس کو دور کا نہیں - اپنا ہی ہے]   یہ بھی →

ہی   "आत्मस्वभावं" آتم سبھاؤ کو   चैतन्यम् (چین (چین یعنی شعور) شعور ہے)

→ आत्मस्त्रालक्षणां स्वरूपं = آتم کی ستا جو ہے اپنی لکشن کی سروپ والی -

یعنی آتم سروپ کو اب یہ نانا روپ پرماتا - پرمان - پرمیہ کی رچنا سے دیکھا جاتا ہے -

प्रमातृ - प्रमाण - प्रमेय नाना रचना प्रपञ्चेन = اس آتم کو یہ پرماتا - پرمان - پرمیہ اس نانا پرکاری رچنا والی پرپنچ سے (اس الٹی ترتیب سے)

जनाति = جانتا ہے

یعنی ابھید کو اب بھید یعنی بھید سے یہ دیکھتا ہے

प्रभेदविपरीतेन = الٹا / ابھید → अभेदेन = یعنی بھید سے
برخلاف

प्रतिमन्यते = مانتا ہے (در اصل یہ نہیں ہے)   پرماتا - پرمان - پرمیہ بھی -

لیکن یہ الٹا ہے - بھید سے اب یہ جانتا ہے - کارن اسکا اگیان کو ہے -

جانتا ہے -

25/

51 इति यावत = [illegible]

यथा = [illegible]   रेखा तिमिर = [illegible]

उपहत: = [illegible]

पुरुष = [illegible]   एकमपि = [illegible] चन्द्र:

पश्यन = [illegible]

इमौ = " द्वौ चन्द्रविम्बौ नभसि " [illegible]

इति परिच्छिन्नदर्शनैः = [illegible]

लोकमपि = [illegible]   दर्शयति = [illegible]

" द्वौ चन्द्रविम्बौ पश्य " [illegible] इति = [illegible]

वस्तुवृत्तेन = [illegible]   एक एव असौ चन्द्रः = [illegible]

इति = [illegible]   तिमिरवशात् = [illegible]

तथा = [illegible]   भासते = [illegible]

دیکھ سکتی
بیمار تو ایسے کوئی نہیں یا آنند دیتے
آنند میں یا فراق میں کیا ہے -

51 ये = جو उत्वेग = تنگ آ گئے ہوئے लक्षणाम् لکشن ہوتے
वा = یا
आनन्दलक्षणा = (آنند یا) - یا آنند لکشن
پیدا ہونے والی دنیا
पृथक्क्रियां = الگ الگ کرنا

(یا تو روگ سے دو دکھتے ہیں یا آنند سے دو دکھتے ہیں - الگ الگ کرنا ہے)

स = وہ तैमिरिकः = تم سوشت प्राप्नोति =
[پیدا ہوتی ہے] پراپت کرتا ہے -
तथैव = اسی طرح
अज्ञानतिमिर = . اگیان تم سے प्राप्नोति = پراپت ہوتے
भेदपृथः = بیدا ہوتا ہے सर्वं = سب کچھ स्वाकमनो
اپنے دیکھتے ہے
अभिन्नमपि = دو نہیں بھی تھا भेदेन = بیدا سے
व्यवहरन् = اب دو دو کرتا ہے (جب گیا تاش نہ تھا)
ابنا भिन्नं = دو ہی कर्मफलम् کرم پھل पश्यति =
دیکھتا ہے -
यत्र = جہاں کہیں بھی ... भयो भूयः = بار بار
... - ڈھونڈتے ہے دو بار دو
स्वर्ग-निरयादि भोग = سورگ نرک وغیرہ
भाक् भवति = ان بھوگوں کا بھوگنے والا بنتا ہے

58/ अतश्च = اور اس لیے ; अज्ञानस्य तिमिरै = اگیان کے اندھیرے

रूपता = روپ ہو کر ; विपरीताभासनात् = الٹا دکھائی دینے سے

یہ دنیا ایک روپ میں ہوئی ہوئی — سب کچھ الٹا دکھائی دیتا ہے —

(26) आत्माद्वयं दृष्टान्तेन = آتما کو ادویہ ; دوسری مثال سے = دوسری مثال سے

निदर्शयति = دکھلاتا ہے

रस = رس (نیشکر کا رس) ; कारात = ~~صاف کر کے~~ راب

प्राकीरिका = شکر ; गुड = گڑ ; खण्डाद्या = کھانڈ آدی
اس کے علاوہ کھانڈ کے اور اقسام کی چیز

यथा इक्षुरस एव = یہ سب ایکھو رس ہی ہے
(یہ سب نیشکر رس ہی ہیں)

तत् वत् = اسی طرح

अवस्थाभेदा = اوستھا بھید میں ; सैव = سب

یہ سب ایک برہم ہی سمجھو کا ہے

یہ سب اوستھا ویکل اسی آتما رس کی ہیں —

"रसादय" = رس وغیرہ , इक्षुभेदा = نیشکر کی قسموں میں , यथा = جیسے

'एक' एव = ایک ہی ہے , इक्षुरसः = یہ نیشکر رس ہے

परमथितः = بحالی ہے , सर्वत्र = ہر ایک جگہ

ملٹھاس سب میں جاتی ہے ایک ہی ہے — माधुर्यात् = مٹھاس کا , अनुगमात् = پہنچنے سے

= Base ہے مٹھاس کی

तथैव = اسی طرح , जाग्रदादि = جاگرت آدی

"अवस्थाभेदा" = اوستھا بھید ? , ग्राह्य-ग्राहक = گراہی - گراہک

प्रपञ्चरूपः = یہ سب پرپنچ روپ

विशेषाः = یہ سارے فرق - یہ سارے بھید

'परमात्मनः' = اس پرماتما کا , स्वस्वभावस्य धामो = اپنے سوبھاؤ کی [illegible]

ہے جو چैतन्य महेश्वरस्य = جو مہیشور ہے [illegible]

यतः = چونکہ , स एव भगवान् = وہی بھگوان

सर्वस्य = سب کا , स्वात्मभूत = سوا آتم بھوت ہے

स्वस्वातन्त्र्यात् = اپنی سوتنترتا سے , तां तामपि भूमिकां समापन्नः

اسی بھگوان [illegible] - یہ بھگوان

58

[illegible]

तथा = ایسے ہی   ग्राह्य-ग्राहकाद्यवस्था = گراہی - گراہک [illegible]
विभुः   [illegible]

प्रथते = ظاہر ہوتا ہے   यथा = جیسے   ईश्वरतः = ایشور سے

न पुनः = پھر نہیں   स्वात्मनः = اپنی آتما [illegible]

भिन्नं = الگ   किंचित् = کچھ   प्रसिद्ध = مشہور ہے

इति = ایسا   स = وہ ہی   एक एव = ایک ہی

सर्वावस्थासु = سب حالتوں میں   संवित् = سموت

[illegible]

अनुगमात् = [illegible] (اسی طرح [illegible])

इत्थं = اس طرح   सर्वत्र = ہر ایک جگہ

एकरूपता = ایک [illegible]   प्रमाता = پرماتا

सर्वदृश्य दृश्यमान = [illegible]

भवति = ہوتا ہے

इत्याह = ایسا کہتے ہیں   श्री शम्भु भट्टारकः = [illegible]

59

ایک ہی بھاؤ (روپ) / جو دونوں میں ہو سکتا ہے

एको = (ہوتے) ایک ہی   भाव: = بھاؤ کی ہے

सविभाव = سب بھاؤں کا سو بھاؤ ہے
स्वभाव:

सर्व भावा = سارے بھاؤ کی روپ میں   एकभावस्वभावा: = ایک سو بھاؤ کے بھاؤ ہو گئے - ایک ہی بھاؤ سو روپ ہیں

एको भावा = ہی ایک بھاؤ کی

तत्त्वतो = پرمارتھ سے - اصل میں   यथा = جو ہوگی

दृष्टः = دیکھا - سمجھا (اصل طور جانا گیا)   सर्वे भावा = سارے بھاؤ

तत्त्वस्तेन = تو تھے - اصل میں واستو سے
تتو سے ، تتوں
दृष्टा: = دیکھے ہوئے - سمجھے ہوئے
دیکھ سمجھ - اس پر میں (ہوگی)

بھگوت گیتا میں ہے : —

सर्वभूतेषु येनैकं = سارے بھوتوں - جیووں میں (میں ایک ہی جیو)   येन = جس سے - جس پر ہے

एकं भावम् = ایک ہی بھاؤ کو   अव्ययम् = جو ناش رہت ہے

ईक्षते = دیکھتا ہے - سمجھتا ہے

بھاؤ کو अविभक्तं = جو نہ تقسیم شدہ ہے   विभक्तेषु = جو الگ الگ میں
ایک دوسرے سے بالکل الگ ہیں - بٹے ہوئے ہیں -

* شاستروں میں جو مت وادیوں کی بھید درشتا ہے - اور سکو اگر ان شاستروں میں انگی کار کیا ہے -
وہ صرف کلپ بدھی کا لایا ہی ہے - پرمارتھ یعنی ست کھوج میں اکیلا ہے - نہیں کھوجتا ہے -

(194)

57 तत् ज्ञाने विद्धि = اسکو جانا جائے ۔ सात्त्विकम् = ستوگنی

तीर्थान्तर = (اور دوسرے شاستروں میں) شاستروں परिकल्पितस्तु = کلپنا کئے ہوئے भेदः = بھید

संवृत्यर्थम् = کلپ بدھی کے لئے अभ्युपगतो = انگی کار کیا ہوا ہے

न = نہ सत्यभूमौ = ست لوک میں اگر

विकल्प्यते = کلپنا ہی ہے - کلپنا نہیں ہے ست لوک میں وہ کلپنا نہیں ہے + در اصل میں

इत्याह = ایسا کہا ہے ।

(27) विज्ञान = وگیان (بدھی کا پھل) अन्तर्यामी = انتر یامی

प्राज्ञ = پراگ विराट देह = ویراٹ شریر जाति = ذات (Species)

पिण्डज्ञाता = (وگیانی) پنڈ अपन्त = اس انت کے

व्यवहारमात्रम् इतत् = یہ سب وکیت دو ... (کلپ بدھی)

परमार्थेन = سچے وادی سے तु = لیکن न = نہیں

सन्त्येक = ست لوک میں یہ بھید نہیں ہیں + یہ سب

(یہ بھید ست پرمارتھ میں نہیں کلپنا ہے)

* اسکے وہ کلپ بدھی ایسے ہیں
نہ

یہ سب الگ الگ
مت میں - یہ
کلپ
یہ نا پن بانی ہے

وگیان مت سے
پنڈ مت وادیوں تک

وگیانی مت
پران - وادی
ویراٹ شریر وادی
ذات وادی
پنڈ وادی

5/9/60. 27

विज्ञानम् (دنیاں) = وشنیں → इति بولا। बोधमात्रमेव = بودھ ماتر ہی

केवलम = صرف प्रनुपाधि = اُپادھی رہت (کوئی بھی قسم کی ... اُپادھی نہیں)

(شبد اور ... وغیرہ اور اپادھیاں ... نہیں)

नामरूपरहितमपि = نام اور روپ رہت بھی प्रकारादि वासना = جو اپادھی

(... اثر ہے) کال سے جو واسنا ہے - (اس ... گرد جمع ہوئی)

प्रवाह = ... بہاؤ ہے वैचित्र्य = اس کی جو نانا پن

اس وقت ... کی یہ ... ہے

सामर्थ्यात् = اس کی سامرتھ سے नील =

اب اس ... دکھائی دیتا ہے - ان ... سے } نیل - وغیرہ - ... آدی اس کی ... اس ... نے ... ہیں -

बाह्यरूपतया = باہر روپ کی ... دنیا

नाना = نانا پرکار سے प्रकाशते = چمکتا ہے

(... سو ... میں چمکتا ہے)

इति विज्ञानवादिनः اب دنیاں واد کی بات ختم

(۱) ... ہی سب کچھ ہے ... ہے → ...

(۲) یہ نانا پرکار کچھ بھی نہیں ہے

इति न्यायेन = اس ... سے "प्रतीयामि" ... →

अयं = ... ہے सर्वस्य = سب کا इति:

परब्रह्मैव = پرم برہم ہی ... ہے प्रपञ्चादिः अविद्यावशात्

(... جو ... ہے - ... سے ... ہے)

[illegible]

[illegible]

भेदेन प्रकाशते = [illegible] دکھائی دیتا ہے

इति ब्रह्मवादिनः = [illegible] ایسا کہتے ہیں برہم وادی   वेदान्त = [illegible]

उभयत्रापि = دونوں جگہ [illegible]   वेदान्त स्य = [illegible]

स्वातन्त्र्यं = [illegible]   जीवितभूतं = [illegible]

विश्वनिर्माणहेतु = [illegible] کرنے کا [illegible] وہی ہے

इति = ایسا   न = نہ   चेतितम् =

[illegible]

अन्य = اور [illegible]   प्राण [illegible]   प्राण ब्रह्मवा = दिनस्तु [illegible]

यथा = جیسا   प्राणमेव = [illegible]

विश्वम् [illegible]   प्रागुर्यं = [illegible]

वर्तते = [illegible] → [illegible]

[illegible]

नहि = نہ   प्राणाद् ऋते = [illegible]   [illegible] = [illegible]

किंचित् ब्रह्मणो = [illegible]

इति = کہا ۔ सर्वमिदं = یہ سب کچھ

प्राहुर्ब्रह्म = کہتے ہیں برہم ۔ इत्याहुः = ایسا کہتے ہیں ۔

अपरे = اور प्रतिपन्ना = سمجھے ہوئے - ہیں यथा = جیسا

→ "विराड्देहम्" ([illegible]) [illegible] इति = کہا ۔

वैराजमपि = [illegible] ब्रह्मणः = [illegible] सत्यमृतम् = [illegible]

इति = کہا ۔ यथा उक्तम् = جیسا کہا ہے ۔

[illegible] यस्याग्निरास्यं द्यौर्मूर्धा खं नाभिश्चरणौ क्षितिः
सूर्यश्चक्षुर्दिशः श्रोत्रे तस्मै लोकात्मने नमः
([illegible])

جس پرماتما کی آگ منہ ہے آکاش سر ہے
آکاش ناف ہے - چرن پرتھوی ہے
سورج ہے نیتر - دشائیں ہیں دو کان
اُس لوکوں کی آتما کو نمسکار ہو

इत्येवमादि = [illegible]

"जाति" → महासत्ता = [illegible] सामान्य लक्षण = [illegible]

सर्वगतम् अयं = [illegible] वस्तु = [illegible] परमार्थसत् = [illegible]

इति वैशेषिकादयो ब्रुवते = [illegible]

27/61

अन्ये = اور دوسرے   पिशाचा   व्यक्तय: = شخص

एव = ہی   परमार्थ सत्या = اصل میں سچے

وہ صرف شخص کو ہی سچ مانتے ہیں۔

नास्ति = نہیں ہے   सामान्यं नाम = سامانیہ نام

किंचित = کچھ   एकम = ایک

अनेकगुणाश्रयं = ایک گنوں کا آشرے   प्रकाशते = ظاہر ہے

नापि = نہیں   उपपद्यते = ہو سکتا ہے

کیونکہ ایک ہی وہ ہی سب میں ظاہر ہے۔

इति = اگر   व्यक्तीनामेव = شخصوں کا ہی   व्यवहार: = برتاؤ

परिसमाप्त: = ختم ہوتا ہے — (وہ شخص ہی کا ...)

इति = اسی طرح   नानावृत्तिविकल्पै = ... ہی   ...

सामान्ये = سامانیہ کے   विवादमाना = ...

व्यक्तयो = شخص   न अनुयान्ति = ...

अन्यद = اور کچھ بھی   अनुयायि = ان میں ...

इति = اس طرح   एवमादि   بہت   बहु = بہت

ब्रुवन्ता = کہتے ہوئے

27

जातिर्न परमार्थः = [illegible]

इति प्रतिपन्नाः = [illegible]

इत्येवं = ایسا ہی "विज्ञान" [illegible] "पिण्डो" [illegible]

येषां भेदानां = [illegible] ते = وہ

तथा = ویسا उक्ता = کہی

"व्यवहारमात्रम् सत्" [illegible]

इति = ایسا कस्मिन् = اس

स्वातन्त्र्यवाद [illegible]

प्रकाशमानस्य = [illegible]

वस्तुनोऽनपह्नव [illegible]

नीयत्वात् = [illegible] एते भेदाः

संवृतिसत्यत्वेन = [illegible] प्रकाशन्ते = [illegible]

+ [illegible]

27/

62/

परमार्थेन तु = [illegible] सन्त्येव = [illegible]

[illegible]

न पुनः सतत्त्वतया = [illegible]

एते भेदाः [illegible]

तीर्थान्तर = [illegible] परिकल्पित भेदा = [illegible]

These are only in Shaiv [illegible]

विज्ञाना = ([illegible]) — Can exist like this only — [illegible]

तस्मात् = اس واسطے एक एव = ایک ہی [illegible]

परम प्रकाश = [illegible] پرکاش स्वतन्त्रः = [illegible]

परमार्थः [illegible]

चैतन्यमहेश्वर = [illegible]

इत्थमित्थं = [illegible]

चकास्ति = [illegible] यतो = جس واسطے

अन्यस्य = دوسرے کا एतत् = [illegible]

27/68

व्यतिरिक्तस्य = اگر الگ ہو — अप्रकाशस्य = جو ایرکاش ہو

اصل प्रकाश्यमानता भावम् = وہ پرکاش مان ہیں — وہ جو ہے

[illegible]

तीर्थं = [illegible] क्रिया = [illegible] व्यसनिन = [illegible] स्व = اپنی

मन = من ईषिका = [illegible] उत्प्रेक्ष्य = [illegible]

(اسی طرح ...)

तत्त्वम् = تو ہے इति = ایسا यत्वद = [illegible]

परमी = [illegible] वदन्ति = کہتے ہیں [illegible]

तत = [illegible] तत्त्वम् = تو ہے भवता = [illegible]

परसि = ہے न = نہ किंचित = کچھ [illegible] अन्यात = [illegible]

[illegible]

संज्ञासु = [illegible] केवल = صرف [illegible] = [illegible]

विदुषा = ان سے کو [illegible] विवाद = = [illegible]

([illegible])

(ابن علی (برابتی میں))

28 202

برابتی کہتے ہیں اب اس بندہ کا جو کرنے کا سامرتھ ہے

(28) 62

इदानी = اب   भ्रान्ति: = برابتی   प्रसाद = ?

पृथ्वी = پراپتی   प्राप्त   اس کا دوسرا رخ

سامرتھ سے پراپتی ہوتی ہیں

सामर्थ्येन = اس سامرتھ سے   निदर्शनम = درشٹانت

फाड = شیلدبا ہے

رسی کو سانپ سمجھ لینا

रज्जवां = رسی پر   नास्ति = نہیں ہے

(سانپ کا تو وجود ہی نہیں)

भजङ्ग = سانپ   त्रास = کھٹکا   करोति = کرتی ہے

मृत्यु = موت   पर्यन्तम = انت

مرنے تک

جب رسی پر سانپ کا کھٹکا مرنے تک

भ्रान्ती = برابتی   महती प्राप्ति = بڑی کھٹکی ہے

(اس برابتی)

न = نہ   विवेकतः = وچار سے   प्रवर्तते = Can

नाम = ہے   یہ بدل نہیں سکتے ہیں

یہ شکھتی تھا وہ ۔ اتنی مہان ہے ۔ (یہ برابتی)

رسی پر سانپ کی برابتی اگرچہ نہیں ہے دراصل ۔ لیکن یہ کھٹکا جو پیدا ہوتا ہے ایک

مہان شکتی ہے ۔ اگر نہ ہوتا تو یہ مرنے تک کھٹکا کیوں پیدا ہوتا ہے

[illegible]

63 "भ्रान्त" → पूर्णात्मख्याति = [illegible]
ख्याया

[illegible] प्रतातरूपय प्रापि = [illegible] "महती प्राप्ति"
भासने [illegible]

→ उत्तमं = [illegible] न = [illegible]

[illegible] केनचित = [illegible] "विवेक्तु पाक्यते" → न = [illegible]

किंचित = [illegible] वि = [illegible]

पार्यते = [illegible] ([illegible])
[illegible]

इतियावत = [illegible]

यथा = [illegible] वस्तुवृत्तेन = [illegible] रज्जू = [illegible]

परिदृश्यमाना = [illegible]

[illegible] दीर्घत्व = [illegible] कुण्डलिनी = [illegible]

भ्रमात = [illegible] "सर्पोऽयम्" [illegible]

इति = [illegible] अध्यवसायेन = [illegible] 3.

२८/

63/ रज्जुरूपेऽपि = رسی کے روپ میں بھی [illegible] असदर्थ प्रति भासो = اسد ارتھا = 3 بری باس ہے

प्रेऽस्मिन् = ہے 3. سپی प्रध्वसाय = پہنچنے کے پر بس ہے

सदर्थ प्रतिभासात = سد ارتھ [illegible] پرتی باس ہوئی - جب خیال ہوا کہ پہنچ کے پہ بس ہی ہے

भयं = [illegible]

मरणावसायं = موت کا [illegible] مرن کے سوست

विदधाति = کرتی ہے - [illegible]

دوسرا درشٹانت اگر یہ ارتھ کو ستیہ مان لیں ہوتا ہے کہ یہ لکڑی کا ستون ہے

अनुभवसिद्धमपि = اگر پرانی بھوتی سدھ بھی ہے "स्थाणु" لکڑی کا ستون

भूतम् = بھوت इति मत्वा = یہ مان کر

स्वयं = آپ ہی भीषणीयं = ڈراونے والا वा = [illegible] आकार = شکل

خیال میں بدلے ہوئے کی شکل بنا کر

समुल्लिख्य = اسکو شکل بنا کر - خیال میں بنانا भ्रान्ता = بھرم

सन्ता = ہوتی - ہے [illegible] हृदि = ہردے भङ्ग = [illegible]

دل میں ٹوٹا ہوا

नाप्त = [illegible] (Heart fail) के नाम = [illegible]

कनातः = न याता = [illegible] کیا [illegible] Case → کیا کیسوں کو

[illegible] Heart fail

(205)

63/64

इति = [illegible] विभ्रम एव = بھرم ہی प्रपूर्णत्व = [illegible]

प्रथन्ते = [illegible] हेतू = کارن ہے इति = اسواسطے

[illegible]

एतत् प्रकृत समर्थयते = [illegible] समर्थयते = سمرتھن کرتا ہے

[illegible] Subject [illegible]

اصل بات [illegible]

29 (24)

तत् वत् = اسی طرح धर्माधर्म = (धर्म) [illegible]

[illegible] स्वं - निरयौ = [illegible] उत्पत्ति = جنم لینا करता = [illegible]

सुख - दुःख = سکھ اور دکھ वर्णा = ورن

आश्रम = چار آشرم प्रादिश्च = [illegible] چار ورن

[illegible] आत्मन्य [illegible] प्रसिद्धादि = [illegible]

विभ्रमनात्वादि = [illegible] भवति = ہے - جاتا ہے

एव = اسواسطے यथा = جیسے رज्जू = رسہ प्रमाण-सती [illegible]

भ्रान्त्या = بھرانتی سے सर्पतया = [illegible]

विभूषादि = [illegible] सर्पगताम् = [illegible]

प्रथीक्रियो = [illegible] [[illegible]] [illegible]

करोति = کرتی ہے [illegible]

[illegible] 3.

64/ 29/

तथैव = ویسے ہی   देहात्ममानिना = [illegible]

[illegible] – चेतसि = [illegible] "धर्मादि" = دھرم وغیرہ – [illegible]

असदपि " = [illegible] → तत्त्वत: = سچائی سے

अविश्रमात् = [illegible] "विभ्रम: वशात्" = [illegible] – بھرانتی [illegible]

→ माया व्यामोह = [illegible]

सामर्थ्यात = [illegible]

भवति = ہوتا ہے → एतदेव = یہی سب

इति = [illegible] भ्रान्त्या – بھرانتی سے सत्ता = ہستی

लभेत = [illegible] بھرانتی [illegible]

[illegible]

'धर्म' → अश्वमेधादि = اشومیدھ وغیرہ

अधर्म → ब्रह्महननादि برہم ہتیا وغیرہ 'स्व' → [illegible] →

निरतिशया [illegible] – प्रीती = [illegible]

"निरयो" → यातना — [illegible] उत्पत्ति = [illegible]

मरण → जन्माभावः [illegible]

64 / 29

सुखं → आह्लादः = آرام दुःखं → राजसः क्षोभः = رجوگن کا کشوبھ

तथा = ویسا

"वर्णी" → = ورنی ۔ برہمن چھتری وغیرہ
ब्राह्मणो क्षत्रियः इत्यादि

"आश्रमी" → = آشرمی ब्रह्मचारी इत्यादि برہمچاری وغیرہ

"आदि" = وغیرہ गृहस्थात् = اسکے گرہستی ہے

तपःपूजा व्रतानि = تپ ۔ پوجا ۔ ورت इति सर्वं कल्पनामात्रसारं = یہ سب باتیں کلپنا ماتر سار ہی ہے

विभ्रम = بھرم विजृम्भितमेव = پھیلا ہوا ہی ہے
پھیلاؤ

3. मायाप्रसक्त्या = مایا کی پھیلاؤ سے देहाद्यात्मतया = دیہہ وغیرہ کو آتما سمجھنے سے ۔ سمجھ کر

प्रतिमन्यते = مانا جاتا ہے ۔ مان لیا جاتا ہے

एतत्सर्वं = یہ سب भ्रान्ते = بھرانتی سے

प्रभवति = ہوتا ہے ۔ پیدا ہوتا ہے

यया = جس کے ذریعہ पुनर्वस्तु = پھر

स्वर्ग = سورگ नरक = نرک जन्म = جنم मरण = مرن

64/ 29

भात्र : ... [illegible]

प्रबन्धं = اس بندش / اس کو کو [illegible]

पप्लवः = پھیلاؤ   न पुनः = پھر نہ

परमार्थित = حقیقی سروپ   स्वात्मनो = سوروپ

अनादिश्च = [illegible]   चिदानन्द = [illegible]   एकघनस्य

[illegible]

धर्मी धर्मादिकं = اس کے دھرم اور دھرمی   किंचित् = کچھ

विद्यते = ہے   اس کے [illegible]   शति = [illegible]

एवम् = ایسا   प्रसदृशी = [illegible]

प्रतिभासेन = [illegible]   भ्रान्तेः = [illegible]

सामर्थ्य = [illegible]

विचार्य = [illegible]   तदुत्पादितम् =

[illegible]

(209)

65/

بدائی زبان - (مایا)

یہ وہ اندھکار ہے -

(30) एतत = یہی तद् = وہ अंधकार = اندھکار - اگیان

यद् = جو भावेषु = بھاؤں کو - جذبات - کو [illegible]

प्रकाशमानतया = جو پرکاش مان ہونے سے اُس

کس سے - آتما سے نہ کہ کسی اور سے

जो प्रकाश मान है - उस कारण से सब भावों को प्रकाशित

फ़ प्रात्म स्मनारितंतक्ष्य

اُس پرکاش مان ہے - کیونکہ اُسی پرکاش

مان سے یہ پرکاشت ہیں -

پرکاش مان آتما کے وسیلے سے بھاؤں اُسی پر [illegible] ہی [illegible] - اندھکار ہے کہ وہ تو وہ آتما بھاؤں سے الگ ہے [illegible]

یہ اندھکار ہے भवति = ہوتا ہے ان بھاؤں میں

جو کہ سب ہے → फ़नात्म = جو آتما - جو آتما نہیں = فाभिमान = اسی کی

~~स्वन्यो~~ = ~~[illegible]~~ प्रथम = پہلے

جو ہر شخص سب آدمی کو ہی ماننے ہیں - اُنہیں ہی کو

اُن بھاؤں میں فکر اُس پرکاش مان کا پرکاش پرکاشت دکھائی

اُن کو اندھکار معلوم پڑتا ہے

یہی اندھکار ہے

"एतत तद् अन्धकारम्" → इति = [illegible] = کہا ہے

समन्तरत्नकूट = [illegible] प्रतिपादिता = [illegible]

विश्वमोहिनी = [illegible] - [illegible]

पूर्ताविख्याति रूपा = [illegible]

[illegible] جو نہ بان ہے - [illegible] ہے (بدائی) [illegible] یہی اندھکار - [illegible]

63/ भ्रान्ती = برانتی "यद्भावेषु" → प्रमातृ →

प्रमातृ-प्रमेय-रूपेषु = [illegible]

विश्ववर्तिषु पदार्थेषु [illegible]

"प्रकाशमानतया" → [illegible]

इति = [illegible]

इति = اس لئے प्रकाशमानता = [illegible]

अन्यथानुपपत्त्या - [illegible]

प्रकाशशरीर = [illegible]

भूतेषु [illegible]

"आत्मनः" → चैतन्यमहेश्वरात् = [illegible]

पृथग्भूतेषु = [illegible]

सत्स्वपि = [illegible]

यः = جو "प्रथम" → [illegible]

अतिरेकेण [illegible] = [illegible]

अमी = یہ भावा = [illegible] ग्राह्या = [illegible]

[illegible]

[illegible] बाह्या = باہری → मता = [illegible] भिन्नाध्य = [illegible]

इति = [illegible] "अनात्माभिमानो"

[illegible]

→ वास्तव [illegible]

[illegible] चितरूप = [illegible] [illegible] अपह्नस्तत्वे = [illegible]

यत = [illegible] तेषु = [illegible] अवास्तवं = [illegible]

[illegible] → जडत्वा [illegible] = [illegible] आपादनम् =

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रथमा। दृष्टं = [illegible] भावप्रकाशन

[illegible]

अन्यस्य = [illegible] अप्रकाशरूप = [illegible]

[illegible] — बाह्यवासनादेह = [illegible]

हेतु = [illegible] [ ]

[illegible]

[illegible]

66/

30

[illegible] (marginal Urdu note)

अनुपपद्यमानत्वात = [illegible] (خود ایک پرکاش میں ... [illegible])

[illegible] — وہ کسی ... [illegible] ... ہے — وہ خود اپنا پرکاش ہے — [illegible]

इ [illegible] سب اندر ... [illegible]

अतः स्वात्मप्रकाशस्य स्वतन्त्रः = سوائم پرکاش ہی ایک [illegible] ... ہے —

अर्थात = مطلب

इ नील-सुखादिना प्रकाशते = [illegible]

[illegible] پرکاش — [illegible] — [illegible] NB see [illegible]

अपि तु : [illegible] प्रमातृप्रमेयरूपतया = پرماتا ... روپ سے [illegible]

चित्स्वरूपोऽहमेव — [illegible] ([illegible]) [illegible] — ہے

([illegible] ... ان پرماتا اور ... [illegible] ... ہے)

इति = [illegible]   यत = इ   वास्तवरूपं = [illegible] ([illegible])

तत न = نہ وہ   प्रकाशते = [illegible] ہے

केवलम् एव = [illegible]   अवास्तवो = [illegible] ہے —

([illegible]) [illegible] — [illegible] ([illegible])

[illegible] (marginal Urdu note)

इति तात्त्विका = [illegible]   प्रथना = [illegible]

अभावात = [illegible] (इ.) — [illegible]   मन्ते = [illegible]

अन्धकारस्य अपरामः = اندھکار [illegible]

31/65

(31) आत्मानं = آتما کو — अनात्मन्यात्माभिमनो = اناتما میں [illegible]

पूर्वी = [illegible] — अनात्मनि आत्माभिमानो

اناتما میں آتما کا ابھیمان - شریر وغیرہ میں آتما کا ابھیمان کرنا -

? भवति = ہے

इति = ایسا، — प्रतिपादक = [illegible] → भ्रान्तः [illegible]

सुतरां = زیادہ ہی — मोहरूपतामं = [illegible]

आह = کہتا ہے۔

तिमिराद् अपि = اندھیرے سے بھی — तिमिरम् = اندھیرا - ہے

इदम् = یہ — गण्डस्य = پھوڑے پر — [illegible]

तत् उपर = اس پر — महान = بڑا — अपरः = [illegible]

फट स्फोट: = پھوڑا

यत् = جو — अनात्मन्य अपि = اناتما میں بھی

देह-प्रासादाव = دیہہ اور پران آدی / مدنی - وغیرہ / ان پر - ان کو آتما ماننا } [illegible] آत्ममा व्त्ति [illegible]

یہ ایسا ہی ہے جیسے [illegible]

[illegible] - [illegible]

(margin:) [illegible]

66/67

31/

फ़िर्दो = سے तावत् = تابکل एकसंवित =
اکیلی - ہوتے ہیں سب کے علم ہیں ہے

सतत्स्वेष्वपि = ہمیشہ کے حال میں ہوں भावेषु = حالتوں میں
ہیں جاگتے

भेदमयं = بیدی जाड्य = کاہل प्रादन्नुम = اندھا

تھی وہی प्रख्याति तिमिरस्य = تب کہ یہ باتیں نہ رہیں - ہم تو

कृते = لیے جو بھیتا

یہ کیا ہوتا ہے اس کے لئے

यत् = جو स्वात्मो = اپنی آتما अभिन्नानां = ایک ہیں

भावानां = بھاو [ہوا ہے جو بھاو بن گئے ہیں]

तता = تب भेदेन प्रथनम = بیدی ہونا

ات ही यहाँ

प्रत एव तिमिरमिव = یہ اندھیرا اس میں ہیں - ہم سے

"तिमिरम्" — प्रख्याति = ہوتا
اندھیرا

یعنی اندھیرے کی ہوا اندر ہے

یہاں ہیں

यथा = جیسے एकोऽपि = ایک ہی
آنکھ میں

चक्षुस्थान = آنکھ کے حصے रेखाति = آنکھ میں دکھائی دے
دیکھتا ہے

द्विधा = دو भास्ते = بھاستے

کوئی foreign body آنکھ میں ہو جب آدمی دو چیزیں دیکھتا ہے

3/67

[illegible] यूँ चन्द्रे = [illegible] हि = [illegible]

तथैव = [illegible] प्रख्याति तिमिरम = [illegible]

एकमपि सर्व स्वात्म स्वरूपं वस्तु — ایک ہی سوا آتم روپ [illegible]

भेदेन = [illegible] आत्मस्वरूप प्रकाशितवत = [illegible]

[illegible]

एवम् प्रवसिथते = [illegible]

"तिमिरम्" → प्रपरम प्रयात = [illegible]

मोहात मोहोऽयम प्रापतितो = [illegible]

"गराडस्य उपरि" [illegible]

पिटकोद्भवश्च = [illegible]

'यत' — 3. → प्रख्यात्य प्रपद्यस्तित = [illegible]

चित्स्वरूपेव्व = [illegible]

विश्ववर्तिषु पदार्थेषु = [illegible]

[illegible]

67/ (216)

31/ لہذا → जाड्यम (یہ بدلہ ہے (اس لفظ کا))

अपादितेषु = جو جاڑ میں کو لگا دیا.

ان لفظوں کا ہے / ایک اوپر اٹھی / ہے } मध्यात् = نکلتا ہے — उद्भूत = پیدا ہوئی ہے — اوپر اٹھا ہوا (ایک لفظ بنا)

व्यतिरिक्त: بن ہے وہ जडे = جڑ میں

یعنی شریر وغیرہ — وہ جو ہے "देहप्राणादौ" = دیہہ — پران — شریر وغیرہ → ان میں ہی بیٹھا

سے یہ دوری لفظ بیدا ہوتا ہے — یہ جو ہے वधिरवराउ = دوری کا لفظ — (حصہ) (شریر میں دوری لفظ)

جیسے

(جب شریر میں آ گیا تھا)

ہوتا ہے

دیہہ پر جانا وغیرہ } कृशोऽहं = میں کمزور ہوں — स्थूलोऽहं = میں موٹا ہوں } اب ۳ کہتا ہے — یہ دیہہ پر جاتا — کہا گیا ہے

پران پر جانا ← क्षुधितोऽहं = بھوک لگی ہے مجھے (یہ پران پر جانا — کہا گیا ہے)

सुखी अस्मि = سکھی ہوں میں (یہ بدھی کا بتا دیا ہے)

جیسے کوئی سمجھا / خوشی غم کو } न किंचित् अपदम = مجھے پتہ ہی نہیں میں کچھ نہیں جانتا — (شونیہ ہونا / سوشپتی)

इति प्रमातृतया = اس طرح پرماتر بنا دیتے

अनात्मभूत (ہونا) انا تم بھوت ہے (جو آتما نہیں) | انا تم کہا گیا ہے — انا تم بھوت — بنا ہے

"आत्ममानित्वम" = اپنا سمجھ لینا تھا →

67
31

प्रतारूपे = 3. بہروپ سے (آتما تو بہروپ میں)
سے بھی مثل بدن - پران - بدھی وغیرہ پر آتم بھاؤ کے

دیہہ - پران - بدھی وغیرہ جو آتما نہیں ہیں اُن کو آتما ماننا

तादूप्य प्रतिपत्ति = ان کو بھی روپ یعنی آتم
روپ جو اصلی آتم روپ نہیں ہیں - اُن کو
آتم روپ ماننا

सतत = ہمیشہ بھی प्रतिविश्वासम् = نہیں نا بھروسہ بات
جو بات نہیں ہے وہی ماننا ہے یہ اُلٹا بھاؤ ہے -

यदि = اگر तावत् = تب تک प्रात्माभिमानेन =
آتم ابھیمان
विना = بغیر वैश्वासम् = نا بھروسہ - آتمیں -
प्रस्ति = ہے तत् = وہ नीलसुखादिवदपि =
نیلا پن - سُکھ - آدی جیسے ہے (وہ اُلٹا)

प्रस्तु = ہو

دوکھ کے ہو سکتا ہے ← माका = نہ ہو कुत्रापि = کسی پر भूत = ہو

~~اگر آتم ابھیمان نہ ہو جب بے سمجھی ہے آتما ابھیمان سے - اُس بغیر میں~~

اگر آتم ابھیمان بغیر بھی یہ بے سمجھی ہوتی
یہ بے سمجھی بات ہوا ہوتی تو
جیسے ہم پتھر کو آتما مانا - جب ایسی بات نہ ہو - تو بے سمجھی بھی نہیں -

यत = 3. पनु: = پھر कतिपये = کسی

जडे = جڑ देहादौ = دیہہ آدیک پر

اس طرح اس میں کا کچھ شرح - بران ذکی (...) پر اسکا اس کا ہوا ادا کا درست اس کا سمجھ لگتا ہے

3/1 (218) 68/

لोष्ठप्राय = مٹی کا ڈھیر ہے — آत्मतया = اپنا آپ کا

अन्तःसारसाभिषकः = اسما کا سار — अभिषकः = پوست ... کا

اس سطر کو اسما کا ہی ہونا کہا ہے - لیکن اصل میں ... ہے

अन्यत्र = ادر ... — ... کہا ہے

नीलसुखवादौ = ... سکھ دکھ ... — इत्यस्या = ... سے

... کو ... ہے

ہی ہے — अनात्मप्रतिपादनम् = اپنا کا سدھ کرنا

एव च = ہی ہے — पूर्णाः = پر ہیں

संसारः = سنسار — शोचनीया = (سنتا ہے) دکھ کری

यदा प्रभमानोपनते = ... — आपनोत = نزدیک آیا ہے

... बुद्ध्यभिघात = بدھی کی ٹھیس

... - ... — سکھ دکھ - ... — opposite

[illegible]

31
68

attached

कम्पित = کانپتی ہے   पप्रान् = جوڑوں کو - ٹکڑوں کو

इति = ایسا   उक्तं मार्कण्डे पुराणे

مارکنڈے پران میں کہا

यदुक्तं = اور جو کہا

योगिन्या = یوگنی - یوگ جاننے والی   मदालसा = مدالسا نام [illegible]

क्षितौ

यत्र = جہاں یا جا [illegible] = پرتھوی پر   यत्र गतश्च = اس کا [illegible]

देह = شریر   देहेऽपि = دیہہ پر بھی - شریر پر بھی

अन्य = دوسرا   पुरुष = پرش   निविष्टः = ٹھہرا ہے

ममत्वम् = محبت والا ہونا   उपमया = پرتھوی پر   न = نہ

तथा = ویسا   [پرتھوی پر [illegible]]

यथा = جیسا   स्वे = اپنے   देहे = شریر پر

प्रीतिमात्रं = زیادتی ہے   विमूढता = مورکھتا

एषा = یہی ہے - مورکھتا

یہ شریر پرتھوی پر [illegible] ہے - [illegible] لیکن اس شریر میں ایک اور جا نام پرش ہے [illegible] ہے -
لیکن [illegible] میں پرتھوی پر اس [illegible] کوئی محبت نہیں رکھتا ہے - اسی طرح اس
شریر سے اس پرش کو کوئی [illegible] نہیں رکھنی چاہئے لیکن ایسا نہیں ہوتا ہے - یہی مورکھتا ہے -

32 68

(32) एवम = اسی طرح अख्यातिवशात् = لاعلمی کی وجہ سے

मिथ्याविकल्पै = جھوٹے وکلپوں سے इत्थम् = اسی طرح

आत्मानं = اپنے آپ کو बध्नाति = باندھتا ہے

(یعنی وکلپوں سے (وسوسوں) سے اپنے آپ کو باندھتا ہے -

देह = جسم प्राण = پران विमर्दान [illegible]

धी स्थान = بدھی کا استھان नभः = شونیہ

(کچھ نہیں خالی جگہ)

प्रपञ्च योगेन اس پرپنچ کے جوڑنے سے

आत्मानं = اپنے آپ کو वेष्टयते = لپیٹتا ہے

چتر चित्रं = نانا طرح जालेन = جال سے

जालकार इव = مکڑی کی طرح

جیسے وہ اپنے ہی جال میں بند ہو جاتا ہے -

دیہہ - پران - بدھی - شونیہ = (ان سے بنے ہوئے کو ملا کے بنی ہوئی) اس پرپنچ سے یہ جیو

مکڑی کے جال کی طرح جو دیہہ سے بنا ہے اپنے آپ کو لپیٹ کر اسی میں بند ہو جاتا ہے -

32 69

अख्याति अप्रकाशित चैतन्य: = [illegible]

सर्वप्रमाता [illegible] स्वोत्थै = [illegible]

विकल्पनिगडै = [illegible] व्यापकमपि = [illegible]

"आत्मानं वेष्ट्यते" - [illegible] कथम् = [illegible]

इत्याह = [illegible]

"देह इत्यादि" = देह प्राणादौ विमर्शनं = [illegible]

धियो ज्ञानं → [illegible] → [illegible] निश्चय: = [illegible]

[illegible] "नभासां प्रपञ्चो" [illegible] विस्तार = [illegible]

'तत् योगेन' = [illegible]

→ देहादि विकल्प संबन्धेन = [illegible]

- [illegible]

यथा = [illegible] कृपा = [illegible] स्थूला = [illegible]

स्पष्टमपि [illegible]

69 32/

रूपवान् = بہت خوبصورت

पण्डितश्च = پنڈت بھی (عالم فاضل بھی) प्रासिम = ہوں میں

इति = ایسا ; बालक = کم عقل - بچے

रूपाङ्गना = عورت ✓ पामराः = ذلیل لوگ

कार्षिका = کسان کی بیٹی   इत्थं = اس طرح

स्वविकल्पेन = اپنی کلپنا سے   देहमेव = اسی شریر کو

आत्मत्वेन = آتما ہونے سے - اپنا آپ مانتے

प्रतिपन्ना = سمجھ لیے - مانا ہوا

किंचित = کچھ   विवेचकम्मन्याः = - جو اپنے کو ودوان سمجھتے ہیں - جاننا ہے

देह = شریر   तावत् = تو پہلے   इहैव = یہیں

प्रलीयते = مرنے کے بعد مٹ جاتا ہے - مٹتا ہے ابدا   कुतो = کہاں سے

रूपस्य = اس روپ کا   = آتما دائمی ہے

? کہاں ہے

یہ اسی بات
یعنی شریر کو ہی سب
کچھ ماننے میں -
یہ سب فہم
ضرور - کا ہے

69
32

[ترجمہ]

अतो = اس لئے   यः 3. क्षुधितः = بھوک والا

पिपासितः = پیاس والا   सोऽहम् = میں ہوں

(مجھے پیاس لگی ہے - میں بھوکا ہوں (ایسا))

इति = یہ   प्राणात्ममानिन = پران کو آتما 3.
ماننے والے ہیں

विवेचकमन्यतरः = وچار کرنے والوں میں
ایک دوسرا ہوں

देह = جسم اور پران   जडो = جڑ ہیں

लोभाद्धिवत = ... کی طرح   कुतो = کیوں

دیہہ اور پران

अनयो = ان دونوں   आत्मभावः = آتم بھاؤ ہے

ततः = اس لئے
سکھی

सुखी = سکھی ہوں   दुःखी = دکھی ہوں
अहं

सुखदुःखादि चेतते

इति यः 3. ~~सुखी अहं दुःखी अहं~~ سکھ دکھ کو جو ...
3 ... ہے

स आत्मा = وہ آتما ہے   इति = ایسا

میں ... ۔ ...
... ۔ ...
... }

पुर्यष्टक = ... - ...   अभिमानिनो =
ماننے والے

मीमांसकादयोपि = میمانسک والے = ... بھی
...

विवेचकतमाश्च = ...

32 69 224

एतत् = یہ सुखदुःखाद्यपि = سکھ دکھ بھی

[illegible] बुद्धिधर्मः = عقل کا دھرم ہیں कथम = کیونکر

[illegible] आत्मतया = آتما کی صورت میں

Can say वक्तुं प्राक्यः = کیسے کہا جا سکتا ہے ?

ततो = اس لیے / اس واسطے देह = جسم प्राया = برابر

[illegible] धीविकल्पनां = عقل کی کلپنا کا यत्र = جہاں پر अभावः = نہیں ہے

[illegible] स आत्मः = وہ آتما

इति प्रान्याभिमानिनः = وہ شونیہ وادی مانتے ہیں

एवं = یوں यत्किंचित् = جو کچھ

इदं भाति = یہ بھاستا ہے تت नास्ति = وہ کچھ نہیں ہے

([illegible]) - [illegible] =

[illegible]

(32) 70

इति = ایسا   अप्रथारूपं = جو نہ پایا روپ ہے
کیونکہ کچھ وہی نہیں ہے -

शून्यमेव = شونیہ ہی ہے

सर्वप्रपोलन स्वभावम् = سارے کے کھیل میں ہیں
وہ سوبھاؤ

आत्मा = وہ آتما ہے   इति = ایسا

इति नमः प्रोक्तेन = نمہ سے کہا (جو سوتر میں آیا ہے)

उक्तः तदपि = وہ بھی   शून्यं = شونیہ

यदा = جب   समाधानावसरे = سمادھی کے وقت
اس کو بھی

वेधी कुर्वीत = [illegible] — [illegible] [illegible]

सततमपि = ہمیشہ   प्राग्यं वयं न भवाम =
[illegible] [[illegible]]

तदा = تب   शान्त्यान्तरम = [illegible]   आत्मत्वेन = آتم کے روپ ہے

विदधाना = [illegible]   'न' इति
'न' इति [illegible]

[illegible]

70

32 ब्रह्मवाद्यप्रमुखा (गत) = برہم وادی وغیرہ دوسرے لوگ

तत् तत् शून्य = وہ وہ شونیہ — परित्यागेन = اس [illegible]

ता ता शून्यात्मता = اس اس شونیہ بھاؤ کو

परिगृह्णन्ति = گرہن کرتے ہیں — इति = [illegible]

[illegible] | इति = [illegible] — नभः = — प्रपन्नः = [illegible]

निरापितः = نردیش کیا ہے

इत्थं = اس طرح। संवित्स्वरूपाः = سموت روپی جو ہے [illegible]

पर्यवसानात् = [illegible] اس

शून्यात्ममानिना = شونیہ کو آتما ماننے والے

योगिनः = یوگی

सुषुप्तगुहा = سوشپت [illegible] = گفا

निमग्ना = [illegible]

जडात्मानो = جڑ کو ہی آتما ماننے [illegible] [[illegible]]

[illegible]

ज्ञाता = جانتی ہوئی بھی میں   एव = ہی   आत्मानं = اپنے سروپ کو

संवित्स्वरूपमपि = جو کہ شعور سروپ ہے

जाड्येन आवृणोति = [illegible]
[illegible] -

"चिन्मे" इति प्रार्थ्यमानं = [illegible]

[illegible] यत उत = [illegible]   वैष्वास = بے سمجھ -
([illegible])

न एवत = نہیں ہے   स्वयं = آپ ہی   कथं = [illegible]

पायते = ہے
[illegible] { [illegible] -
[illegible] }

مثال "जाल कार:" ⟶ कश्चित = کوئی

कृमिर्वा = کیڑا   स्वनिर्मितेन = اپنے بنائے ہوئے   फेनेन = [illegible]

जालम = جال کو   प्रावरणा = اوڑھنا = [illegible]

निमाय = بنا کر   सर्वतागतम = سب طرف [illegible]

[illegible] "आत्मानं वेष्टयते" = [illegible]

71/
32

(228)

→ स्वं स्वात्मनिधनाय = اپنی موت کے لئے بध्नाति = باندھتا ہے

येन = جس उत्तरत्र = آگے तन्त्रदं = اسی لیے

آگے آگے چل کر سنسار وغیرہ کو نیست و نابود ہو جاتا ہے { विध्वंसे = نیست و याति = جاتا ہے

तथा = ویسا ہی देहाद्यात्मनां = دیہہ وغیرہ آتما کی

तु = لیکن स्व विकल्प कल्पितै = اپنے وکلپ سے کلپنا کی ہوئی

"میں اور میرا" "अहं मम" = میں، میرا [یہی وکلپ ہیں] - حرف

इति विकल्पे = ان وکلپوں سے

स्वात्मानमेव = اپنے آپ کو ہی बध्नाति = باندھتا ہے

तथा च बौद्धा = اور ویسا ہی بودھ لوگ

71

सत्य आत्मनि = سچے آتما   परसंज्ञा = اس پر دوسرے کی سنگیا

स्व = آپ   परि = پر   विभागात = اوروں کو پرایا بنانا - دوسرا کر دینا ـ اس سے الگ ہے

[پر اور آپ رکھنے]

परिग्रह द्वेषौ = گرہن کرنا - اور ویر (دشمنی)   उपायो = ان دو کو بیراگ - اور دوشن کو

संप्रति बद्धा = ان میں بندھے ہوئے ہیں

सर्वे दोषा = سب دوش   प्रजायन्ते = پیدا ہوتے ہیں

इत्याहुः = ایسا کہتے

कथं एष

جو آتما شدھ ہے اس کو دوسری سنگیا دینے سے یعنی شریر آدی پر آتم ابھیمانی کرنے سے - وہ دکھی ہوتا ہے جب اس آتما کو "آپ اور پر" میں وبھاگ کر دیتے ہیں - اور پر اور دوش کو گرہن کرتے ہیں (ان دونوں کا ساتھ رہنے کو باندھنے سے سارے دوش پیدا ہوتے ہیں -

33 72/

इत्याह =

(33) कथम् = کیسے   एष = یہ   दुर्निवारो = مشکل سے دور ہونے والا   महामोहो = بڑا اگیان

देहादिप्रमातृता = جسم وغیرہ کو پرماتا سمجھنا
جسم وغیرہ کو پرماتا سمجھنا
(دھارن کیا (جسم آدی میں)

समुत्थ: = اس سے پیدا ہوئی ہوئی

प्रलीयते = چلی جاتی ہے

इति = ایسا   भगवत्स्वातन्त्र्यमेव = اس پرمیشور کی خود مختاری ہی

निमित्त हेतु: = اس کا سبب ہے

پرمیشور کی خود مختاری ہی اس کا سبب ہے - اس (دنیا) کا سبب کوئی بھی ہے - اور

اس کا سبب کوئی بھی نہیں ہے +

इत्याह = ایسے کہتے ہیں

स्व = اپنا   ज्ञान = گیان   اپنا سروپ گیان

विभव = اقتدار - دولت

ऐश्वर्य

भासनयोगेन = ظاہر ہونے کے سبب

उत्तिष्ठेत = اٹھتا ہے - اپنا آپ اس سے چھڑانا

अपना क्या रूप

निजात्ममनसि = اپنے سروپ کی -

इति = ایسا   बन्धमोक्ष = بندھ موکش

चित्रा

بیگانگی سے بندھ ہے اور سروپ کی پہچان سے موکش اس وجہ سے

72

33

क्रीडा = کھیل   प्रतीति = دکھانا ہے

परमार्थाव: [illegible]

स्वस्य = اپنا → आत्मनः = اپنے آپ کی   चैतन्यलक्षणस्य =

[illegible]   यत = 3.   ज्ञान = جاننا ہے

→ स्वस्वातन्त्र्य = اپنی سوانتترتا کا

अवगम: = جاننا   तस्य = اس اپنا کا

"विभवो" → देहाद्यभिमान = دیہہ پر ادی [illegible]

विगलनेन = [illegible]   यत = 3

चित्स्वरूपे = [illegible] → परानन्दता चमत्काररूपस्य

[illegible]

स्वस्वातन्त्र्यस्य = اپنی سوانتترتا [illegible]

[illegible] — اپنی سوانتترتا

स्फीतत्वं = [illegible]

[illegible]

{ चिदानन्दैकघन: = [illegible]

{ स्वतन्त्रोऽस्मि = سوانتتر ہوں میں   इति = ایسا

तस्य = [illegible]

बोधस्वातन्त्र्यस्वरूपस्य = [illegible]

विभवस्य = [illegible]

[illegible]

72/33

کیا "भासनं" → بیاس → प्रकाश: بیاں ہونا

→ 'सर्वो' "ममायं विभव:" یہ سب میرا ہی دکھاوا ہے۔

इति वाच्यतया [illegible] तस्य आत्मन

सर्वस्य = کل کا स्वात्मतयैव = اپنے ہی روپ میں [illegible]

स्वीकार: = [illegible] - [illegible]

तस्य: = اس کا "योग:" = [illegible]

[illegible]

"योग:" → एवं-परिशीलन क्रमेण = [illegible]

= [illegible] [illegible]

आत्मनि = اپنے روپ میں यत: = جو

विमर्शादिरूपम् = [illegible] - [illegible]

एवम्-एतेन = اس سے

"स्वज्ञान विभव भासन योगेन

निजं निजम् आत्मानं" [illegible] →

72 33

جو پہلا ادا کیا تھا -

व = और प्रत्यत = [illegible] उपनत. = کامل ہوا ہو -

[illegible] चैतन्यस्वभावम् = جس کی سرشت (وہ آتما)

دو بار پیدا ہوا - آتما

[illegible] 'उद्भूत प्रथते' رسول سے آزاد ہوتا ہے → देह - प्राण - पुर्यष्टक

چھٹکارا پاتا ہے -

शून्य परामर्शना =

निगडैः = رسی - بیڑی - زنجیر - ان سے

ان کو سمجھا کہ جو برابر شی تھا - اُن برابر شی رسیوں کو توڑ

या = [illegible] वेष्टित = [illegible] प्रसीत = [illegible]

तमेव = اسی کو "चैतन्यस्वरूपः"

[illegible] प्रसिद्धं = [illegible] स्वतन्त्रोऽस्मि جس رسی سے [illegible] رسی

اسے پہنچا ہے

इति विमर्शनेन = ایسا ہی [illegible] पुनरपि = پھر بھی

भगवानेव = [illegible] उद्भूते → [illegible]

विगतबन्धने = [illegible] رسول سے چھوٹا ہے

رسول بندھے

[illegible] करोति = کرتا ہے इति ایسا ہے

یہ بات جال سے آزاد ہوتا ہے - جب اس ایسی دریش کی [illegible] [illegible] -

33 72

एवम पुनः ख्यातिबलात = اسی طرح پھر شہرت کے بل سے

आगत = آیا ہوا پہنچا ہوا स्वात्मनो = اپنے آپ کی - سروپ کی

دیہادی آورن देहाद्यावरणं = جو دیہادک کے آورن (دہ وغیرہ)

جب سروپ سے لوگ اور دیہہ وغیرہ کا آورن دھارن کرتی ہیں -

یہ سب کچھ پورنتا کا اپمان ہی ہوتا ہے -

तत् = اس کے بعد ، पुनरपि = پھر ख्यातिबलात = کھیاتی کے بل سے

اس آورن کو

یہ آورن جتنا ہے - ← विनश्यति = نشٹ ہو جاتا ہے (مٹا کر) جب پورنتا کا بھان ہو جاتا ہے -

इति = یوں ، स्व = اپنے آپ विकल्प = وکلپ سے

कल्पित = کلپنا کیا ہوا - آپ ہی کلپنا کیا ہوا

یہ تانا بانا - یہ سب وہم

سدا इयान् = یہ शेषः = دوئی

یہ دوئی دُور ہوتی ہے -

इति श्रीमद् ग्रन्थकृता तन्त्रसारे निरूपितम् ।

سرمایہ کرم کا اور دوئی کا جو سنسار میں نردوش ایک ہی ہے -

यो॰ वृ॰ निश्चय = [illegible] जनस्य पपृ॰ = [illegible]

[illegible] जडोऽस्मि = [illegible]

कर्मपाशितोऽस्मि = [illegible] मलिनोऽस्मि = [illegible]

इत्थं परीक्षितोऽस्मि = [illegible] इति = [illegible]

Different

एतत् = [illegible] श्रेयस्य = [illegible] निश्चय [illegible]

लाभयुक्त्या = [illegible] स्पष्टं = [illegible] (واضح)

प्रीत = [illegible] भवति = [illegible] विश्ववपु = [illegible]

चिदात्मा = [illegible]

इति = [illegible] किमिति = [illegible] वदति = [illegible]

मुञ्चति = [illegible] भगवान् [illegible] ? [illegible]

इत्याह = [illegible]

"इति बन्ध" इत्यादि → 'इति' →

प्राक = [illegible] प्रतिपादितेन [illegible] क्रमेण = [illegible]

भगवान् स्वतन्त्रः = [illegible] परमशिवः = [illegible]

→ पूर्णचिदानन्दैक = [illegible]

घनलक्षणः [illegible]

[illegible] = स्वरूप गोपन [illegible]

सातत्वक्षीशील तवात [illegible]

अपरख्यात्वव अप्रवभासन पूर्वं [illegible]

[illegible] (بھی ادھورا سا بیرونی سا) [illegible]

स्वात्मानमेव = اپنے آپ کو

देहादिप्रमातृतापन्नं = [illegible]

विधाय = [illegible]

[illegible] स्वरूपे प्रच्छादय [illegible] वन्थं = [illegible]

[illegible] विधाति = [illegible]

तथैव = [illegible] पुनरपि = [illegible]

स्वेच्छातः = [illegible] स्वात्म ज्ञान प्रकाशः कोंग न = [illegible]

33 7½

देहादि = دیہہ وغیرہ   प्रमातृता = پرماتا ہونا

निवार्य = ہٹا کر   बन्धं = وہی دکھ لگا   स एव तं =

स्वात्मानं मोचयति = اپنے سروپ کو آزاد کرتا ہے — وہی برہما ہے اس کو

इति उभयथा = ان دونوں طریقوں سے — बन्धं मोक्षं سنسار اور مکتی

"चित्रां = نانا روپ (اس کو) "   संसार = سنسار

अपवर्ग = مکتی   स्वरूप = سروپ

आश्चर्यमयी = حیرانی   आشچرج

क्रीडे = کرتا ہے   खेलो = کھیل   प्रपञ्चति → ظاہر کرتا ہے

विस्तारयति = پھیلاتا ہے   "एकाकी न रमाम्यहम्"

"اکیلا میں اس سروپ میں ... ایک ہوں ... بہت روپ ہو جاؤں"

اکیلا میں ہوں نا کر ... بہت ہو جاؤں ... نانا ہونا

(جو اس کا ہے)

स्वभाव एव एष = یہ اس کا سوبھاؤ ہے

देवस्य

यत् = جو   तत् = اس   तथापि   अवस्थान = وہ ... ہے

आपन्नः = ہو گیا   स्वरूपरूपः = اپنے روپ کا سروپ

33/34 75

सन् = (ہوتا) ہے ہوئے   सर्वत्र = سب جگہ (ہر جگہ) میں   سندر دو پاسے لیکر سب جگہ تک

अविभावितृतया = ظاہر نہ ہونے سے   प्रथते = پھیلتا ہے -

یہی اسی طرح ہوتا ہے   इत्येतदेव = یہی ہے، یہ ہے۔ स्वात्मरूपम् = بھگوان کا اپنا روپ

(پورا ہی ہوتا - سچ مچ ہی کہا)۔

(35) न केवलमेतत् = نہ صرف یہی

यावत् = جب تک   अपरः = دوسرا   कश्चित् = کوئی

इदं अवस्था = اوستھا   کا विशेषः = خصوصیت

स्वस्मिन् = اپنے ہی روپ پر   विश्रान्त = ٹھہرا ہوا

भास्यते = ظاہر کیا جاتا   (से) भगवता = بھگوان کے ذریعے

इत्याह = ایسا کہا ہے

جب یہ عالم کسی اور روپ (دکھائی) میں ٹھہرا ہو۔ یہ بھگوان اسی روپ سے دکھنے میں آتا ہے۔

सृष्टि : سرشٹی संहार = [illegible] स्थिति = [illegible]

जाग्रत = [illegible] جاگرت स्वप्नौ = سپن

सुषुप्ती = سوشپتی एतत् = یہ تस्मात् = اس کو

भान्ति = چمکتے ہیں ([illegible]) तुरीयं = چوتھی - تُریہ

धामानि = [illegible] तथापि = تو بھی ते = ان (اوستھائیں)

न = نہیں प्रावृत = ڈھکا ہوا - [illegible] भाति = چمکتی ہے - یا چمکتا ہے

یہ اوستھائیں تینوں جب تُریہ ہے [illegible]

ان اوستھاؤں سے وہ تُریہ ڈھکی نہیں ہوتی - ان میں چمکتی ہے - [illegible]

یہ اوستھائیں جاگرت سرشٹی سنہار - جاگرت سپن سوشپتی تینوں ہیں جو چوتھی تُریہ اوستھا ہے ان کا درجہ اس سے جدا ہے - [illegible] ان اوستھاؤں نے اس تُریہ اوستھا کو ڈھکا نہیں کیا ہے -

240

34

75 विश्वापेक्षया ये = [illegible]

समीक्ष्यो [illegible]

→ माया [illegible]

मायाप्रमातृगताश्च [illegible]

ये = जाग्रदादि [illegible] = [illegible]

या अवस्थाविशेषाः [illegible] → [illegible]

ते = [illegible] उभयथा = [illegible]

→ [illegible]

एतस्मिन् = [illegible] भवति = [illegible]

आनन्दघने = [illegible]

"तुरीये धामनि" → [illegible]

चतुर्थे पूर्णाहन्तामये [illegible] =

[illegible] — उ 'भान्त' → तद्विभ्रान्ताः =

[illegible]

सन्तः [illegible] →

स्वरूपस्त्तो = [illegible] → [illegible]

कल्पितप्रमात्रपेक्षया [illegible]

[illegible]

* یہ لو جوانی اوستھاؤں میں بکھر کر ہوا ہم پرو کے اس اس پرماتر اسی کا بھی ہے اس بیرونی بھاو کو دیکھتا ہے -
جو جس بھاو کو یہ پرم شو تا ہو (ٹوری) نہ جب پرکاش ہو وہ بھاو باہر بھاو ہاں نہیں دیکھ سکتا -

(34) (241)

۲۶ बाह्यत्या = بیرونی بھاوکے   लभ-ते = پائی
جو پرما بیرونی بھاو پائے جاتے ہیں اپنے نہ
یہ نہیں ہے - یہ سو سفنی ہے لہذا یہ جاگرتی ہے

परमेश्वरभित्तौ = Screen پرمیشور کو ہے   यत् = (جس) 3.

प्रकाशात = جیسے - جب نہ پرکاش ہے   तत् = اس

* बाह्यतयापि = بیرونی بھاوکے بھی   न प्रकाशते =
نہ پرکاش ہے - جب Screen پر نہ لگا - باہر کیسے ظاہر ہوگا -

تینوں ۳ میں   त्रिषु = تینوں اوستھاؤں میں   चतुर्थे = چوتھا پد (تری)

तैलवत् = تیل کی طرح (یہ پرم شو ہے)

प्रसेच्यम् = بھرا ہے → جو تیوم لذیذ یہ کہتے ہیں
اس کی یہ بھی کہتے ہیں تینوں اوستھاؤں میں بھی بھرا ہے - یہ تینوں اوستھاؤں کی سب سے جو ہری ہے اسی میں بھری ہیں
ان اوستھاؤں کو فیصلہ کرتا ہے تیل کی طرح سماتا ہے

? इति = کہنا ہے   सर्वासु अवस्थासु = سب اوستھاؤں میں   तुरीय रूपं = چوتھا روپ

سب میں دوڑتا ہے — अनुस्यूतत्वेन = دوڑتے ہوئے   स्थितम् = ٹھہرا ہے
نتھ لگاکر ہے -
سب اوستھاؤں میں یہ تری نکلتے ہیں نتھ لگاکر ٹھہرا ہے -

(34) 76

इति परमार्थः = حقیقت میں   सत्तावत्ता = ان کے

तत्र = وہاں - ان کی ان دونوں   तै = ان کا ترک

स्वरूपम = سروپ اس کا اپنا ہے

अपहस्त्यित = - ہو سکتا ہیں   स्यात् = ہو

न वा = یا نہیں   ہو سکتا ہے یا نہیں؟

इत्याह = اس کو کہا ہے

"तथापि तैर्निवृत्त भाति" इति → इत्यमामि =

اگر ان میں دونوں اس سے - [illegible]

तै = ان   [illegible]

स्वरूपसत्तार्थम = سروپ کے لیے اس کا ہے

अप्रावृतमापि = ایسا ہی اگر ہے

اور تاثرات کو تاثرات (یعنی) ہے - وغیرہ

तन्मयः = ان سے   समुत्तीर्णतया =

→ सर्वानुभवितृता = [illegible]   اوپر ہے - [illegible]

सर्वत्र = ہر جگہ - ہر ایک   अवभासत एव = یا اسا ہے

एव = ہی

ہر ایک [illegible] ہے یا سا ہے - [illegible]

न पुनः = نہ کہ   तत् अपाकरणान =

اس کا تاثرات سے [illegible]

पूर्णस्वरूपता = ہو پوری سروپتا   तत्र = وہاں

Margin notes:

[illegible] سروپ کے ان کو [illegible] یہاں (فریب) میں ایسا ہے یا نہیں؟

لیکن وہ [illegible] [illegible] نہیں لگتا ہے -

اور [illegible] [illegible] آتا ہے

34/35 75/76 तिरोधत्ते = [illegible] - [illegible] , [illegible]

इति = [illegible] शिवधाम = [illegible] - [illegible]

सर्वावस्थास्वपि = [illegible] सरित = [illegible]

[illegible] परिपूरयन् = [illegible]

(35) वेदान्तभाषाभिः = [illegible] जाग्रदादीनां = جاگرت [illegible]

त्रयाणां = [illegible]

स्वरूपं व्यवहरन् = [illegible] तदनुस्यूतमपि = [illegible]

तत = [illegible] परं तुरीयम् = [illegible]

प्रतिवदति = [illegible]

[illegible]

جاگرت बیدار जाग्रत = [illegible] جاگرت = [illegible] विश्वं = وشو

भेदात् = بیدار (بیداری میں)

سپن [illegible] स्वप्न [illegible] سپن तैजसं = [illegible]

(244)

35

76 प्रकाश महात्म्यात् = پرکاش مہاتم سے (اس کے)

پراگیہ سے پرگیہ = प्राज्ञ = پراگیہ کہتے ہیں सुप्तावस्था = سوشُپتی ہونے کی حالت میں

سوشُپتی اوستھا میں اوسکو پراگیہ کہتے ہیں

ज्ञानघनत्वा = گیان گھن ہونے سے

ततः

पर तुर्यम् = پرم تُریہ کہا گیا ہے

اوسکے بعد تُریہ ہے

اس کو کہا جاتا ہے

जाग्रदवस्थैव = جاگرت اوستھا ہی صرف

विश्व = وشو ہے → ब्रह्मरूपो = برہم روپ

वैराज = ویراج روپ स्वरूपं = سروپ (اسی کو ویراٹ

کہا جاتا ہے - جو سب سے اونچا ہے)

پیدا ہوا ہے कुतः = کس طرح (سے) - "भेदात" → بھید سے

کون ہے → प्राक्दाविवि = پیدا کیا विषय पञ्चकस्य

باہر کی حالت میں बाह्यतया = باہر کی حالت = پانچ دیکھے گئے - پانچ وِشیوں کو

پیدا ہوا پرمे परमेश्वर स्वैव = پرمیشور ہی نے بنایا ہوا

सर्वप्रमातृणाम् = سب پرماتاؤں کا

चक्षुरादीन्द्रिय प्रवृते = آنکھ وغیرہ اندریوں

کی پرورتی سے

پیدا ہوئی

(245)

(33)

76/77

इति एकस्यैव = اسی طرح ایک ہی کا ब्रह्मणः = برہم کی

وشئی اور وشے کی سے — विषय विषयि भावेन = ایک ساتھ [illegible] — اسی طرح کی ہے

स्थितस्य = [illegible] नाना = مانا برابر →

इन्द्रिय-ज्ञान वैचित्र्यम् = اندریوں کی نانا وغیرہ

[illegible] — "भेदात्" [illegible] — اسی سببہ سے — [illegible]

[illegible]

"ज्ञानं जाग्रत" → [illegible]

इति = اسی طرح एषा = یہ ब्रह्मणो = برہم کی

विराडवस्था = ویراٹ اوستھا गीयते = گایا جاتا ہے

[illegible] —

?

तथा = اسی طرح "स्वप्नः" سپن → तेजोऽवस्था ब्रह्मणः =

[illegible]

कुतः = کس واسطے ? इत्याह = کہتے ہیں

प्रकाश मात्रात्मयात = [illegible] इति = اسی طرح

स्वप्ने = سپن میں बहिष्कर सर्वेन्द्रियैः [illegible] शब्दादि = [illegible]

[illegible] विषये [illegible]

तावत् = [illegible] तत्प्रगल्भमेते [illegible]

[illegible]

नापि = ہوں نہیں तत्र = اس میں باہر बाह्यं = باہر

शब्दादिकं = شبدادی [illegible] किंचित = کچھ

नाम = نام سے مشہور [illegible]

परमार्थ सत् = حقیقت میں ہے विद्यते = ہوتا ہے (ہستی میں)

नापि = ہوں نہیں बाह्यत्मना = باہر سے

पर्यवसायस्य = [illegible] प्रविद्यादि = اودیا - اگیان [illegible]

किंचित = کچھ भिन्नम = الگ अभिन्नम = [illegible]

= دوسرا [illegible] = [illegible]

[illegible]

[illegible]

युक्त्या = [illegible] ([illegible])

विचारमाणं = [illegible] उपपद्यते = [illegible]

पृथ च = [illegible] स्वपेन = [illegible]

सर्वं = [illegible] ([illegible]) प्रकाशते = [illegible] ([illegible])

[illegible]

[illegible]

(247)

35 (1)

अत = اس لئے इदम् = یہ अर्थबलात् = [illegible]

प्रायोऽतस् = اکثر (اس لئے) [illegible] यत् = جو स एव = وہی

भगवान् = بھگوان सत्स्वभावो = [illegible] देवः = روشن

तत् तत् = ویسا ویسا प्रमातृतां = پرماتریا کو

ہو کر समाविष्टः = داخل ہوکر

[illegible] स्वप्नायमानः = خواب دیکھتا ہوا स्वात्मानमेव = اپنے آپ کو ہی

प्रकाशस्वातन्त्र्यात् = پرکاش کی سوتنترتا سے

गज, नगर = [illegible]

[illegible]

प्रविभज्य = الگ الگ - بانٹ کر

प्रति प्रमातृ = ہر ایک پرماتا کو स्वप्न = اس سپنے میں

असाधारणमेव = نہ سانجھا विश्वं = دنیا (کو)

प्रकाशयत्येव = ظاہر کرتا ہے

[illegible]

(78) (248)

35

इति = اس طرح । ब्रह्मरूपा: = اس برہم روپا

स्वातन्त्र्ये = [illegible] स्वप्न एव = سپن ہی

ब्रह्मवादिभि = برہم وادیوں نے - ویدانتیوں نے

अभ्युपगतम् = انگیکار کیا ہے

(انھوں نے مانا ہے کہ سپن ہی میں گیان کو اسپر ہے)

برہان → वेदान्तेषु = ویدانت میں

इदमुक्तम् = کہا ہے

प्रविभज्यात्मना = بانٹ کر आत्मानम् = اپنے روپ کو ہی सृष्टा = اپجا

भावान् = چیزوں کو पृथक् विधान = الگ الگ

सर्वेश्वर: = سب کا مالک ایشور सर्वमय: = سرو روپ ہے

स्वप्ने = ہی سپن میں भोक्ता = بھوگنے والا

प्रकाशते = پرکٹ ہوتا ہے [سپن میں یہ دریشیہ دکھائی دیتا ہے]

इति = اس طرح । प्रकाशमात्रात्मयमेव = پرکاش ماتر روپ ہی ہے

अतः हेतु = اسی لیے [illegible]

अतः = اس لیے । ब्रह्मरूपा: = برہم روپ = [illegible] तेजोऽवस्था

तथा = اور ایسا प्राज्ञ: → سوشپتی اوستھا

सुप्तावस्था

سپن میں جاگرت میں
[illegible] (تیجس)
[illegible]
[illegible] ہے

[illegible] سپن برہم کی [illegible]

(35)

सर्वप्रमातॄणां = سب پرماتریوں کی   या = جو   सुप्तावस्था = سوتی ہوئی

→ सा = وہ   सुषुप्तं = سُشُپتی ہے   "प्राज्ञः" → = اس پرمیشور کی پرگیا ... [illegible]

इति = یہ ہوا   यतः = جس سے   ... [illegible]

यत्र सर्वप्रमातॄणां ग्राह्य-ग्राहक प्रपञ्चविलयात् = جہاں نہ گراہیہ ہے نہ گراہک ہے ... [illegible]

महाशून्यत्वरूपे = مہاشونیتا روپ ... [illegible]

ग्राह्यादि विलये = گراہک گراہیہ دونوں کا ... [illegible] وہاں دونوں ہی کچھ نہیں ہے

संस्कारशेष = (صرف) سمسکار کا شیش (رہتا ہے)

सुषुप्ते = جہاں اسکو ... کچھ نہیں رہتا ہے ... شیش رہتا ہے   विश्वस्य = اس دنیا کا

बीजभूतस्य = بیج ہونے ... بنا ہے   नश्वरः = ... [illegible]

प्रज्ञा = یہی اسکی پرگیا ... ہے → बहुप्रमातृतया अन्तरतमम् प्रविविक्त्यते

= برہم ... (جاننے والا ہونے سے) اندر کا رہتا ہے ... صرف اس کو ... رہتا ہے۔ گراہیہ گراہک کا کچھ بھی نہیں رہتا ہے ... برہم ہے ... بیج ہوتی ہے ... سنسکار ... ہے

इति यावत् = — یہاں تک

(35) (250)

سارے پرماتاؤں کی جانکاری جن
سنسکاروں ... سے
اس کا سنسکار ہوگی

78/

सर्वस्य प्रमातुः = سارے پرماتاؤں کی   नीलसुखाद्यविविधवैचित्र्याय = نیل - سکھ - دکھ آدی کی ... [illegible]

प्रथाया - ... [illegible]

اس پرتھا کی   [illegible] ( )   सा एषा = وہ یہ (یعنی [illegible])

संस्कारभूमि = سنسکار کی بھومی (جگہ) → جس سنسکار سے [illegible]
جانا جاتا ہے - [illegible]

ततः = اس سے (جو یعنی ہے)   प्रबुद्धस्य = جب ... [illegible]

प्राक् = پہلے   प्रबुद्धभूतवत् = ... [illegible]

[illegible]

व्यवहार दर्शनात् = ... [illegible] ← [illegible]

अन्यथा = اگر یہ نہ مانیں   यदि = اگر

अस्यां भूमौ = اس بھومی میں - اس [illegible] (اگر ... [illegible])   स्थिरे = ٹھہرا

اگر اس ... [illegible]
[illegible]

प्रज्ञातत्त्व भावे = [illegible]   सर्वक्रीडीकारे = سارا ... [illegible]

[illegible]

तर्हि = تب   न = نہیں   प्रकाशियेत = چمکتی نہیں

→ اگر یہ نہ ہوتا - [illegible]

[illegible]

71 → कुतः = کیوں तत = سو उत्थितस्य = اٹھے ہوئے (اٹھ کر) تب جاگ پڑا

क्रमात् = ترتیب سے प्राक् अनुभूतवस्तुनः = پہلے انبھو کئے ہوئے وستو -

اس کا بیان کس طرح بنتی -

[illegible]

'तथैव तत' → इति ویسی ہی ہے وہ (اسی طرح)

→ अनुभूत चरत्वेन = انبھو کئے ہوئے (کر چکنے) (اسی طرح)

स्मृति उदपत्स्य = پیدا ہوئی ہے سمرتی [illegible]

नापि = اور نہ ہی

" सुखम् अहम् अस्वाप्सम् " سکھ سے میں سویا تھا میں

" दुःखम् अहम् अस्वाप्सम् " دکھ سے میں سویا تھا

गाढम् मूढो ऽहम् अस्वाप्सम् = بالکل مدہوش سے میں سویا تھا

یعنی مجھے کچھ بھی پتہ نہ تھا اس سمے میں -

इति अनुभवः प्रादुर् भविष्यत् = اس طرح انبھو ظاہر ہو میں آیا ہے -

اس سے نہ کوئی دکھ نہ سکھ کی انبھوتی تھا -

तथा च भट्ट दिवाकरवत्सः پیارا

اسی طرح بھٹ دیواکر کے پیارے نے کہا ہے -

वत्सः = dear
پیارا

(35) (252)

[illegible]

१/ सैवं = [illegible] अनुभूता = [illegible] यदि = [illegible]

न = [illegible] अन्तर = [illegible] ([illegible]) प्रथि: = [illegible]

[illegible]

[illegible] स्वप्नात्म = [illegible] सात्कार [illegible]

[illegible] सुरक्षिता = [illegible] न स्पृ = [illegible]

[illegible]

विज्ञात वस्तु = [illegible] प्रतिबोधरूपा

[illegible]

कोचित = [illegible] स्मृतिमान = [illegible] नाम = [illegible]

[illegible] न = [illegible] संभवेताम = [illegible]

[illegible]

इति = [illegible] इत्थं = [illegible] सम्पन्न = [illegible]

[illegible] चिन्मयमेव = [illegible]

ब्रह्मरा: प्राज्ञाव स्था = [illegible]

[illegible]

(35)

(79) कुतः = کیونکہ "ज्ञानघनत्वात" → علم ہی علم [illegible] ہے

इति = اس لیے۔

[illegible] सुषुप्ततुर्ययो = سوشپتی اور توریا کا
([illegible])
साधारणोऽयं हेतुः = [illegible]

इति उभयत्र [illegible]۔

योऽयम् = [illegible] एषा सुषुप्तभूमि = یہ سوشپتی [illegible] ہے

[illegible] 'ज्ञानघना' = [illegible] → प्रकाशमूर्ति = [illegible]

[illegible] केवलं = صرف विश्वप्रलयसंस्काराः
[illegible]

श्यामला सती = [illegible]
[illegible]

[illegible] प्रबुद्धचिन्मयी = [illegible] – ([illegible])
[illegible]

यदुक्तं स्पन्दशास्त्रे = اسی لیے سپند شاستر میں
کہا ہے۔

(254)

(35)

79/80

[illegible]

ज्ञान ज्ञेय स्वरूपिण्या = گیان اور گیے کے سروپ والی

प्रावत्या = پانے سے   परमया = بڑی   युत: = ساتھ (اس ... جو ہر ... ہے)

पदद्वये = دونوں قدموں میں (یعنی دونوں ...)
حال - پہلو میں

विभु = ویاپک   भाति = بھاستا ہے   तत = وہ

अन्यत्र = اور جگہ میں   चिन्मय = چیتن ہے -
(دوسری جگہ اور وقت میں)   (روح کا ... ہے -)

इति = ایسا।   तथा = ویسا।

"ततः परं सुषुप्तम्" → तस्मात = اس।

सुषुप्तात् = سشپتی سے   परम → अन्यत = ادھر

निःशेष = سارا - سب کچھ   पापाव-वासना = پاپوں کی واسنا

संस्कार = ... ہوا।

परिक्षात् = ... پرے

शुद्ध पूर्णानन्द मयं = شدھ پورن آنند ...

35

शुभ्रतराः = [illegible] । तुरीयं = [illegible]

रूप = روپ ہے । अनुगुणं = ایک جیسے گنوں والی

नाम = نام کا ہے [جو کہ ... ہے]

लو यत् = جو । मंत्र = منتر میں । नाम = [illegible]

एकपदी = ایک پد تو । न किंचित् उपपद्यते =

- کچھ پیدا نہیں ہوتا - (بعد کچھ نہیں - دوسرا اور کوئی ارتھ نہیں ہے)

एतो = یہی سب کا ہے । व्याख्यातस्य = جس کی وضاحت کی گئی ہے

अवस्थात्रयस्य = تینوں اوستھاؤں کی

विश्राम भूतम = آرام کا قرار ہوتا ہے

(آرام قرار کی (ٹھہراؤ) جگہ ہے)

سب सर्वान्तरतमत्वेन = سب میں اندر ہونے سے

अनुस्यूतम = سب میں پرویا گیا ہے

इति = یہ ہے । चतुःसंख्यापूरण = چار کی گنتی پوری کرنے والا

= "तुरीयम्" چوتھی جگہ ہے

یہ دیا گیا ہے نام ہے

(256)

(33) 80/ पूरस्ता प्रत्ययेन = یہ دکھاتے ہیں سंख्या (पदेष्वो) ेय = گنتی ہے

अत = اس لیے कृत: کیا

कथं = کیونکر अवस्थात्रयस्य = تینوں اوستھاؤں کا

یہ پرویا ہوا ہے अनुस्यूतमपि = پرویا ہوا تत: = اس

یہ ہی پرم ہے परम = پرم एवत = یہ ہی ?

इत्याह = یہ کہا ہے

ज्ञानघनत्वात् " گیان گھن ہونے سے इति

यतो = کیونکہ وہ جو جाग्रदादियो = جاگرت آدی

सर्वा = سب جاگرت آدی سب

جو بھیद प्रवरात्वात् = بھید پرور ہیں - بھید والی ہے

प्रमातृशब्द: = پرماتا لفظ अज्ञानमय्य =

(پر اوستھا میں) - اگیان رنگ - اگیان سے میں

तुरीयं = یہ تریا ग्राह्य-ग्राहक क्षोभ = प्रलय

گراہیہ گراہک چھوبھ - اس اوستھا میں - اپنی حالت میں رہنا اور کاہل سے

संस्कार परिक्षयात्

(25)

[illegible] सान्द्रप्रकाशानन्द = [illegible]
मूर्ति

इति: [illegible] तत = [illegible] अन्तः = اندر स्थितापि [illegible]
([illegible])

तावयो = [illegible] चिन्मयतया = [illegible]
अवस्थाभ्यः
([illegible])

[illegible] समुत्तीर्णत्वात् = [illegible]
"परम" → उपन्यस्त — [illegible] "परम" [illegible]

स्वप्न अवस्थाविवर्ते = [illegible]

[illegible] परमाद्वयस्व = [illegible]
भावे

स्वतन्त्रे = [illegible] ब्रह्मैव = [illegible]

पृथ्वी विजृम्भते = [illegible]

— [illegible]

(258)

81

(36) एवमपि = [illegible] प्रबुद्धस्य परमात्मनः = [illegible]

सर्वप्रमात्रनुस्यूतत्वेन = [illegible]

स्थितत्वात् = [illegible] अवश्यं = [illegible]

प्रमातृगतागतम् = [illegible]

अपि अख्यातिमालिन्यम् = [illegible]

आयाति = [illegible]

इति यत् = [illegible] तत् = [illegible]

न = [illegible]

इति दृष्टान्तेन आवेदयति = [illegible]

८१ (259) (ॐ)

जलधर = ابر   धूमैः = دھوئیں (دھواں)   रजोभिः = گرد وغبار

ساتھ   मलिनीक्रियते = میلا ہو جاتا ہے   جیسے   طرح

यथा न गगनतलम् = آکاش تل - جیسے آکاش تل میلا نہیں ہوتا

तत वत् = ویسے ہی   मायाविकृतिभिः = مایا کے وکاروں سے

अपरामृष्टः = نہ میلا ہوتا ہے   परः पुरुषः = پرم پرش

نہ میلا ہوتا ہے - ہمیشہ پاک ہے

"यथा" = جیسے   मेघ-धूम-धूली पुञ्जैः (रपि) = ابر - دھواں - گرد کے ڈھیروں سے

आकाश पृष्ठम् (स्थैरपि) = اگر چہ آکاش پر ہیں

आकाश पृष्ठम् = آکاش کا وجود - آکاش تل ہے

आकाश کی طرح بے داغ   अमलिनं = نرمل   قدرتی   स्वभावतः = قدرتی طور سے (صاف ہے)

न मलिनं विधीयते = میلا نہیں کیا جاتا ہے

नापि = نہ ہی   नित्यता = ہمیشگی (آکاش کی ہمیشگی)

آکاش میں جو ہے   वैतत्य = پھیلاؤ ...

81

अखण्डनो = [illegible] या [illegible]

चीयते = [illegible] - [illegible] - [illegible]
[illegible]

केवलं = صرف दर्पण प्रतिबिम्बवत् = [illegible]

तत् तत् अवस्था विचित्रं गगनं = [illegible]

गगनं गगनमिव = آکاش آکاش ہی رہتا ہے

[illegible] सर्वदा तथात्वेन = [illegible] → = [illegible]

प्रत्यभिज्ञानात् = [illegible]
([illegible] آکاش [illegible])

"वत्वत्" → [illegible] इति

तथैव = [illegible] "मायाविकृतिभिः"
[illegible]

[illegible] → नाना प्रमातृगतै जन्म-मरणा अनेक
[illegible]

(36)

81/ अनेकविचित्रावस्थामये = [illegible]
[illegible]

भगवत्स्थैरपि = بھگوان پر اگر کھڑے ہوں - ([illegible])

" भगवान् न "परामृष्टः" = بھگوان ادھیوں نے پرامرش نہیں کیا ہے →

[illegible] न = نہ ; तै = اُن دانوں سے ; उपहतस्वरूपः = دور ہوئے ہوئے - چھپے ہوئے

च = [illegible]

اسی طرح یہ بھی اس بھگوان شری دیپ کو [illegible] - [illegible]
[illegible]

यतः = اسی سے ; स एव = وہ بھگوان ; "परः परमः".

इति → सर्व पुरुषाणां = [illegible] → जीवानाम् = جیووں کا

प्राज्य = [illegible] ; उल्लासन - [illegible] → [illegible]

[illegible] विश्रान्तिस्थानं = [illegible]
[illegible]

इति सर्वानुभवितृतया [illegible]
सदा स्फुरति [illegible]

(36) 42

'पर' पूर्वक / [illegible] | इति पर प्रतिवेदन = [illegible] पर [illegible]

निर्दिष्टः = بتلائی گئی -

तस्मात् = اس واسطے   न = نہ स्वसमुत्थैः

اپنے سے جو نکلے ہیں پیدا ہوئے ہو (دکھائے) -

दर्प. प्रकाश = [illegible]

माया विकारैः = مایا وکاروں سے   ऐन्द्रजालिकवत्

بازی گروں کی طرح =

भगवत् = بھگوان کو

کوئی کھنڈن نہیں کرتا | काश्चित् खण्डयेत् = کوئی کھنڈن کرے

[illegible] جیسے بازی گر اپنی بازی دکھلاتا ہے لوگوں کو - اور لوگ اسے اس کو

[illegible] - کوئی اس سے نہیں کہتا کہ تم نے بازی دکھائی ہے - لوگوں کو یہ بازی لگتی ہے

इति - اس طرح   परमर्षिणा = [illegible] (اپیل [illegible])

प्रजड प्रमातृसिद्धवादि = [illegible]

[illegible] - (اپیل [illegible])

36

स्थिति: = ٹھہری ہوئی

82 यद्यपि = اگرچہ ۔ अथ = پرانوں ستھتی ۔ ٹھہری ہوئی

प्राण पुर्यष्टक नियन्त्रिते जीवे = جو پران ۔ پر لنگ سے جو اس جو بند ہے کیا ہے ۔ कथं = کیونکر

[illegible] پران ۔ پر ۔ [illegible] میں بند ہے ۔

जीवे = جیو ۔ اگر

निरुद्धा = رکی ہوئی ہے ۔ तत्रापि = پر وہاں بھی

[illegible]

परमात्मनि = پرماتما میں ۔ सा स्थिता = اس کی ٹھہری

तत प्रात्मनैव = سروپ سے ہی ۔ तस्य = اس کی

स्यात = ہے ۔ कथं = کیونکر ۔ प्राणन = پران سے

यन्त्रणा = بند

وہ ستھتی بھی پر رہتی ہی ہیں ۔ پران اور پر لنگ ۔

اگر ارتھوں کی ستھتی جیو پر ہی بند ہے (یعنی [illegible] جیو سے کئے جاتے ہوں ۔ لیکن پر تو [illegible] کیا جاتا ہے) ۔ لیکن یہ جیو پران اور پر لنگ سے بند کیا ہے ۔ لیکن تو بھی یہ ارتھ ستھتی پرماتما میں ہی ٹھہری ہے ۔ جیو پران اور [illegible] بند ہے پران اور پر لنگ سے ۔ لیکن اندر کون

(37) ननु = پرنتو एकचिन्मात्रपरमार्थः अपि = اگر ایک ہی چت ماتر حقیقت میں
पुरुषः — ہی پرش ہے (یعنی روح سچی ہے)

विशिष्ट = خاص خاص (مخصوص یعنی کسی کو سکھ اور کسی کو دکھ)

सुख-दुःख-मोह-जन्म-मरणादिमान = ایک کو سکھ ہے دوسرے کو دکھ، غم، جنم، مرن وغیرہ

नानावस्थ वैचित्र्य = اسی نانا پرکار کی اوستھا وچتر

भाजश्च = کا حصہ دار کیوں ہیں इति कथं एतत् = یہ کیسے ہے

جب سب ایک ہی روح میں سے ہیں، سب میں برہم ہی ہے
تو کیوں ایک دکھی ہوتا ہے - ایک سکھی - ایک کیوں اندھا ہے
اور ایک دیکھتا ہے - یہ کیسے؟

درشٹانت इति दृष्टान्तम् आह = اس پر یہ درشٹانت کہا ہے

एकस्मिन = ایک ہی घटगगने = گھٹ آکاش
धूम रजसा = دھوئیں (میل) گرد سے व्याप्ते = دبایا ہوا
भवन्ति = ہیں न च अन्यानि = دوسرے

मलिनानि = [illegible] میلے ہیں तद्वत् = اسی طرح

नृपः = [illegible]

इति जीवाः = [illegible] सुख-दुःख भेद युक्ताः = سکھ دکھ کے بھیدوں سے [illegible]

(265)

اگرچہ ایک آکاش جو ہر ایک گھڑوں میں ہے - ایک ہی ہے آکاش ہے - لیکن الگ الگ قسم میں - جو ایک وہ
برتن میں ہونے سے ہی فرق دکھائی دیتا ہے - اور ان کی ملتا ~~ایک جو~~ رنگ یہ بھی ہی ہیں جو دکھتا ہے - جو
پیدا کرتا ہے - اسی طرح یہ جیو بھی الگ الگ قسم کی ملتی شریروں میں - ہیں - [illegible]

(الگ الگ قسم کے ... برتن میں ہوتا ہے)

گھڑے سب مل جن میں کوئی ایک گھڑا گرد سے بھرا ہے - یہ گھڑے سب میں
(شریر دھات ... ہیں) اسی طرح یہ جیو بھی کوئی زیادہ میل ہی سے زیادہ دھندلی
کوئی کم میل ہونے سے شیشی

(37) 83

यथा = جیسے   एकस्मिन → कुम्भाकाशे = گھڑے آکاش تو

धूलिपुञ्जसमाच्छादिते = گرد کا سمو سے ڈھکا ہے

न अन्यानि → घटाकाशानि = گھٹ آکاش
विमलान्यपि = اور نرمل بھی

آکاشتواویشے = آکاش والے سے نہ فرق ہوتے ہیں

मलिनानि (میلے ہیں) = یہ بھی میلے → जैसा = گرد سے

आच्छादितानि = ڈھکے ہوتے ہیں   भवन्ति = ہیں

→ विमल = نرمل   व्यापक = وہ پھیلا ہوا

नित्यमपि = ہمیشہ ہی والا   हि = کیونکہ

गगने = آکاش   धारणे = الگ ہے

घटसंकोचो = گھڑا سکڑا ہے   संकुचितं भवतु = سکڑا ہوا ہو
(کیونکہ گھڑوں میں قسم قسم کی ...)

तादृशमेव = ویسا ہی جیسا   = ویسا ہی (جیسا)
(مثال) اسی طرح جیسا [illegible]

83

بعد کو یہیں - الفاظ کے بدلے قسم کی خوشبو

(37)

तत भवत = وہ گرد ہے (اس کے گرد کی ہے - [illegible])

न पुनः = نہ ہو सवीया = [illegible]

वہ धर पठा ब्याकाशानि = گرد بادک آکاش

اگر ایک میں دھواں کی کالک پھیلی ہوئی ہو - تو بادل میں بھی نظر آئے گی

میں कृष्णागुरु = کالا ہے गुरुधूपितानि = دھوپ سے گندھی ہوئی ہیں - [illegible] کی ہے

لگی ہے

مृगमदः = کستوری ویرہ उपधिवासितानि = خوشبو سے بسی ہوئی

(کستوری وغیرہ برتنوں میں آکاش کی خوشبو ہوگی) -

विरहगन्धी = ہو دنیا = خوشبو سے بسی

एकप्रकाश = ایک ہو آکاش स्वरप्रकाश = ایک سروپ ہے

ایک ہی آکاش صرف ہو سوں

संकीर्यन्ते = [illegible] - جمع ہو گئے - [illegible] (مختلف گھڑوں میں)

स्वगत = اپنے میں धरादि = گھڑا وغیرہ

مختلف گھڑوں میں جانے سے آکاش الگ الگ قسم کی ہیں - [illegible]

कृत = کیا विदन्यते = سنائی دے

(ان گھڑوں کی) الگ الگ قسم کی خوشبو [illegible]

الگ الگ جانے ہو -

[illegible]

प्रत्युत = بلکہ एकत्रापि = ایک ہی جگہ

गगने = آکاش میں वास्तवे = سچ مچ (جو آکاش ہی ہے) घटादय: = گھڑے وغیرہ

घटादया = گھڑے وغیرہ (اسی میں)

स्वगतानि = اپنے میں भित्ति = دیوار - Screen

संकोच = سکڑاؤ (جو ان گھڑوں ...) नियन्त्रित्साम = بند

सत्ता = استھتی {[illegible]}

नाना = نانا پرکار गगनवैचित्र्यं = آکاش کی وچترتا (... آکاش ...)

प्रथयन्ति = ظاہر کرتے ہیں [...]

इत्थं = اس طرح घटकृतसंकोच = گھڑے ... سکڑاؤ ...

स्व = اپنی गगनतया = آکاش پن ...

एवाभिव्यज्यते = ظاہر ہوتا ہے (...)

तथात्वेन = اس طرح प्रतिक्रिया = ردعمل

कारित्वात = (...)

[illegible]

(37)

83/85

न पुनः = پر گगनस्य = آکاش کی एतत = یہ

किंचित् = کچھ घटगत = گھٹ میں

मालिन्यादि = میلا پن - وغیرہ स्वरूपतिरोधानाय भवति

[illegible]

नापि = نہ ہی परस्पर = آپس میں

घटाद्य = گھٹ وغیرہ अवच्छिन्नानां = [illegible]

गगनानां = [illegible] व्यामिश्रता = میل جول

[illegible]

"तत् वत्" → = اسی طرح → इति = یہی۔

तथैव = اسی طرح अपमी = [illegible]

"जीवाः" → पुरुषा = پرش (जी)

एकचिन्मात्रपरमार्था अपि [illegible]

पारमेश्वर्या = [illegible] मायाप्रतिया = [illegible]

प्रभाव = اثر मायीय = مایا کا प्राकृत = [illegible]

कोशत्रय = تین کوشوں [illegible] प्रवेष्टनेन = اوڑھنے

पूरी = [illegible] व्यापि = ویاپک

ان آنو آدی حاول سے ونچکر چدے آنند گن سروپ با کو کو کر اپنے انگر حد میں لاتا ہے - یہ جیو اتک جن پاتر ہونے پر

+ بھی کوشش تر یہ میں حانے سے بیدف ہو جاتے ہیں - اور تو آتما جو بیر تاش ہے ہے - وہ آتما بن جاتا ہے - اور

سب جیو ایک دوسرے سے اس طرف سے الگ الگ ہیں +

(209)

(37) चिदानन्दैकघनं = چدے آنند گن ہے

स्वरूपम् = روپ

अपहस्त्य = چھوڑ کر — पारिमितीकृता = محدود کرتا ہے (ہی جو آنند محدود ہے) became limited.

येन = جس سے

एकचैतन्यात्मा = ایک ہی چیتن آتما روپ

नाऽपि = کبھی نہیں (یہ جیو)

اپنا مرید — स्वगत = اپنے میں ہی جو فرق ہے

कोपात्रय = تین کوش

विच्छेद = یہ بیدروپ ہے

तारतम = دوار آتما — وارے ہو کر — نوبت

परस्परं भिन्नाश्च = آپس میں بنے ہوئی — ان کا —

घटपटाद्याकाशावता = جیسے گٹ آکاش الگ ہے اور پٹ آکاش الگ —

इत्थं = اس طرح — मायीयकोपाकृतो = مایا کو تین خانے ہے — {یہ جو کوشش ایسا الگ الگ ہے}

بی — विच्छेद इव = یہی بید ہے — جیسا کہ ایسا تر کوشش نے

بی — जीवतया = یہ ہی جو جیوتا ہے — جس — व्यवह्रियते = دیکھا جس کو آتا ہے کہ جس کا آتا ہے —

न पुनः = نہ پھر — परमेश्वरेण = ایشور سے ہے

अनवच्छिन्न = چدانند گن ہے — चिदानन्दैकघने

وہ جو ایسا اور بڑا تن روپ میں ہے

37/

یعنی ہے - جو آپ سمجھا رہا ہے

84/ - اس کو کہا - پرمیشور کو کہا — (जीवाः = جیو →

पुरुषाः = پرش

आत्मानः = آتما   आशयाः - [illegible]

یہ سب جیوں کا [illegible] ہے -

इति [illegible] दृष्टान्तर = [illegible]

दृष्टः

دیکھا ہے یہ کہہ کر [illegible]

कश्चित व्यवहारः

= یہ کوئی بھی [illegible] ہے

[illegible] | स्वम = [illegible] आत्मवादिकोद्भ = [illegible]

विच्छिन्ना = [illegible] = [illegible]

जीवा = جیو   [illegible] रूपनादि = [illegible]

विचित्रकर्मा = [illegible]

महत [illegible] ([illegible]) वासना = [illegible] جو داس ہے

अ = [illegible]

रूपाधिवासित = [illegible]

नानादेहा = اسی سے یہ وہ نانا پرکار [illegible]

دیہہ داری

271

37 86

اُس کرم اور واسنا کارن

नानाप्रायाः = اور نانا پرکار کے انیک روپ والے بھی } بہت سے اور انیک پرکار کے سونے والے } اندر سے لے کر ونا دھارن کرتے ہیں

نانا پرکار کے پاپ = नाना पुराय-पाप = نانا پرکار کے پن اور پاپ

स्वर्ग-नरक-सुख (جیسے) سورگ - نرک - سکھ - دکھ - جنم مرن آدی

दुःख-जन्म-मरणादि द्वन्द्व (دکھ سکھ وغیرہ) ایک جوڑے

भेदमाजश्च = اسی بھید بھاؤ سے ہیں [ان پرکار کے بھید والے جو پرانی شریر سے ہوں]

न फल्यो = نہیں ایک دوسرے سے سمبندھ ← ایک دوسرے سے مختلف ہیں

संकीर्यन्ते = ملتے ہیں - رہتے ہیں -

यथा = जैसे नाना = نانا پرکار کے द्रव्य = چیزوں سے

पाधिवासितानि = سوگندھ والی ہوئی

धरा = گندھ دیکھ کر ہو پर्वादि = بنا ہیں

دیکھتے ہیں - جیسے جس گندھ میں جو پدارتھ رکھے ہوتے ہیں

धराकाप्रात्र = گندھ کا پتر

इति = ऐसे सूः = ऐसे उपपत्रम् = شروع ہوا ہے

९८८) ' एकचिन्मात्रपरमार्थी "

प्रापि - اگر یہ ایک سے ہی ہیں

جو اس عقیدے سے پیدا ہوئی ہے

37/38

جو اسکی اپنی قسم کی ہے

ور स्वविच्छेदात् = اپنی منشا سے

85

(اپنی قسم کی بات / دوسرے سے)

अन्योन्य = ایک دوسرے سے

'भेदानुषङ्ग' = بیدکے سبوں کرتے / میں

(یا یا تعریف سے / اندر بلائے سب / الگ الگ نہ ہونے -)

(38) इत्थम् = اس طرح जीवमण्डलगता = جیو منڈل میں / گئے ہوئے

अवस्थाविशेषा = اوستھا کی وشیش ये = جو

ते = وہ केवले = صرف کیول میں भगवति = بھگوان

उपचयन्ते = بڑھتے جاتے (ایک بڑھتے / بڑھتے جانا)

(بیرونی ... / ... / آگ کی ...)

न पुनः = نہ کہ सम्भवतः = واقعی میں / سچائی سے

ते = وہ पृथक् = ان بھگوان پر

केचित् = کچھ بھی → (ان کو وہ ... / بڑھتے -)

اس طرح پر لا تعداد قسم کی خصوصیتیں (ذی حیات) جو جیو منڈل میں جانے سے پیدا ہوئے ہیں وہ

اس بھگوان پر اکیلے ہی (بڑھتے جاتے ہیں) واقعی میں تو ... نہیں ہے - اس پر بیرونی ...

+

[illegible] جب وقت پہ شانت ہو تو [illegible] - اگر پھر بھی [illegible] - جب [illegible] تو [illegible] گیا ہے۔

85 (38)

प्रशान्ते = شانت ہونے پر [illegible] प्रशान्तइव = شانت کی طرح अथ = یہ (تو اس وقت یہ جو شانت ہے)

दृष्टे = [illegible] (پہلے شانت [illegible]) दृष्ट्वा = دیکھ کر [illegible]

[illegible] - विमोहयति = جب یہ موہ میں [illegible] = [illegible]

तत्त्वगतः = [illegible] سدھا ہو - [illegible] सति = ہوگا

भगवान = جو یہ بھگوان آپ ہے न पुनः = نہ پھر

परमार्थः = سچ مچ (سچائی) स = وہ तथा = اس طرح ہے

اس پرکرتی [illegible] میں [illegible] - ان سے شانتی [illegible] - وہ [illegible]

[illegible] - لیکن [illegible] بھگوان [illegible] -

[illegible] -

"तत्त्वगतो" → इन्द्रियवर्गो [illegible] "प्रशान्ते" =

उपरते सति = [illegible] तद्गतः = [illegible] اس میں [illegible] ([illegible])

परमात्मा = پرماتما प्रशान्ता = شانت

→ नष्ट इव आभिमन्य = [illegible]

[illegible]

(38)
85

एवं तस्मिन = [illegible] 'हृदि' →

सत्त्वाद्रिक्ते = [illegible] स = [illegible] सात-

These are attributes to Him — तथैव = [illegible] उपचयिते = [illegible]

परं = [illegible] तमोमये = [illegible]

मूढे = मूढ [illegible] → मोहवान

= [illegible] ([illegible])

[illegible] - यथा स्थावरयोनौ = [illegible] ([illegible])

न = [illegible] परमार्थतो " = [illegible] →

→ वस्तुवृत्तेन = [illegible] 'स' परमेश्वरः = [illegible]

"तथा" → तेन प्रकारेण = [illegible]

भवति [illegible]

सर्वो हि = [illegible] जडभाग

उत्पाद्यः = [illegible]

भवति = [illegible] . संहार्यो = [illegible]

[illegible]

38/89 नपुनः = پھر نہ   नित्ये भगवति बोधस्वभावे
85 = جو بھگوان نت ہے - اور گیان کی شکل ہے - اس میں پھر نہیں

मायादिकञ्चुकगते = مایا وغیرہ کنچک میں   اگر ہے
اگر کچھ ہے تو   विनाश-उत्पत्ती = وناش اور اتپتی
وناش بھی ہے - اور اتپتی بھی ہے - اسی کو یہ اتپتی اور وناش سمجھے - معدوم
جو کچھ اس گنتی میں آ جاتی ہے - اس کی یہ صورت ہے - گئے آ جاتی ہیں

سمجھ کر اس کی اتپتی اور وناش ہے
इति भगवान् सदासमः = اس طرح بھگوان ہمیشہ سمان ہے

समुत्पत्तिक्रमेण = اسی طرح جو اتپتی ہے اس کرم سے   आगतः = آئی ہوئی
भान्तिः = بھرانتی   पुनः = پھر
ज्ञप्तिक्रमेण = گیان کی صورت میں   सुतरां = اچھی طرح
समुन्मूलिता = اچھی طرح جڑ سے اکھاڑی ہو (گیان کو کر کے یہ بھرانتی)
भवति = ہوتی ہے   ٹوٹ گئی ہو

इति = اس طرح   यत्र = جہاں   स्वात्मन = اپنے سروپ میں

स्वातन्त्र्यम् = سوانترتا   اس وقت اپنے سروپ میں
سوانترتا پایا جاتا ہے = یہی ہے اپنے سروپ میں سوانترتا پانا - 3.

39

(39) यत् = ३ अनात्मन्यपि = [illegible]

86 तद्रूपा = [illegible] अवभासनं = [illegible]

[illegible]

तम पुरा = [illegible] निराकृत्य = [illegible]

[illegible] अनात्मन्य = [illegible] अनात्म रूपा = [illegible]

विगलयति = [illegible] परमात्मा भ्रान्ति = [illegible] ([illegible])

"अनात्ममात्र" → [illegible] चेतन लक्षणा देहादौ

= [illegible]

[illegible] कृप्ता: देहादौ = [illegible]

[illegible] कृप्ता: = [illegible]

स्थूलश्च अस्मि [illegible] ([illegible])

इत्यादि = [illegible]

39

"तद्रूपावभासनम्" [illegible]

86 → अनात्मनि आत्मतया = [illegible]
परामर्शने [illegible]

ततो = ७ → तस्मिन = ७

"पुरा" → प्रागेव = [illegible] निराकृत्य = [illegible]

"एव" = [illegible] चिदानन्दैकघनो = [illegible]

अनवच्छिन्न = [illegible] स्वभावः = [illegible]

स्वतन्त्रश्च = [illegible] = [illegible]

अकृत्रिम अहन्ता स्फुरणाया (३ ७) = [illegible]

कृत्रिम = ~~[illegible]~~ [illegible] देहादि प्रमातृतायाः

[illegible]

अपहृत्य = [illegible]

आत्मैव = [illegible] विगलितदेहबन्धः = [illegible]

देहबन्धः = [illegible]

[illegible]

(39)

86 परमात्मतां यातस्य = [illegible]

सन्

"प्रात्मीन" → प्रसिम्न = [illegible] स्फुरद्रूपे

विश्वपदार्थे = [illegible] [illegible] =

[illegible] [illegible] स्वाङ्गकल्पे अपि

= [illegible]

या : [illegible] "भ्रान्ति" بھرانتی →

اس [illegible]

[illegible] देहादिप्रमातृताभिमान = [illegible]

[illegible]

[illegible] - अनिता = [illegible] ([illegible]) भेदप्रथा

तां = [illegible] ([illegible]) [illegible] = [illegible]

"विदलयति" → [illegible] — [illegible] —

2 [illegible] "अहमेव सर्वो विश्वात्मना

स्फुरामि" [illegible]

[illegible]

39

87 इत्येवं = ایسے ہی । चूरी करोति = چور چور کر دیا ہے
(اس خیال سے اس خیالوں کو چور چور کر دیا ہے)

इदमत्र तात्पर्यम् = اس بات کا یہ مطلب ہے
یہی ہے۔

यावत् = جب تک ; अनात्मनि = آتما نہیں ہے ; देहादौ = دیہہ وغیرہ 3

आत्माभिमानो
= اس دیہہ کو آتما ماننا ہے
اپنی کو آتما ماننا۔

न गलितः = جب تک یہ نہ گل جائے
پگھل جائے - نہ مٹ جائے ; तावत् = تب تک

स्वात्म प्रथारूपे = اپنی آتما کا پرکاش روپ ... ; भेदप्रथामोक्षो = [illegible]
अपि जगति ... ہے [illegible]

मोक्षो = موکش ; न विलीयते = نہ مٹے گا - نہ لین ہو گا۔

अतश्च = اسی لئے ; अनात्मनि = اس دیہہ وغیرہ کی

आत्माभिमान = آتما کا ابھیمان ; भ्रम = دھوکا

विनाशात् = [illegible]

आत्मनि = [illegible] ; अनात्माभिमान भ्रान्ति = [illegible]

(40)
87

परमात्मैव = [illegible] स्वात्म महेश्वरो [illegible]

[illegible] भगवानेव | विनाप्रायात् = [illegible] –

न ,पत्यस्य प्रति सामर्थ्यम = [illegible]

—o—

(40)

एवं = اس طرح भ्रान्तिद्वया = جو یہ دو برانتی ہیں
([illegible])

अपसारणात् = دور کرنے سے ([illegible])

[illegible] परमेश्वरीभूतस्य = پرمیشور بنے ہوئے योगिनो = اس یوگی کو
([illegible])

[illegible] न किंचित् कार्यम = کوئی کام نہیں अवशिष्यते = جو اس کو باقی رہتا ہے ([illegible])

[illegible] इत्यादि = اس نے کہا ہے

इत्थं = اس طرح विभ्रमयुगलक = برانتی کا جو جوڑا ہے

[illegible] समूलं = کل تعلق
विदवेदने = [illegible]

 [illegible]

40 कृताश्चास्य = [illegible] - कर्तव्य = [illegible]

42

अन्तर कलना = [illegible]

न = [illegible] अरतु = [illegible] परयोगिनो [illegible]

भवति = [illegible]

इत्थं - 26 कारिकार्थं = [illegible]

[illegible] प्रतिपादित [illegible]

प्रकारेण

भान्ति द्वयदस्य = [illegible] परस्परविदारणे = [illegible]

कृतार्थस्य = [illegible] → स्वस्वातन्त्र्यस्य = [illegible]

परिज्ञस्य = [illegible]

[illegible] परोध संकोच = [illegible] विदलनात् = [illegible]

"कृतः" → प्राप्तः [illegible] अर्थः → पुरुषार्थलाभो येन

= [illegible] = [illegible]

येन = [illegible] तस्य [illegible] प्रकृष्ट = [illegible]

40/ اس لوح پر جو بہت سے یوگی کو

योगयुक्तस्य = یوگ میں لگے ہوئے کو न = نہ कदाचित = کبھی

"कर्तव्यान्तरस्य" اور کسی فرض کا → तीर्थाटन = تیرتھوں میں پھرنا

या क्षेत्र = تیرتھ یا परिग्रह = گرہن کرنا

दीक्षा = دیکشا जप = جپ ध्यान = دھیان

व्याख्या = یا دیا کھیان کی تشریح کرنا या श्रवणादि = شرون کرنا دیا کھیان

रूपस्थ = اس روپ کے कायप्रोक्ष्य =
([illegible])

"कलना" → मनोव्यापारोऽपि = من کا بھی ویاپار [illegible]

न विद्यते = نہیں ہے [illegible]

[illegible]

44/ रूपयमेव = یہ ہی परो = پرم धर्मो = دھرم

यत् = جو योगेन = یوگ سے आत्मदर्शनम् = آتما کا درشن

इति = یہی हि = کیونکہ स्वात्मयोगस्य = اس آتم یوگ کے

प्रधान्यम् = [illegible]

(283)

(50)

88

प्रेत: = [illegible]   तत प्राप्त्या = اس کو پا کر [illegible]   न = نہیں ہے

अन्यत्र = اور کسی جگہ پر   परिश्रम: = محنت کرنا

کسی کو → पूर्णयोगिन: = پورے یوگی کو   [illegible]

यत उत्तमम = یہی اچھا ہے

यदा = جب   ते = تیری   मोहकलिलं = موہ روپی جو پاپ ہے [illegible]

बुद्धि = بدھی (عقل)   व्यतितरिष्यति = پار کرے گی

तदा = تب   गन्तासि = جاؤ گے   निर्वेदं = ویراگ کو

श्रोतव्यस्य = [illegible]   श्रुतस्य = [illegible]

اسے بڑے پد (ویراگ) کو تم جاؤ گے۔

[illegible] इति गीतासु

संप्राप्ते = [illegible]   पृथिव्यादिमायान्तस्य = [illegible]

भेदावभास भाजो = [illegible]

विश्वस्य = [illegible]

भेदाभेदमय = بھید اور ابھید   3 शान्तभूमिकप्रवेशेन = [illegible]

[[illegible]]   [illegible]

५१/

प्रविशेन = اسی کے اندر اس سے - اسی کی جانب

८१ पूर्णप्रकाशानन्दघन प्रमाभवपद समापत्त्या

= پرکاش پری پورن پرماتما - گیان گن

شانتی ودیا — وہ جو پان ہے - سُو کا سُکھ پان - اُس کو حاصل کرنے سے

भेदविलायनेन = بھید کو لیہ کرنے سے

९ तदभेदमयता प्राप्तिं प्रतिपद्याद्य = بدل کر

وہ ابھید تا (شانتی ودیا) اُس کی پراپتی [illegible] کر

ततः = اس کے بعد प्रमाभवात् पदात् = شانتی پد

(وہ پرپورن ہے) پرپورن परिपूर्ण = پری پورن सुधा = امرت प्रेमभोनिधि = سمندر [امرت سمندر]

کल्पात = الگ ہونے سے (اس میں سے) اس میں اور [illegible]

उत्पन्न = دیکھا جاتا ہے [illegible] महा प्रवाह =

प्रान्त प्रसर = شکتی کی بہاؤ مہا پرواہ

[یہ جو شکتی ہے جہاں اُس کو دیکھا جاتا ہے مہا پرواہ ہے]

[پرواہ میں شکتی پرسار] ٹکڑا ٹکڑا

उल्लास = اُلاس (اُس شکتی پرسار کا اُلاس سے پیدا ہوتا ہے)

प्रमुख = آدی کرتا - وغیرہ

(اُٹھنے والی) اس پرواہ میں [illegible]

तत्तत् = وہ وہ तरङ्ग = لہر (لہریں) اسی کو ساڑی روپا

= رچنا روپا

९ प्रामृश्यत = نمٹا جاتا ہے

[جو کچھ بھی یہ پرواہ آگے ملتا جاتا ہے شکتی ترنگ سے نانا روپا رچنے میں آتی ہے]

(اس بر کی اہمیت و بیلدی کا خود تجربہ کیا) — اپنے ہی انوبھو سے سدھ ہے

स्वानुभवसिद्धं =

41 महामंत्रवीर्यसारं = مہامنتر (اوم) کا وہ سار ہوسٹ → جس سمندر کا یہ سار ہے
طاقت

سمستیا — समस्त भेद विलापन = سارے جو ہے بھید انہی کا جو ہے ناش کرنا

دی — परमाद्वयोदयं = ادوی جو ہے ادوی وہی ادوی ہوسٹ
طاقت
(یہی مہامنتر ودیر ہے)

नर-शक्ति-शिवात्म = جو نر شکتی شو سامرस्यात्मकं = ایک کر دینے والا ہے

[جہاں بھید اگر ہو جاتا ہے — ان میں بھید کوئی نہیں رہتا] جہاں بھید نہیں ہے (نر جیو) (شکتی) (شو) اشد

جہاں ان تینوں کا ایک ہو جانا ہے

دو کو ایک ہے — परसंवित हृदयं = پر سمودت دل ہے — हृदयं = وہی سار ہوسٹ
[پر سمودت کا دل]

कमिरा = ہے (اوم) ڈ- मीयिष्ट = پرکرت میں لاتی
کی اچھا ہوسٹ — اتنا ہی کافی کا جانا ہے

विश्वरूप = اس سب کی شکتی — प्रागमिक = شانت دو
(جس جو کچھ ہیں)

प्राङ्नयात्म = جو ہیں انہ ہی ہے — انہی کا جو — संकलन = گننا

युक्त्या = اس یکتی ہے (اور تو اس پر ہے)

(انہ مہان کا، نی ذات کا (الہی)) — एकाकारं — ایک کی ایک ہی طاقت — नादवाद = خیال اس کا ہے →

41/

(41) पृथिवी = پرتھوی (انش) प्रकृति = پرکرتی (دوش) माया = مایا (دوش)

89/90

९ त्रितयमिदं = (انش) یہ تینوں वेद्यरूपता = یہ ودی روپتا میں पतितम् = پڑے ہیں - (یہ تینوں دوھی میں - لیدا یہ جڑ بھاؤ میں گرے ہیں)

باہمک شاکت پن اچھے — यदैतभावन = (اپنی) ادوت کا بھاؤ نامل ہے (کہ یہ تین ملے ہیں)

भवति = ہوتا ہے हि = کیونکہ یہ سب ہی دیکھو

समान = آپس جاری ہو (یعنی स) परिचितम् = باقی تھا - پرشش

"स" ہو گیا (जो भेदित) Residue

पार्थिव - प्राकृत - मायीय प्राणात्मक = پارتھو - پراکرتی - مایا

यत = ३ स्थूल = استھول (پرتھوی) - اندر دوئے

یہ تین روپ سूक्ष्म ~~स्थूल~~ = سوکشم (پرکرتی) पररूपे = پر (یہ مایا)

त्रिविधं = تین قسم کا یہ تین روپ والی वेद्यरूपता पतितम्

(دوھی میں پڑے ہیں (کیونکہ یہ دوھی ہیں) = دوھی روپتا میں پڑے

ज्ञान जो चरता प्राप्त = گیان کو جو حاصل ہوا

(دوھی کو) - بھاؤ میں گیا ہوا

یہ تین اندر - گیان سے جانے جاتے ہیں

آنو آیا ہے - شفقت آیا ہے - [illegible] آیا ہے

(41) (287) [illegible]

९० तत् तत् = اس اس रूपतया = روپ سے ज्ञान = گیان

बहिरन्तः = باہر اور اندر प्रकाशते = چمکتا ہے

ज्ञानादृते = گیان کے بغیر न = نہیں अर्थसत्ता = [illegible]

ज्ञानरूपं = گیان روپ ہے तत् = اس لئے जगत

नहि [illegible] ज्ञानादृते = گیان کے بغیر भावो = [illegible]

कोऽचित्तद्विषयीकृतः = [illegible] विषय

[illegible] - ([illegible]) [illegible] گیان ہے

ज्ञान = گیان तदात्मतां [illegible]

यातः = [illegible]

यो तस्मात् = اس لئے एव सीयते = [illegible]

इति = [illegible] श्री कालिकाक्रमेण = [illegible]

क्रमेण [illegible]

यद् = 3

"अद्वैतभावेन" [illegible] तत् बलात् = [illegible]

तत् प्रकर्षात् = [illegible] सन्मात्र परिशेषं "

"स" [illegible] residue [illegible]

What is that Residue. १०

मात्रात्मक

[illegible] → प्रकाशमानतात्मक सत्ता = [illegible]

[illegible] "भवति" = ہے "हि" → यस्मात्स्थि — [illegible]

(42) स्तेदेव = [illegible] भेदस्य = [illegible]

[illegible] अवास्तवत्व = [illegible] प्रतिपादन = [illegible]

अभिप्रायेण = [illegible] उपपादयापि = [illegible]

(42) रचना = رسی ([illegible]) कुण्डल = [illegible]

[illegible] करके = کرکے भेदत्यागेन = [illegible]

दृश्यते = [illegible] यथा = جیسا

हेम = سونا ([illegible])

तद्वत् = اسی طرح भेदत्यागे = [illegible]

स-मात्रे = [illegible] सदेव = [illegible] एवमपि

[illegible] = [illegible]

[illegible]

(42) (289) सुवर्णार्थिनो स्थानविशेष = [illegible]

यथा = جیسے   किल = [illegible]   सौवर्णा = سونا

स्थानादिभरणा = [illegible] — परिहारि = [illegible]

हेममात्रतथैव = [illegible] سونا [illegible]   प्राप्नोति = [illegible]

हेम-रजत-कांस्य-ताम्र-नागादि = سونا - چاندی - [illegible] - [illegible] - [illegible]

तावत मात्रार्थिनो = [illegible]   लोहरूपत्या = [illegible]

तद्वत = [illegible]   सर्वम = [illegible]   इदं = [illegible]

त्यक्त = [illegible]   स्नान = [illegible]   प्रधान = [illegible]

[illegible]

विकल्प कलङ्कस्य = [illegible]   = अविकल्प = [illegible]

प्रतिभासमनिष्ठ निबुस्य = [illegible]

योगिनो = [illegible]

42

1) रूपादिषु = رُوپادِک میں   परिणामात् = اُس کے پرِنام سے

صرف چیز کی سدھی ہونے سے - میں [illegible]

तत्सिद्धि = اُس اُس چیز کی سدھی ہونے سے

इति भट्टश्रीकल्लट उक्त नीत्या = کلٹ بٹ نے جو نیتی کہی ہے اُس بھید تیاگ سے

"भेदत्याग" स्याति = جب بھید تیاگ ہوتا ہے

2. "सन्मात्र" सत्तामात्रात्मकम् = صرف ستّا ماتر ہی جھلکتا ہے

"स" → وُہ صرف پرکاش روپ ہی

"प्रभाति" = جھلکتا ہے

(43) तत् = وہی   यतः = اِس لئے   सर्वस्य = سارے کو

संकोच अवभास = سنکوچ کا اوبھاس   परित्यागात् = اُسکے چھوڑنے سے

उपागम प्रसिद्ध्या = شاستروں کی سدھی سے

नररूपस्य = نر روپ کے   وہی   आत्मरूप = اپنے آپ روپ میں جانا

उपआरोहं = اِس سیڑھی پر چڑھنا - [illegible]

महासंप्रदाये = منتر سمپرداے   منتر جو گرو کے — ذریعے [illegible]

(42) [illegible] कटाक्षयन् = [illegible] → [illegible]

91 अभिदधाति → کہتا ہے

(43) तत् = اس کو وہ परं = [illegible] = [illegible]

शान्तम = شانت अभेदात्मकं = ابید روپ

समं = ایک جیسا برابر صبر سے सकलम् = سارا کل

अमृतं = امرت - [illegible] सत्यं = سچ [illegible]

[illegible] शक्तौ = شکتی - शक्ति

विश्राम्यति = [illegible] [illegible] भास्वररूपायाम = پرکاش روپ

तत् = وہ एकत सत्तामात्रात्मकं = [illegible]

सर्वकं = ہر سارا ([illegible]) [illegible]

बृहत्त्वात् = [illegible] - بڑا [illegible] [illegible]

[illegible] ब्रह्म = برہم यदाहुः = کہتے ہیں

श्रुत्यन्तविदः = [illegible]

یہ سارا کچھ جو ست ہی ہے۔ یہ سب ست ہی تھا۔ یعنی ست ہی تھا ہے —

सत इव

९१/९२ ٥٣/ सदेवेदं = یہ سب کچھ یدं = یہ सोम्य = اے پیارے

پہلے ست ہی اग्र = پہلے आसीत = تھا

श्रैत = ویدا पूर्णत्वात = پورنتا → "परम" →

द्वैतोपादेयभावात = لینے دینے کی — (اس) سے دور ہے

९२/ 'प्रदुम्म' = وہی ست وہی ہے

पृथकत्वोपपत्तिमात = ہے الگ الگ ہونا ممکن ہے

'प्रान्तम' = شانت (اکھل آنند - لکھ - گیان - سکھ) کی ممکن ہے —

एत एव = "اس کا" "प्रमेदात्मकम" = اس کو لینے سے

प्रकर्ष-अपकर्ष-भावात — زیادتی — نہ زیادتی

جہاں اس کا ایسا ہو وہ "सममं" — نہیں ہے —

ہو کیونکہ یہ ہی ہے — प्रदूप्रापप्रनिष्क्रमण — یہ اس کا ایسا ہے — "سب" सावरूप्यम् = یہ ساوروپیہ ہے

= اس کے سب اسرار

اس کا سہارا — اس سے یہ ہو ہے

श्रीनाति क्रोन्त — اس سے ہی ہے प्रविविक्तपथ्य = نہ دکھ ہے
اندر نہ دکھ یا کا اس ہے — اس کے نہ دکھ ہو —

(213)

(43)

92 इति स्थित्या = اس حقیقت سے "सकलम्" = سارا

अत एव = اسی لئے "अमृतम्" = امرت ہے

अविनाशि = نہ ناش

सत्यासत्यौ = ست اور اسَت   तु = لیکن

या = جو   भागौ = دو حصے

प्रतिभावे = ہر ایک بھاو پر   व्यवस्थितौ = ٹھہرا ہے

ایک ست ہے دوسرا اسَت

کھاو پدارتھ میں ست اور اسَت دونوں ہیں

सत्यं = ست ہے   यत्तत् = جس کا ... وہ ہے   सा

जाति = ذات

असत्या = جھوٹی   व्यक्तयः = دکھائی   स्थिताः = ٹھہری

وشیش ... نہ ... ہے

ست ... ہے ... جو ... "ہر ... "

وہ دکھائی دیتی ہے

"دکھائی اسَت ہیں"

यदाद्यौ = [illegible]   यदन्ते = [illegible]

मध्ये = [illegible]

[illegible]

43/92

इति = [illegible] तत्रभवत = [illegible] भरतृहरि = [illegible]

निरूपित नीत्या = [illegible] "सत्वं" →

तदैव [illegible] स्वात्माभागात्कम = [illegible] सतत सेव = [illegible]

भास्वरूपायाम = [illegible] →

इच्छा-ज्ञान-क्रियारूप-शक्ति सामरस्यात्मिकायां

[illegible]

परस्यां शक्तौ = [illegible]

विश्राम्यति . [illegible] =

संवित निष्ठा = [illegible] विषय व्यवस्थिति: [illegible]

इति स्थित्या = [illegible] तन्मयी भवति इति = [illegible]

"रूप" कार [illegible]

एष च = [illegible] "शान्ते" = [illegible]

शाकारस्य रूपन्ते → [illegible] यत = [illegible] महीन्द्र

"श" [illegible] "शा" . [illegible] "ष" [illegible] कार "ष" रूप

९३ ततः = ... यत् = ३. "प्रमृतम्" = ...

"स" ... "ब्रह्म" ... सन्मात्र ... मक =

प्रमृत बीज ... सादा रव्यापद् ... स्वशात् ... → सन्मात्र

एतत् एव = ... पूदके = ... (३)

"एतम् इदं सर्वम्" = ... इति ...

सर्व = ... समरसी करणात् = ...

... "सर्वं सकलं" त → ...

एतश्च = ... प्ररव्याति गलनात् = ...

... — "सत्यम्" ... यदा = ३.

एपादि षु = ... भगवता = ...

... तृतीयं ब्रह्म सुश्रोतरा = ... }

६ इति श्रीत्रिपदा = ... कायाम ...

43/44

93

तदिदम = یہ وہ प्रमृती भावा-वमृषु = اور وہی ہو ... وغیرہ ... پر ہوئی ہیں

सदाशिव पद = سداشیو پد پر جو کچھ ہوا

उपास्त्दम एतत विश्वात्मकं = یہی وشو روپ ब्रह्म = برہم

प्राग् उक्तायां = جو پہلے کہا گیا परप्राज्ञौ = پرا شکتی

یعنی جس طرح کہ ... سے ... یہ شکتی ... میں ... ہے

यत्र = اسی پر وہ ... विश्राम्यति

तत न किंचित = ایسا ... کچھ نہیں

(44) क्रिया ज्ञान इच्छा मुखेन = کریا گیان اچھا ... परप्राज्ञौ = پراشکتی ... جو ... سے

اور ... تھا

यत = ۔ न विश्राम्यति = نہ اس میں ٹھہر

तत = वह नकिंचित = وہ کچھ نہیں ہے

یعنی وہ کوئی چیز نہیں ہے جو کہ اس شکتی ... سے اس پراشکتی میں نہ ٹھہرا ہے۔ تو وہ کچھ بھی نہیں +

इच्छत = اچھا ... جانی جاتی اति = ... वेद्यत इति = ... جانا

इति ... संपाद्यते च = ... इति = ...

भास्वररूपेण = ... پرکاش روپ سے

अपरामृष्ट = ... نہ ... یद्यपि = ... तु = ...

नभ: = ... प्रसन्नत्वम = ... خوش ...

अमृत = ... = ... خوشی ... میں ... ہو

297

54

वस्तुवृत्तेन = واستو وِرتین = واقعی

93

यद्वस्तु = جو وستو - جو چیز

बहिर्विद्यमानम् = [illegible] اگر باہر - तत् = وہ यदि = اگر

अपि

इच्छाज्ञानक्रियामुखेन = [illegible] اچھا - گیان اور کریا کے رو سے भास्वरेण = پرکاشمان روپ سے

एतत् = یہ शक्तित्रय [illegible]

सामरस्यात्मक = جہاں [illegible] پراشکتی = [illegible]

स्फारमयेन [illegible]

न = نہ बोधेन = گیان سے (اس)

"न परामृष्टं" = نہ پرامرش ہو → तत् = وہ [illegible]

جو چیز کی اچھا ... [illegible]

परस्था = اپنے آپ [illegible] کی اچھا کرنا उपरस्था = دوسرے کو جان ... اچھا کرنا

विकल्प = دوسرے کی ... [illegible]

گگن پھول ... گगन पुष्पतुल्यम् = آکاش پھول کی طرح ... [illegible]

एतेन च = اس سے بھی सत् वृत्त = [illegible]

ऊर्ध्ववृत्ति = اوپر [illegible]

त्रिशूलात्म = ترشول روپ [illegible]

वृत्तिवीर्य = [illegible]

सूचितम् = اشارہ دیا ہے - اس لفظ "پرامرشم" سے

(45)

94 एतत् = یہ [illegible] पद = [illegible] (اور [illegible]) [illegible]

अभिप्राय

अपरस्थे = [illegible]

अनुवदन् = [illegible] — [illegible]

पुंगवपद = [illegible]

समाप्नुया = [illegible]

तन्मयी = [illegible] ([illegible])

अविभावयित = اسی کو [illegible] → ([illegible])

(45) शक्तित्रिशूल = [illegible]

परिगम = [illegible]

योगेन = [illegible]

समस्तमपि = [illegible]

परमेष्ठी = [illegible]

शिवनामानि = [illegible]

परमार्थी = [illegible] — [illegible]

[illegible] विसृज्यते = [illegible]

देवदेवेन = [illegible]

45 तत् इथं = [illegible] = [illegible] "समस्तमपि"

95/5 → एतत = یہ [illegible] → सत्तामात्ररूपत्वात = ست ماتر روپ ہی ہونے سے

प्रोक्त = کہتے ہیں ब्रह्मपरमार्थी = برہم ہی سچی ہستی ہے

"शक्तित्रिशूल परिगम योगेन" = شکتی ترشول [illegible] سے

निशीत युक्त्या = اس [illegible] (पराशक्तिसमापत्ति = [illegible])

क्रमेण = اس کرم سے — ([illegible])

"भावनामनि परमार्थे" → अनवच्छिन्न चिदानन्दैकघने

परमेश्वरे [illegible] =

स्वस्मिन स्वभावे = [illegible] — اپنا سروپ

"विसृज्यते" = اس میں لین ہوتا ہے — The whole creation comes from that fountainhead

अन्तरमुखे [illegible] اندر کی طرف — निमर्जन प्रकर्षात [illegible] =

اسی میں لین ہوا — [illegible]

तत्समावेशन = [illegible] اسی میں اندر [illegible]

तन्मयीभावम् आपाद्यते = [illegible]

"देवानां" [illegible] ब्रह्मादिसदाशिव = [illegible]

सर्वप्रकाशानाम् [illegible] अन्तानां [illegible]

"देवेन" प्रमुखा - [illegible]

परमशिवेनैक [illegible]

नहि = [illegible] रूप = [illegible]

रूपान्तरस्य = اور کسی کو कर्तृत्वे = [illegible] कस्यचित् =

श्रूयते = [illegible] (اور کسی کو [illegible]) { [illegible] }

नापि = [illegible] एतावतातिरिक्त = [illegible]

अन्य: = [illegible] कश्चित् काचित् = [illegible]

प्रमाता = [illegible] प्रसिद्ध = ہے

अस्यैव च = [illegible] भगवत: = [illegible]

५५ ९५

तत तत = अंश भूमिका = [illegible]

प्रधारा क्रिया : = [illegible]

तत तत रुद्र - क्षेत्र ज्ञा

प्रमोद रूपत्य = [illegible]

[illegible]

इति देवेदेवेन " [illegible]

[illegible]

~~सर्वत्र भावितः~~

इति यत्नेव = [illegible]

उक्तः [illegible]

NB : [illegible]

तदित्थं = [illegible] विसर्गवृत्ति = [illegible]

दर्शिता = [illegible]

एवम इयता = [illegible] भेदात्मनो = [illegible]

नररूपस्य = [illegible] भेद्य भेदात्मक =

[illegible]

प्राक्तपद = [illegible]

अध्यरोहता = [illegible]

प्रमित्रा = [illegible] चित्‌घन = [illegible]

45/95

शिवसामरस्य = اتحاد ہو / سامرسیہ ہے

समाप्ति = اس کی سدھی

उपसंहारदशा = سمہار کرتا ہے

प्रदर्श्य = دکھلا کر

इदानीं = اس وقت

चिदेकघन = صرف ایک چت

शिव एव = شیو ہی

शक्तिरूपता = یہی ہے آپ ہی شکتی روپ ہو کر / شکتی

یہی شیو شکتی اور نر روپ میں سپھورت ہوتا ہے

उल्लास्य = اس میں ظاہر کر

नरात्मक = نر روپ

विश्वरूपतया = وشو روپ

स्फुरति = سپھورت کرتا ہے

न तु = نہیں ہے

शिवव्यतिरिक्तं = شیو کے سوا

शक्तिनरयो = شکتی اور نر کو

किमपिरूपम = اپنا الگ / کوئی روپ نہیں ہے۔

(اس شکتی اور نر کو کوئی اپنا روپ بھی شیو کے بنا نہیں ہے -)

اور کیا

शिव एव तु = شیو ہی ہے

इत्थं = ہوا

निरसा = اپنے ہی آنند رس میں / اکیلا

रूपप्रधानता = اس کا شکتی روپ / Scholar

३०३

وہ اپنے ... کو ... ظاہر ... نہیں ...

۹۵ स्फुरति = ظاہر ہوتا ہے   इति = ایسا

९५/९६ प्रसरयुक्तिं = پھیلاؤ والی نکلے کی شکتی   महामंत्र = مہا منتر

स्फारमयीं = پھیلنے والی

(مہامنتر کا پھیلا ہوا ... "نا" ... ایسا ... ہے) - ظاہر ہے

दर्शयति = دکھاتا ہے { ... } نکلتی ہے - یہ مہا منتر کی ... ہے

(९६) एवम् इयता = اس طرح اتنے سے   महात्मनो नररूपस्य = بڑے روپ ... ہے

अ = وہ ... ہے   ... انسان ...

on Phenomenal Degradation

= وہ ... ہے   = اس ... ہے

= اس ... ہے   ... ہے

पात्र = وہ ...   उप = ...

प्रदर्शी = دکھلانے والا ... جو   इदात्री = ...

= ... ہے   ...

= ... ہے

... آہر

नरात्मना

نراتمک ... روپ ہے

= ظاہر کرتا ہے

तत् = ... ہے   = ... ہے

... ہے

= ...

96/ لودک = پرانتھی صورت   इत्थं = ایسی طرح

निजारसा = اپنے مصیبتوں   वृपा = وہی ہو جاتی ہیں = آگے
زمین جو ہے سو اپنی شکتی کے ذریعہ

= سوان کرتا ہے

शीत = ایسی کے سرشٹی کی

سمجھی = میں شرتی میں نا سب

= دکھلاتا ہے

43

(46) पुनरपि = پھر بھی   पञ्चशक्ति = پانچ شکتی جو ہیں

प्रसरण क्रमेण = اُن باہر نکلنے کا ترتیب   बहिरपि = باہر بھی

तत् = وہ (یہ)   प्रसाउत्रयं = بہ من اندر   विचित्रं = نانا روپ (3 ہیں)

सृष्टं = اپیدا ہوا

बाह्य = باہر   आत्मलाभेन =
اپنے سروپ سے (یعنی آتم لابھ سے)

46/96 चिदानन्द इच्छा ज्ञान क्रिया शक्त्या शक्ति पञ्चक सामरस्यात्मा

= [illegible]

[illegible]

यः = [illegible] परमशिवः = [illegible]

[illegible]

तत्र = [illegible] चिदादि शक्ति प्राधान्य प्रथानात्मक शिव-शक्ति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भूमिका = [illegible]   उन्मीलन युक्त्या = [illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

तत = [illegible] अण्डत्रयं = [illegible] → विचित्र

[illegible]

"तत् तत् भुवन आदि रूपं" → [illegible]

"स्वयं बहिरात्मलाभेन" → बाह्य आभासात्मतया स्वात्मा प्रदर्शनेन

[illegible]

[[illegible]] [illegible] =

46 // पुनरपि → इत्यनेन = اس سے   सततदर्शयति = یہ دکھاتا ہے

96 / यत = 3. परमशिव एव = جو ہی کہ   स्वतन्त्रः = خود اختیار

स्व = اپنے   स्वभित्तौ = اپنی ہی دیوار میں

In his own screen - اپنے ہی پردے میں

विश्वप्रपञ्चोल्लासन - دنیا کو پیدا کرنا یعنی ظاہر کرنا

विलापन = ملانا creation - destruction - اپنے میں ملانا ہے

[illegible] क्रीडा (کھیل) کرنا - 3. پیدا کرنا

स्वात्म = اپنے آپ   प्रातिराक्तिर्य (?)

[illegible] प्रातिरिक्तामिव = ... (دکھانا ہے) الگ الگ ... اپنے سے

[illegible] प्रदर्शयन = دکھاتا ہوا (الگ کر کے)

[illegible] एवम यथा = جیسا   स्थितो = ٹھہرا ہوا (ہے)

न तु = نہیں   ततविरिक्तं = ...

किमपि = کوئی   प्रसरति = پھیلتا ہے

(807)

47/

(47)

97/

इत्थं = یہ طرح وشو उल्लासन विलायन — وشو کو ظاہر کرنا اور لئے کرنا

(ایسا جو کرتا ہے) क्रीडाशीलो — کھیل کرنے والا

शीलो = ... भगवान = بھگوان

यो = جو "शिव:" = شو इति = ایسا व्यपदिश्यते

इति व्यपदिश्यते = ایسا کہا جاتا ہے — ...

स = وہ कतम: = کون سا ہے कुत्र = کہاں ہے وہ

तिष्ठति = رہتا ہے कतमेन = प्रमाणेन = کس پرمان سے

वह प्रसिद्ध: ? = ثابت ہے ? [وہ کس پرمان سے ثابت ہے ...]

इत्याशङ्क्य — ایسا شک کر کے — सर्वेषां = سب کی

स्वात्मैव = خود اپنی ہی — ... = ...

शिव: = شو ہے सर्वत्र = ہر جگہ 3

स्वादिसिद्धतया = ... स्फुरन = ...

वह समीचीन = ... (...) विद्यते. ہے

इति = ایسا प्रस्मत प्राब्द (1st Person). e

3. प्राब्द = ... प्रतिपाद्यते = ...

वाचक प्राब्द: 1, we etc

"..." "अहं"

47/48/49

(47) ४९ इति = ~~~~ शान्ति चक्र यन्त्र = (مشین) شکتی چکر مشینر

९७ क्रीडायोगेन = کریڈا یوگ سے वाहयन् = چلاتے ہوئے — جو چلانے والا

ہے یہی एव = پر ہی - یہی تو

وہ ہے اُن کو प्रहसमेव = ہنستے ہوئے میں प्रहृष्टरूपः = خوش روپ

शान्तिमहाचक्र = شکتی مہا چکر کو नायक = نایک اسوامی

पदस्थः = کھڑا ہو کر اس پد پر [اس نایک پد پر ہی ٹھہرا ہے]

(48) (48) मत्येव = میرے میں भाति = چمکتا ہے - بھاستا ہے

विश्वे = (وشو) سارا جگت

جیسے جل میں स्फटिका इव = نرمل صاف جل میں घटादीनि =
निमले
گھٹ وغیرہ جاتے ہیں (جھلکتے ہیں) - جیسے نرمل جل میں گھٹ وغیرہ جھلکتے ہیں

मत्तः = مجھ سے प्रसरति = پھیل رہا ہے सर्वं = سارا

جل स्वप्नविचित्र = سپنے کی وچترتا इव = اس کی طرح

جیسے سپنے کی وچترتا اسی طرح دیکھتی ہے -

सुप्रात = سویرے (صبح کی طرح) { جیسے سپنے کی گاہکتا / دنیا صبح ہوتے ہی }

(४९) अहमेव = میں ہی ہوں विश्वरूप: = ہر روپ والا - اس دنیا کے روپ والا

९७ کے कर = ہاتھ चरणादि = پاؤں وغیرہ स्वभाव: = سوبھاؤ کی روش

इव देह: = جیسے شریر جیسے شریر کا ہاتھ - پیر وغیرہ انگ کی

ہیں - اسی طرح یہ دنیا کے پدارتھ میرے ہی انگ ہیں -

لیا सर्वे इव रूपास्मिन् = سارے میں (دنیا) अहमेव = میں ہی

स्फुरामि = سوجھتا ہوں کے भावेषु रूपमिव

= جیسے پدارتھوں کے اندر میرا پرکاش رہتا ہے - اسی طرح میں سب جگہ ہوں - سب
پدارتھ میرے ہی پرکاش سے زندہ ہیں

९४ (५०) द्रष्टा = دیکھنے والا श्रोता = سننے والا घ्राता = بو لینے والا (سونگھنے والا)

بغیر देहेन्द्रिय = دیہہ اور اندریوں میں ہی ہوں بھی کرتا कर्तापि

वर्जितो अपि = بغیر بھی

= میں اکرتا بھی ہوں

(میں ہر روپ دھارنے سے کرتا بھی ہوں - اور جیسا کرتا دیکھنے
اور بغیر دیہہ اندریوں کے بھی میں ہی ہوں - یعنی اکرتا بھی ہوں}

सिद्धान्त = سدھانت आगम = شاستر

तरकाम् = ترک بھی विचित्रा = نانا پرکار / دوسی

47-50

98

पूर्वमेव = پہلے (ہی) रचयामि = بناتا ہوں

इति व्याख्यातेन प्रकारेण = اس بیان کئے ہوئے طریقے سے

चिद् आदि शक्ति पञ्चक आक्षिप्तो = (وہ) چت آدی پانچ شکتی [illegible] اپنے سے ظاہر کی ہوئی یعنی اپنے سے سب [illegible]

یہ अनन्तो = لا محدود [illegible] यः = جو وہ शक्ति समूह (شکتی سمودہ)

[یہ سارا [illegible] شکتی [illegible]]

तदेव = (وہ) وہی (شکتی سمودہ) — یہی یا यन्त्र = مشین (مشین)

اسی क्रीडायोगेन = کھیل کے ذریعے

वाहयन = چلاتا

کہ جال अरघट्ट घटी यन्त्र न्यायेन

ارہٹ کے [illegible] کی طرح سے

सृष्टयादि = سرشٹی آدی کو उन्मज्जन = ابھارنا - ظاہر کرنا

निमज्जन = ڈبونا हेला = [illegible] क्रमेण =

"[illegible]" [illegible] ([illegible]) اسی کرم سے

ہم سب ہیں ← हन्ता = مارنے والا / توشتہ ہیں — हताहत = مرے ہوئے / مارنے والے ← प्रागहत — [پراواک شبد +] ← نہیں مرا +

(311)

47-80

98 विपरिवर्तयन् = پھراتا ہوا - کون ہے ... प्रहमेव = اہم ہی
इति →

"देव:" → پرکاش روپ - کریڑا شیل - جو ہے सर्व प्राणिनाम्
= سب جیووں میں پھرا ہوا

→ کون "प्रहम" इति = "اہم" روپ میں →

جو ہے کون سے प्रनाहन्ता = (نادیہ) اہم ہے ... नादात्मा = شبد روپ =
[پراواک بھی ہے - (جو شبد کے ... سمجھئے) یہی ہوئی اہمتا ہے]

وہ ہے جو पराहन्ता चमत्कार सार: = جس کا پرکاش ہی چمتکار ہے — وہی ہے स्वात्म परामर्श:
وہ صرف سوآتم کا ہی پرامرش ہے -

स एव सर्वस्य = وہی ہی سب کا अप्रह्नवनीयो = نہ ہٹنے والا
"کون انکار کرتا ہے اس سے - کہ "میں بھی ہوں" - کوئی نہیں کہتا ہے کہ "میں نہیں ہوں" (نہ انکار کرنے)

एष: = یہی ہے (پرکاش پرامرش) स्वात्मेव = سوآتم ہی

"देव:" یہی ہے دیو → क्रीडाशील: = کریڑا شیل

स्फुरति = یہی فرما رہا ہے سب میں इति = ایسا

अनेन = اسی سے، स्वस्वरूप = اپنے روپ سے - سو سروپ میں پھیلا

शिव: = یہی ہے شیو इति = ایسا ہی विश्व एव प्रतिपादितम् = یہ سب ...
یہ بات کو اوری سمجھ ہی ہے - اس میں
برہمانڈ کی ...

47-50
98

तथा = جیسا प्रबुद्धरूपः = بیدار ہوئے →

कल्पना = کلپنا کی, प्रतिक्रान्त = اس سے دلنگت گیا ہوا
गोचरः = دِشے

لیکن یہاں کسی دِشے کی کلپنا نہیں ہے

प्रत्ययः = بعد ہی "प्राचीनां" → پرانوں کا

جو ہیں करसास्वतानां = شدہ ہوئے دیوتا (سب دیوتا)

विषया इतरा त्यागादि व्यवहार स्वतन्त्र-दातृ
لہذا یہی ہیں دِشے جو گرہن کرتا ہے - یا تیاگ کرتا ہے - اور

(...) - جو دیتے والے ہیں - اس کا جو سوتنتر ہے - اس کا جو دینے والا ہے

[یہ سب انکو دینے والا دیوتا کو سوتنتر دیتا ہے - میں دینے والوں کو
گرہن بھی کرتے ہیں - اور تیاگ بھی دیتے ہیں]

यत् = 3. "महचक्रनायकपदं"
= مہا چکر کا جو سوامی ہے اس کا جو پد ہے -

तत्र = اس میں विश्रुति = جو مشہور ہے

"तत्स्थ" لہذا اس پر ٹکا ہوا यतः = جو انکا ہے

47-50

करणशक्तीनां = جو بیدار شکتیاں ہیں

99 चैतन्यविश्रान्तिं विना = اس چیتن وشرانتی میں ٹھہرے بغیر

اس میں ٹھہرے بغیر سروپ کی ستا ہی نہیں

स्वरूपसत्ता न विद्यते = ان سب کی سروپ ستا نہیں ہے — (جب ان کا چیتن پر قرار ہے)

یعنی سروپ قائم رہنے کی ستا

अतः = اس لئے ؛ शक्तिमनन्तमेव = اسی شکتی مان پرش کو / اسی بھگوان کو

स्वरूपासादनाय = سروپ پراپتی کے لئے — (جیسے آتم دکھیام نہ ہے)

अनवरतं = نت ؛ भजन्ते = سیون کرتے ہیں

اسی پرم شو کو (سروپ پراپتی کے لئے) بھجتے ہیں

इत्यनेन = اس سے ؛ اسی سے ؛ सर्वप्रमातृहृदयाधिष्ठातृत्वात्

سارے پرماتاؤں کے ہردے کا ادھشٹاتا ہونے سے

भगवतो = اس پرم شو کو ؛ नियतभुवनाधिष्ठातृत्वं

= یعنی شکتیاں جو بھونوں کا ادھشٹاتر ہے (یہ معنی ہے — جو ہر بھون کا ادھشٹاتا ہے)

परिहृतम् = وہ ہٹایا ہے [بھگوان کو ہی]

جب ہم یہاں جانا تو ہر ادھشٹاتا کا ہی رہتا ہے —

یہ حد کی ہوئی شکتیوں سے دکھ ہے

47-50

तथा = [illegible] 'मत्तः यत् = ज़ि. इदं = یہ

99 किंचित् = [illegible] विश्वतया = [illegible]

[illegible] अभिमते = [illegible]

तत् सर्वम् = [illegible] आदर्शे प्रतिबिम्ब न्यायेन

[illegible]

'मय्येव भाति' = [illegible] →

[illegible]

व्याख्यारूप आसमन्तात् अर्थ विश्रान्तमेव

परस्मि [illegible] =

[illegible]

→ परन्तासारमेव स्फुरति

=

([illegible]) - [illegible]

तथा = [illegible] "मत्तः" [illegible] →

पूर्णोत 'अहम्' इति - [illegible]

[illegible] ←

[illegible] स्वात्मनः = [illegible]

47-50
99

सकलं = سارا   निष्प्रपञ्चमिदं = یہ ساری کائنات

इदं = یہ   विश्वं = دنیا

"प्रसरति" = پسار کرتا ہے - نکلتا ہے دکھتا ہے, प्रमातृ अपेक्षया

अपह्नुततया = پار فرق (اسلیے) جو ہے اسکے ڈھانپنے سے
جو فنا ہوتا ہے - یہاں اندر کوئی پرماتما کی اسلیت نہیں ہے - یہاں اپنی
سنسار آپ سے پسار کرتا ہے]

कथं ? کیسے

इति आह = اسطرح کہا ہے   "स्वप्नावैचित्र्यमिव सुप्तात" → جیسے کوئی سویا ہو

سپنے جو ہے کا کیا پرماتا اسطرح سوئے ہوئے کا (جو سویا ہو) وہ دکھتا ہے
وہاں کسی پرماتا کی ضرورت نہیں - یہ سپنے خود ہی اپنے بنتے ہیں)

इति = اسطرح   यथा = جیسے کہ

جیسے کوئی پرماتا نیند میں سویا ہو   निद्रितात् = نیند میں جو ہوتے ہیں   सुप्त स्वप्नावस्थायां = اس سپنے کی دشا میں

प्रमातृ = پرماتا

बाह्यपदार्थाभावे = باہر کے پدارتھ نہ ہونے پر
अपि = اسکے ابھاو سے
[نیند میں اندر تو باہر کے پدارتھ نہیں ہیں -

47-50
/
99

نگر پुर-प्राकार-देवगृहादि = پُر - قلعہ - مندر وغیرہ

3. سپنے پدارتھ [illegible]

नानाश्चर्य

स्वप्न पदार्थवैचित्र्यम् = سپنے پدارتھوں کی رنگا رنگی [illegible]

?,पविद्यादि परिकल्पित कारणान्तर अभावात् = اودیا وغیرہ جس کا لپنا ہے جو اور اور کارن اُن کا نہ ہونے سے

(یہاں وہ کچھ نہیں ہیں) [illegible]

[illegible] स्वसंविद उपादानमेव = صرف یہاں سموت ہی [illegible]

اپادان ہے - ان سب [illegible]

प्रसरति = وہی پھیلتی ہے

(صرف وہ چِت روپ ہی سب کچھ اس سپنے میں ہے)

तथैव = ایسے ہی / तीर्थान्तर = اور اور مت والے

नियम्मित [illegible] कारणान्तर =

اُن کا کارن [illegible]

अनुपपत्ते = اُن کا نہ [illegible] (وہ [illegible])

अनवच्छिन्न चिदानन्दैकघनात्

اسیم ہے - [illegible]

47-50

100

[illegible] । रूप हम इति रूपात् — [illegible]

विश्वम् = وشو

तथा = ویسا ہی । "अहमेव विश्वरूपः"

इत्यादि = وغیرہ وغیرہ — میں ہی وشو روپ ہوں

अहम् इति इव = [illegible] यः = جو पुरी चैतन्य परामर्शः = پورن چیتنیا کا پرامرش (یعنی اہم ہے) — جو ہے

एष एव अस्मि = یہی میں ہوں / وہی میں ہوں

[illegible] नानादेहादि प्रमातृ समापन्नो विश्वरूपः = نانا پرکار دیہ وغیرہ میں ... پرماتر کا بھاؤ اس کو پراپت ہوا ہوں "میں" اسی سے میں وشوروپ ہوں

रूपा - गोपाल - बाला - अङ्गना - दिषु = [illegible]

रूप-तरप्रभेदेन = [illegible] स्फुरणात् = [illegible]

[illegible] विप्रवानि = [illegible] ममैव = [illegible]

स्फारिता = [illegible]

[illegible] → क इव = [illegible]

47-50

100 कर-चरण-प्रादि स्वभावो = ہاتھ پیر آدی کے سوبھاؤ दैह इव = شریر کی طرح

جیسے اس شریر کے ہاتھ پیر انیک ہیں

यथा = جیسے समसामान्येनः = سب سامانیہ سے

سب میں ایک جیسا ہونے سے

सर्वेषाम् = ساروں میں एकोदेहः = ایک ہی شریر

करचरणादिस्वभावः = کر چرن آدی سوبھاؤ والا

प्रति प्रमातृ = ہر ایک پرماتا کو स्वालक्षण्येन = اپنا اپنا (لکشن ہونے سے) الگ الگ ہے

नानारूपः = اس طرح نانا روپ

तथैव = ویسے ہی एकश्चैतन्यलक्षणः = ایک ہی چیتن لکشن والا ہے

पदार्थः = ... ہے سर्वावासत्वात् = ساروں میں بسنے سے

اپنی ہی ہے विश्वरूपः = وشو روپ

तथा = ویسے ہی सर्वस्मिन् = سب میں

→ प्रमातृ प्रमाण प्रमेय रूपे अस्मिन् = پرماتا روپ - پرمان روپ - پرمیہ روپ وشو میں ہے

(47-50)

100

अहम् "अहमेव स्फुरामि" [illegible]

([illegible])

[illegible] → सर्वस्य = [illegible] स्वात्मानुभवितृत्वेन [illegible]

- [illegible]

प्रकाशनात् = [illegible]

कथं ? [illegible] →

"भावेषु भास्वररूपमिव" [illegible] यथा = [illegible]

([illegible]) [illegible]

नानावस्तुषु = [illegible] "भास्वररूपम्"

[illegible]

→ "प्रतिफलनेन" = [illegible]

द्योतनशीलं = [illegible] ([illegible])

वस्तु = [illegible] देदीप्यते = [illegible]

तथैव = [illegible] जडजगत्सु [illegible]

एकश्चिद्रूपो ऽहम् = [illegible]

- [illegible]

(47-50)

دیکھنے والا - سونگھنے والا - ...

प्रत्यक्ष = ظاہری طور پر   द्रष्टा इत्यादि وغیرہ ⟶

100/ "देहेन्द्रिय वर्जितोऽपि = بدن اور اندریوں سے خالی ہوا - ہوا

(یعنی ان کے بغیر) - بھی

⟶ चिन्मूर्तित्वात = چیتن روپ ہونے سے ہونے کی وجہ سے

अहमेव = میں ہی   पश्यामि = میں دیکھتا

शृणोमि = میں سنتا   जिघ्रामि = سونگھتا

रसयामि = میں چکھتا   स्पृशामि = میں چھوتا

इति = ایسا   सर्वत्र = ہر جگہ   पूर्णाहंता-

विश्रान्ते - یعنی اپنے آپ میں پورن اہنتا میں آرام

ایسی कृतकृत्यता = "کامیابی حاصل ہو"

देहेन्द्रियवर्गो = جسم اور اندریوں کا مجموعہ   हि = یقیناً

"पश्यामि" = 'دیکھتا'   मन्यते = مانتا

पर = لیکن   स्वाप = نیند   = प्रस्वस्थास्

یعنی ... - سونا وغیرہ ... حالتوں میں

(47-57) 100 (321)

[illegible] کہا گیا

दृष्टृत्वाद्य भावात् = دیکھنے وغیرہ کا نہ ہونے سے کہا گیا = [illegible]

तस्मात् देहेन्द्रियादि समुल्लासकः = وہی - سب کا پرکاش کرنے والا - اسکو ہی آتما مان کر کہتے ہیں

तत्र वर्जितोऽपि = اس سے الگ ہی

चिदानन्दैकघनः = صرف چیت آنند ایک ٹھوس ہے

सर्वभूतहृदयान्तरचारी = سب بھوتوں کے دل کے اندر رہتا ہے

विषयोपभोगभोक्ता = وشئے بھوگ بھوگتا (اس کو چھوڑ کر [illegible])

अस्मत् शब्द वाच्यः = اسمت شبد کا وچیہ [illegible]

परः = وہی (آتما) جو پرم ہے

[illegible] → परः परः एव = وہی پرم آتما ہے

तथा च श्रुति = ویسی شروتی بھی کہتی ہے

अपाणि पादो = نہ ہاتھ ہیں نہ پاؤں ہیں (اس کے)

जवनो = دوڑنے والا تیز رفتار

गृहीता = پکڑنے والا

पश्यत्य = دیکھتا ہے

अचक्षु = آنکھوں کے بغیر

47-50

१०७ स = वह (इस प्रकार) शृणोत्य = سنتا ہے अकीर्तः = [illegible]

स = वह वेत्ति = جانتا ہے वध्यं = [illegible] = [illegible]

[illegible] तस्य = اس کا

?प्रसिद्ध = ہے वेत्ता = جاننے والا ([illegible])

[illegible]

तम = اس کو ?प्राहु = کہتے ہیں ?प्रयाये = [illegible]

पुरुषं = پرش महान्तमं = بڑا

([illegible])

तथा श्रोत्र = [illegible] प्रकृतीपि = اگر [illegible] ہے

सिद्धान्तागम = [illegible] - [illegible]

स्वयम = خود विधातापि = [illegible]

देव-मुनि-मनुष्याद्या प्राया विदुः

دیو-منی-منش آدی [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

संक्षेप = مختصر विस्तार = تفصیل [illegible]

विवक्षया = [illegible]

?पठत = [illegible] प्रतिभासस्वरूप =

[illegible]

101

→ [illegible] = [illegible] सिद्धान्तवादी [illegible]

नानाश्रयीत्व = [illegible] करोमि = کرتا ہوں

च = [illegible] पुन = [illegible] जडानां = جڑ

लोष्ठस्थानीयानां = [illegible] → देहेन्द्रियाराम

तत्त्वज्ञानां = [illegible]

प्राकट्यम = [illegible]

इति = [illegible] तत = اس

व्यवधानेन = [illegible]

[illegible] सर्वप्रमा = [illegible]

शानिभिता इति = [illegible]

अनेन पराकृतास्वरूपस्य = [illegible]

स्वात्ममहेश्वरस्य = سوا تم مہیشر

सत्तायां = [illegible]

न प्रमाणम् = [illegible]

उपपद्यते = [illegible]

[illegible]

324

[illegible]

47-50

101/102.

इत्युक्तं स्यात् = اسے کہا جائے گا

एवम् = [illegible]। अनपह्नवनीयः = [illegible]

"अहम्" = [illegible]। इत्येवम् = اسی طرح

अनुभवितृतया = تجربہ کرنے والے۔ सर्वेषां = سب کی

स्वात्मैव = [illegible]। प्रायः = تو

सर्वत्र = ہر جگہ। अवस्थितः = ٹھہرا ہے

सर्वप्रमाणानां = سارے پرمانوں میں

आदिसिद्धः = پہلے سے سدھ ہے

اسکو پرمان کی ضرورت نہیں - کیونکہ پرمانوں کا کرتا وہی ہے

—o—

102

(60) तदेव = [illegible] व्याख्यातेन = [illegible]

"सर्वं ममायं विभवः" = [illegible]

इति द्वाद्येन = [illegible] स्वात्मन = [illegible]

प्रतिवमृष्यान = [illegible] परब्रह्मस्वरूपो = [illegible]

योगी भवति – [illegible]

(61) इत्थं = اس طرح द्वैतविकल्पे गलिते = [illegible]

प्रविलङ्घ्य = [illegible] मोहनी मायाम =

[illegible]

सलिले सलिले = [illegible]

क्षीरे क्षीरमेव = [illegible]

ब्रह्मणी लयी स्यात = [illegible]

([illegible])

अनेन प्रकारेण सर्वो अहंभाव परिशीलनयुक्तया

([illegible]) =

"द्वैतविकल्पे गलिते" [illegible] → भेदप्रथायां

विलीनायां = [illegible]

"मोहनी" = → माया प्रविलङ्घ्य = [illegible]

[illegible] मध्या अनात्मनि = [illegible]

[illegible] आत्माभिमान [illegible] ← अख्याति

[illegible] रूपाम् भेदप्रथाहेतुम् = [illegible]

[illegible] [illegible] - [illegible]

"अहमेव विश्वात्मा" - میں ہی [illegible] =

इति = [illegible] संकोचापसरणेन

[illegible]

समुत्सृज्य = [illegible] ज्ञानी = [illegible]

"ब्रह्मणि" [illegible] → बृहदात्मके प्रत्यक्

=

[illegible]

चिदानन्दैकघने = [illegible]

स्वरूपे

103

51) "लवीस्यात" → [illegible] →

संकोचविलयाद् [illegible] =

[illegible] → ब्रह्मताद्दात्म्यं [illegible]

यायात् = [illegible]

किं [illegible] यथा = [illegible] इत्यादि = [illegible]

[illegible] → "सलिले" = [illegible] "सलिल" = جل

→ उद्धृते [illegible] नानाघटादिभिः [illegible]

जलं = جل क्षीरं = دودھ

विविधघटावलय [illegible] वकुलेयाश्च

अनेक = [illegible] गोसहस्र [illegible] सौमित्र = [illegible] =

([illegible])

पुनरपि = [illegible] घटघटावलयादि = [illegible]

कृत = [illegible] भेद = [illegible]

[illegible] संकोच [illegible] परिक्षयात् [illegible]

"सलिले सलिले" [illegible] पृविष्टं = [illegible]

(51)

क्षीरे क्षीरं = دودھ میں دودھ वा = یا

इत्येकमेव तत् वस्तु = اس سے ایک ہی وہ وستو

न तत्र भेदः = نہیں ہے وہاں فرق ہے ۔

स्फुरति وہاں کوئی بھید نہیں رہتا ہے

तथैव = ویسے ہی देह प्राण पुर्यष्टक शून्यात्मक

اس کا جو اول ہے — والا جو آتم بدھی تھی = اس کو برتنا (دیہہ پران) – پوریشٹک برتا کو شونیہ روپ (سوکھشم) –

اس کو یہ بناتا — प्रत्यगमिपरा ~~सम्पन्न~~ = جو کچھ ہے سو وہ درشٹی ہے پر برتا ہیں
براڈرشٹی تھا – جس سے یہ اپنے آتما کو سمجھتا تھا

भगवान = (شری بھگوان) ایسے ہی فرماتے ہیں ؟ ब्रह्मैव = برہم ہی

सम्पद्यते = ہو جاتا ہے – ہو جاتا ہے

یہی گیا ہے دودھ ڈال کر پیارا

دریا کا اچھالنا (جانا) ہی تا ہو جب [illegible] اندر گویا صرف نرمل جو سمندر ہی (گیان) باقی
[illegible] جب سمندر کو اندر سمیٹ کر [illegible] - تو [illegible] ایسا [illegible]

(51) (329)

جو اب میں بھاستا ہے +

103 अते = اندر تو देहे = دیہہ میں पत्ये = جاتا ہی تو

द्वीप = جزیرہ (دیہہ [illegible]) भेडगो = جو [illegible] ہی [illegible] ہو

प्रतिकर्तव्य = [illegible] निर्मल = نرمل बोसिन्धौ =

ایک ہی ندی - گیان

جو باقی صرف نرمل جو سمندر ہی رہتا ہے -

पयावत्यै = [illegible] میں لاکر

इन्द्रियग्राम = اندریہ سموہ کو तु = لیکن

अपन्धे = اندر (انکو باہر نہ جانے دینا)

انکو اپنی بنانا - قابو کرنا

विश्वात्मा = [illegible] त्वं = تم

नित्य = ہمیشہ एको = ایک ہی

प्रभासि = بھاستا ہے

جو [illegible] میں [illegible] ہے

(52)

[illegible]

एवं = اس طرح ब्रह्मसत्ताम = [illegible]

अधिरूढस्य = [illegible] योगिनो = [illegible]

[illegible] द्वन्द्वाभिवमो अपि = [illegible]

ब्रह्ममय एव = [illegible]

न = [illegible] स्वरूप विप्लो पाय = [illegible]

प्रगलभता = [illegible]

[illegible]

(52) इत्थं . اس طرح तत्त्वसमूहे = تتوں کے مجموعے میں

104/

भावनया = بھاونا سے शिवमयत्वम् = شومئے ہونا کو

,,अभियाते = گیا ہو (بھاونا سے ...)

→ جو شخص شو کی صورت حاصل کرے اس کو

कः = کون शोकः = شوک / غم मोहः = کیا ہو سکتا ہے اس کو

सर्वं = سارا ब्रह्म = برہم کو

,,अवलोकयतः = دیکھنے والے (شو درشٹی سے)

کیا اس کو ہو سکتا ہے شوک -

एवं निरालीतेन प्रकारेण = اسی طرح ... طریقے سے

गलितकञ्चुकबन्धस्य = گل گیا ہو کنچک کا بندھن

योगिनः = یوگی کے "तत्त्वसमूहे" = تتوں کے مجموعے میں

व्रातः = گروہ

→ भूतविषयेन्द्रियव्राते = بھوت، وشے اور اندریوں کے مجموعے میں

"भावनया" بھاونا سے → सर्वमिदमेका स्वसंवित्

= ... ایک ... سمجھنے ...

इति = ایسا इदं = یہ = ... प्रतिपत्त्या جاننے سے

53) "प्रियवमयत्वं" = [illegible] प्राप्त = [illegible] →

104 परमात्मस्वरूपतां = [illegible] यात = [illegible]

शोक मोह उपलक्षिता [illegible]

द्वन्द्वाभिभाव: = [illegible] "सर्वम्" = سارا

→ इदं तत्त्वज्ञात = یہ سارا [illegible]

"ब्रह्म" → [illegible] पश्यतोऽस्य = [illegible]

पश्य = [illegible] न = نہ

केचनैव = [illegible] त = وہ

[illegible] ब्रह्ममयत्वात् = [illegible] स्वरूप (रूपा) = [illegible]

इति = [illegible] न = نہ सदाय [illegible]

प्रभवन्ति = [illegible]

- یہ سارا [illegible]

[illegible] -

53/104

(53)

ननु = [illegible] परमात्मज्ञ = [illegible]

ज्ञानिनो = [illegible] अवबुध्ये [illegible]

स्थिते = [illegible] शरीरेऽपि [illegible]

तत् हेतुक = [illegible] कर्माकर्म

फलं = [illegible] संचयः = [illegible]

किमिति न = [illegible] स्यात = [illegible]

[illegible] ?

इति = [illegible] परिहरति = [illegible]

(53)

105 कर्मफलं = [illegible] शुभं अशुभं = [illegible]

मिथ्याज्ञानेन = [illegible] ([illegible]) [illegible] संगमादेव [illegible]

= [illegible]

[illegible] विषमो = ناہموار یعنی ایک سا [illegible] हि = [illegible] संक्रदोषा = [illegible]

[illegible] तस्करयोगादपथ्य = [illegible]

अतस्करस्येव = [illegible]

अश्वमेध = [illegible] = ब्रह्महननादि = [illegible]

रूप = [illegible] पुण्य अपुण्य = [illegible]

[illegible] कर्मफल = [illegible] = [illegible]

प्रचय = زیادتی ([illegible]) संचया = [illegible]

[illegible] मिथ्याज्ञानेन = [illegible] [illegible] संगमादेव = [illegible]

پرادربھاؤ ہو جاتا ہے — प्रदुरवभाति = ظاہر ہوتا ہے – پرادربھاؤ ہوتا

अहं शरीरी = شریر ہی آتما ہے (یہ جب اودیا سے ہوتا)

ہے – جب آتما پر شریر کا آروپ ہوتا ہے – آتما میں ہی ~~[illegible]~~ کریا کرتا ہے –

کو سمجھتا ہے — इदम् अश्वमेधादि اشومیدھ آدی یگیہ وغیرہ — मम = میرے

उपायतया = اپائے کے طور — अस्तु = ہوں

इति = ایسا — یہ جو ہے यत् अनात्मनि = جو نا آتما ہے – یعنی شریر پر

आत्माभिमान पूर्वकं = اس پر آتما کا ابھیمان کر کے

وہ اس کا — आत्मनि = آتما پر — اس پر अनात्म अभिमान

लक्षणो = وہ لکشن ہوتا — वैपरीत्येन ज्ञानं = الٹا جاننا

یہ ہے مجھ کا گیان – چیزوں کو الٹے طریقے سے جاننا –

ویپریت گیان — तेन = اس سے – ویپریت گیان — या अभि प्राकः = جو پہلا ابھی تھی

तस्मादेव = اس سے — पश्चात् = کو یہ سمجھے

اس سے — शुभाशुभकर्मफल = شبھ اشبھ کرموں کے پھل کا

संचयो = سنچیہ ہوتا ہے –

53

येन = [illegible] अनवरत = [illegible] अधिवासित := [illegible]

संसारक्लेशभाजनं = سنسارک کلیشوں کا برتن [illegible] भवति = [illegible]

ननु = [illegible] क्लेशात्मकस्यापि = [illegible] प्रमातृ = [illegible]

किमिति = [illegible] ~~एव~~ एतावता = [illegible]

पशुत्वमा = [illegible] याति = [illegible]

इत्यत्र = [illegible] अर्थान्तर = [illegible]

उपक्षिपति = [illegible]

"विषमोऽहं" इत्यादि [illegible] → यस्मात् = [illegible]

"सङ्गदोषः" = سنگ دوش → सर्वथा = [illegible]

अविबाद्ध = [illegible] यथा = [illegible]

असाधुयोगो = [illegible]
([illegible])

अत्यन्तसाधु = [illegible] अपि = [illegible]

[illegible]

106

[illegible] — स्वरात = اپنی مرضی سے — दोषस = قصور سے

मपिरेव

करोते = کرتا ہے — सम्पिरांरु = [illegible]

([illegible])

तथैव = اسی طرح — शुद्धस्यापि = شدھ کو بھی

प्रमातुः = [illegible]

[illegible] — प्रख्याति = [illegible] — जनिता = پیدا ہے

मोहयोग = موہ جوگ — पशुत्वम आपादय = پشو بنا کر

शुभाशुभकर्म संबन्धं ददाति = شبھ اور اشبھ کرم کا سمبندھ دیتا ہے

54 — जन्म मरणाद्यपि = جنم مرن آدی بھی = نہ

ब्रह्मरूपस्य = برہم روپ ہونے کو ([illegible])

यदपि तु = اگرچہ — मायाप्रमातृ = [illegible]

शामिव = [illegible]

[illegible]

54

102 (54) लोकव्यवहार = لوک ویوہار   य = جو   इह = اس لوک میں
कृते = کے لئے

अविद्याम उपासते = (اس اودیا (اگیان) کی سیوا کرتے ہیں   मूढा = مورکھ لوگ

ते = وہ مورکھ لوگ   यान्ति = جاتے ہیں   जन्ममृत्यु = جنم مرن

धर्माधर्म = دھرم ادھرم   पुद्गल = جیو - آتما

बद्धा = بندھے ہوئے   [اگیان سے ... دھرم ادھرم ...]

ये = جو   प्रमातारो = پرماتا   देहात्ममानिनो = دیہہ کو آتما ماننے والے

भूत्वा = ہو کر - بن کر   फल-कामना कलुषिता = پھل کی کامنا سے میلی ...

लोकाचाररूपां = لوک آچار روپی
(... - ...) ... पुण्यापुण्यमयीम = پن - پاپ والی ...

(left margin:) دھرم ادھرم ... جیو ...

54 (338)

[illegible] भेद प्रथारूपां मायां

"अविद्यां" [illegible] →

106 (ii) जगति = دنیا میں स्वर्ग नरकादि फल = [illegible]

प्राप्य = حاصل کرنے उपायत्वेन = [illegible]

सेवन्ते = کرتے ہیں - [illegible]

(iii) "ते मूढाः" وہ مورکھ → [illegible]

पुण्यापुण्य = پن - پاپ

निगडबद्धा = [illegible]

तत्फल = اس کا پھل उपभोगाय = [illegible]

पुनः पुनः = بار بار जायन्ते = پیدا

म्रियन्ते च = اور مرتے इत्यप्रकार = [illegible]

संसारक्लेश = [illegible] भाजो = [illegible]

भवन्ति = ہوتے ہیں न पुनः = پھر نہ

प्रक्षीण मोहावरणा = [illegible]
विगलित [illegible]

آگیان سے جو سب کارم دھرم ادھرم سبب کاروں سے سنچت کیا ہوا ہے - وہ صرف سب تال بیش نہیں کی کوئی
روئی کا ڈھیر ایک چنگاری سے نشٹ ہو جاتا ہے - اسی طرح کرم سنچت فوراً گیان روپی چنگاری سے فوراً نشٹ
ہو جاتے ہیں +

56/55

(339)

ہو کر دبتا ہے विगलित = گرتے ہوئے धर्माधर्मबन्धो = دھرم ادھرم بندھن سے

107

ब्रह्मस्वभावो = برہم سوبھاؤ ہوتے योगी = یوگی

जायते = نہیں پیدا ہوتا ہے वा = یا म्रियते = نہ مرتا ہے

اوپر کا

55

एवम् = اسی طرح अविद्या उपार्जितान्यपि कर्माणि = اور جو پیدا کیے ہوئے جو کرم ہیں

ज्ञान आविर्भावादेव = گیان کے پرکٹ ہونے سے क्षीयन्ते = ٹوٹتے ہیں

न अन्यथा = اور کسی طرح سے نہیں (صرف گیان سے)

अप्रज्ञानकाल = آگیان کال سے وقت سے اکٹھے ہوئے اور باقی

اکٹھے निचित = اکٹھا کیا ہوا (انبوہ) धर्माधर्मात्मकं = دھرم اور ادھرم روپ (دو قسم کے)

तु = لیکن

कोमपि = کروڑوں चिर = بہت دیر سے संचित एव =

तूले = روئی नश्यति = ناش ہو جاتا ہے (تمام)

विज्ञान = روشنی दीप्तिवशात्

10/5 अ ज्ञान काले " → [illegible] कृत्रिम प्रमातृता।

अभिमान अवसरे पुण्यापुण्य रूपे =

[illegible]

[illegible]

"कर्म" = [illegible] → 3. अनुगुण = [illegible] फल = [illegible]

प्रथनया = [illegible] ([illegible]) =

यत् = 3. "निचिते" → स्वीकृते [illegible]

तत् = ([illegible]) "विज्ञानदीप्तिवशात्" → [illegible]

→ विप्र ज्ञान दीप्तिवशात् = [illegible] [illegible]

= [illegible]

"न प्रयाति" — [illegible], "अहमेव परं ब्रह्म"

[illegible] → [illegible] इति [illegible] कर्तृत्वम् = [illegible]

प्रमातृता = [illegible] [illegible] दाह =

[illegible]

समर्थो = [illegible]

[illegible] विज्ञानं = [illegible]

([illegible] "सोऽहमेव परं ब्रह्म" [illegible])

10/55

तस्य = اُس کی یا = ۳. पौनःपुन्येन = بار بار

प्रतिवमीप्रनात = ہر لمحہ پر प्रभा = (نور) روشنی

ततसामर्थ्यात = اس کی طاقت سے तत = وہ روشنی

प्रदर्शन = اور ظاہر ہوتی ہے यति = جاتی

(جاتی ہے)

किमिव = کس طرح इत्याह = ایسا کہا

"चिरसंचितं" → " → جمع

سب دہر کا جمع کیا ہوا "तूलं" → روئی

लेसरज = ...

वह्निप्रदीप्तिवशात = آگ کی روشنی سے झटित्येव = سب جلدی

भस्मसात् याति = جل کر راکھ ہو جاتی ہے तथैव = اسی طرح

सर्वः कर्मफल = سارا کرم پھل प्रचया = زیادتی

विज्ञान वह्नि = علم کی آگ سامर्थ्यात = اس کی طاقت سے

گیان کی آگ

55/56 ज्ञानमध्ये = علم کے اندر ~~प्रलयम उपागच्छति~~ سب نیست و نابود ہو جاتے ہیں

108 इति = ایسا ، गीतासु = گیتاؤں میں

यथा = جیسے इधांसि = لکڑیوں کو سामिद्धा = اگر بڑا ہی ہو (یعنی لکڑی کا ڈھیر)

اگنی لکڑی کو بھسم کر دیتی ہے अग्नि = آگ भस्मात् कुरुते = بھسم کر دیتی ہے

अर्जुन = ارجن

ویسے ہی ज्ञान अग्नि = گیان روپی آگ सर्वकर्माणि = سب کرموں کو

भस्मात कुरुते = بھسم کر دیتی ہے तथा = ویسا ہی

—— o ——

[illegible] न = نہیں کیول केवले = صرف प्राक्कृत कर्म = پہلے کئے ہوئے کرم [illegible]

(56) ज्ञान प्रसादात् = گیان کے پرساد سے

[illegible] उपलीयते = نیست ہو جاتا ہے यावत् = جب تک

इदानीन्तनमपि कर्म = اس وقت کا بھی کرم - ورتمان کا ज्ञानेद्धया = گیان کی [illegible]

दृष्ट्या = اس نظر سے न = نہ

56/108 फलउपभोगाय = پھل کے بھوگنے کے لیے   पर्यवसि पर्यवस्यति = ختم ہوتا ہے
پھل میں ختم ہوتا - وہیں ٹھہر جاتا ہے -

ज्ञानप्राप्तौ = گیان کی پراپتی ہونے پر   कृतमपि = کیا ہوا کرم بھی

न फलाय = پھل کے لیے نہیں   ततोऽस्य = اس سے اس کو

जन्म = جنم   कथम् = کیسے ہو سکتا ہے

गत = گئے ہوئے   जन्मबंध योगा = جنم بندھن ہونگے

भाति = ہے چمکتا   दिवाकीः = سورج کی طرح چمکتا ہے   स्वदीधितिभिः
اپنی کرنوں سے
- اپنی ہی پرکاش میں چمکتا ہے } اپنی شعاعوں سے -

आत्म मे ईश्वर प्रत्यवमर्श प्ररूढौ =
آتما میں ایشور کا وشواس جڑ پکڑ جانے پر - اس کا جو پرارتھ ہے اس کی سدھی ہو جاتی ہے

"कृतमपि" = کیا ہوا بھی   शुभाशुभादिकं = شبھ اشبھ اور کرم

"कर्म" = کرم

कृत्रिम प्रमातृता भिमाना भावात् = کوئی جھوٹی دنیاوی آتما کا ابھیمان نہ ہونے سے - اپنی ابھیمان کا ابھاؤ ہونے سے

56/109

یعنی ذوق کے مطابق ہیں

न = نہ प्रसङ्ग (अनुगुण) = مطابق फलाद्यभावात् (फलद्यानाद) = پھل وغیرہ کے نہ ہونے سے

प्रागल्भ्ये = سمجھتی ہے

इति = ایسا । कर्मफलाभावात् = کرم پھل کے نہ ہونے سے

तत् उपभोगयोग्यस्य = اس بھوگنے لائق کا (یعنی) بھوگنے کے قابل جन्मनः = جنم کا

केन प्रकारेण = کس طرح سے सत्ता स्यात् = ہستی ممکن ہو سکتی

न भवेत् = نہ ہو سکے

न भवतु = نہیں ہوتا योगिनः = یوگی کا

पुनर्जन्म = دوبارہ جنم इत्यर्थः = یہ مطلب ہے ایسا

ननु = [illegible] स = وہ یوگی

पिण्डपातात् = جسم کا پات ہونے سے - یعنی شریر چھوڑ دینے سے

पुनर् = پھر न = نہیں जायते = پیدا ہوتا ہے

चेत् = اگر وہ یوگی کسی کرم میں نہیں ہے؟ پیدا ہوتی ہے

345

56/109 तर्हि = پس कीदृशः = کیسا स्यात्? ہوئیگا =

इत्याह = یہ بیان کیا "गतजन्म इत्यादि" = گذر چکا ہے جنم جس کا

→ गता = گئی ہوئی - گذری ہوئی، जन्मरूपस्य = جنم روپی

बन्धस्य = بندھن کا संबन्धो = تعلق

योगः = تعلق

यस्य योगः = جس کا स = وہ एवम = ایسا

इति = ایسا प्रक्षीण = جو کہ ختم ہو گیا

मोहावरण = [illegible] "स्वदीधितिभि"

[illegible] → चित्-मरीचि = [illegible]

चि निचये = [illegible] स = [illegible]

प्रावरुपोऽकी = [illegible] भाति = [illegible] →

स्फुरति = [illegible] न पुनः = نہ پھر

तीर्थान्तर परिकल्पिता = [illegible]

यस्य = [illegible] मोक्षः = [illegible]

56
१०९

→ कुत्रचित् प्राप्ति = کسی جگہ کو پراپت کرنا | یعنی جس جگہ بندہ کو کچھ پراپتی ہو وہ سرگ آدی کچھ بھی ہو وہ شیو ہی ہو سکتی ہے کیونکہ یہ شیو ہی شیو ہے -

इति = ~~[illegible]~~ یہ بات केवलं = صرف

मायादि कञ्चुक कृत संकोचाभावात्
= مایا آدی کنچک سے سنکوچ ہوتا ہے - اس کے نہ ہونے سے

स्वशक्ति = اپنی شکتی کا विकस्वरतात् = کھل جانے سے

पश्चात् = آخر پر بھی

एवं युक्तिमाह = اس پر یکتی بتلاتا ہے

(57) तुष = بوس कम्बुक = کُرم

جو دانہ ان چھلکوں سے چھٹکارا پاتا ہے - किंशारुक = نشتر मुक्त = جن سے آزاد ہوا - جب الگ ہو جاتا ہے - تو چاول کا بیج

کوئی बीजं = بیج (چاول کا دانہ) यथा = جیسے अङ्कुर = انکر کو

یعنی جو بیج کہ انکر نہیں نکال سکتا ہے - नैव कुरुते = نہیں کرتا ہے (یعنی اسکا انکر نہیں نکل سکتا ہے - اگر زمین یا پانی میں اسکو ڈال دیں)

तथा = ویسے ہی पराणव माया कर्म =
آنول - مایا مل - کرم مل سے

(347)

57 विमुक्ता = چھوڑا ہوا   अथ = جیسا   अङ्कुरः = انکر

क्षेत्रे = کھیت میں   पात्रम् = برتن (नैव कुरुते)

کوئی بیج بھی ہم میں نہیں پیدا کرتا۔

यथा किंशारुक-तुष-कुम्भुकेभ्यः = جیسے کنسارک - تُوش - کُمبھ وغیرہ

पृथक् कृतं = (الگ) الگ کیا ہوا

प्रतिनीत्र (زمین) پیچ کا دھان   बीजस्वभावात् = بیج کی سوبھاؤ سے

किंशारुकादि = کنسارک وغیرہ   सामग्र्य भावात् =

اس سامگری کے نہ ہونے سے - پھر ہوئے سے (دھان کا بیج)

क्षितिजल-आतप-मध्यवर्त्यपि = زمین - جل - دھوپ

ان میں ہم بیج بھی اگر ہو - اگر اس شی کا دانہ ہم دیکھ کر اندر کی رکھیں اندر نقص ہم

नैव = نہ → +

अङ्कुर = انکر و اپجانا   जननलक्षणं = وہی لکشن

(دوسری وجوہ کی) कार्ये = کاریہ کا   हेतुर्भवति = سبب ہوتا ہے

(الٹی نہیں ہوتا) اندر سے ہوا کے لئے وہ بیج پیدا نہیں ہو سکتا۔

110 57 "तथैव" ویسا کम्बुकस्थानीयेन

"आणवेन मलेन" = انوی میل سے   तुषस्थानीयेन =

मायामलेन = مایا میل سے   किंशारुकस्थानीयेन

कार्ममलेन च. = کارم میل

मुक्त = آزاد

→ पृथग्भूत: = الگ سے ہوا

फात्मा → चैतन्ये = چیتن میں

मलत्रयरूपसामग्र्यभावात् = تینوں میل روپ

= (اب)

न पुन: = نہ پھر

"भवाङ्कुरं" → संसाप्ररोहं

विदधाति = کرتا ہے

57/58

दोबारा 110

केवलं = صرف विश्वगत = دنیا میں ہونے والی नानापदार्थ = نانا پدارتھ

साक्षी = گواہ — ساکشی اس کا ہونا प्रादुर्भाव = پرادربھاو (پیدا ہونا)

विनाश = ناش ہونا वैचित्र्यं = وچترتا

स्वात्मनि = اپنی آتما میں

परामृष्टान = برامرشٹ کرتا ہوا महेश्वर एव भवति = مہیشور ہی بنتا ہے

اور ان

(58) एवं = اس طرح ज्ञान अग्नि दग्ध कञ्चुक बीजस्य = گیان کی آگ سے جس کا کنچک بیج جل گیا ہے

ज्ञानिनो = اس گیانی پرش کا न = نہیں ہے किंचित = کچھ بھی

प्राङ्कास्थाने = شروعاتی مقام

हेयो = چھوڑنے کو उपादेये = پکڑنے کو वा = یا

इति मत आह = یہ بتاتے ہیں

اس گیانی کے لیے جس کا کنچک بیج جل گیا ہے نہ کچھ چھوڑنے والا ہے نہ پکڑنے والا
یہی بتاتے ہیں۔

58/

111

(58) आत्मज्ञो न — اس آتما کو جاننے والے کو — کبھی بھی

न = نہ   कुतश्चन = کسی طرف سے بھی

बिभेति = ڈرتا ہے   کو   सर्वं = سارا   بھی

तस्य = اس کیلئے   निजरूपकं = اپنا ہی روپ ہے

नैव च = نہیں بھی   प्रोचति = دکھ پہنچاتا ہے

यस्मात = جس کارن سے   परमार्थे = پرمارتھ پر

नापिता = ناش نہیں ہوتی ہے (نشٹ نہیں) جب کہ

नास्ति = نہیں ہے (اس پرمارتھ کا ناش نہیں ہے) اس کا ناش

यः = 3. "आत्मज्ञः" = یوگی → स्वात्ममहेश्वर
स्वातन्त्र्यवित

= سوامی سرودے ہے - اس کا جو سواتنتریہ ہے - اس کا جاننے والا

स = وہ یوگی   "न कुतश्चन बिभेति"

وہ کسی سے کسی طرف سے نہیں ڈرتا ہے

58

111 → न रे ने सः = یہ بھی कस्मादपि = کسی سے بھی

राज्ञः = راجہ शास्त्रो = شاستروں یا प्रार्थिभ्यो = یا کسی جیو سے

वा = یا भयमादत्त = ڈر نہیں رکھتا ہے

कुत एतत् ? = یہ کیسے ہے ؟

इत्याह = یہ کہتے ہیں

"सर्वं हि तस्य निजरूपम्"

→ यतः = کیونکہ "तस्य" اس یوگی کو جو

स्वात्ममहेश्वरस्वरूपवेदिनः = سواتم مہیشور سروپ کو جاننے والا ہے

"सर्वं" → سب کچھ یہ ظاہری دکھائی دینے والا ← पदार्थजातमिदं

"निजस्य" स्वात्मनो = اپنا ہی → महाप्रकाशक वपुष्

یہ سب ایک ہی سروپ ہے = اپنا ہی

"रूपम्" — आकारः شکل روپ

सर्वत्र = ہر جگہ प्रकाशानुगमात्

ہر جگہ ایک ہی پرکاش ہے

58/ → سوامی جی یہی سب کچھ کہتے ہیں کو ہی

11/ इति = ایسا ہی प्रकाशते = [illegible] स्वतन्त्र्यात = [illegible]

[illegible] स्व परात्मना = اپنے اور دوسرے [illegible]

प्रकाशते = [illegible]

[illegible] = ([illegible])

एत एव = [illegible] भयस्थाने = [illegible]

लोके = دنیا میں यत = جو किंचित = کچھ

प्रतिभाति = بھاستا ہے तत = وہ کچھ بھی

तस्य = اس کے لئے तथैव = ایسا ہی

[illegible] स्वाङ्गकल्पमेव = اپنے ہی انگ [illegible] कथं = کیونکر

भयजनके स्यात = بھے دینے والا स्यात = ہو سکتا ہے

[illegible] यत उत = کیونکہ स्वात्मनो = اپنے سے

व्यतिरिक्तः = [illegible] पदार्थो = پدارتھ

([illegible])

58/111

وہ) भयहेतु भवेत = بھئے کا باعث ہو

(جب اوسکو اپنے سے دوئی کا بھان - تو — تو یہ بھیہ کا باعث ہے

कः पुनः = کون پھر   सर्वतः = ہر طرف

جو ہر طرف سے پوری پوری ہے — جو ہر بندھن سے پار پائی ہے -

परिपूर्णस्य = جو ہر طرف پورا ہے   प्रबोधभूतो = جو جرجس کا ہوا ہے +

भिन्न = جدا, यमादि = یم وغیرہ [جو یم ادی ہیں

स्फारित = ہے

यस्मात् = جس کا وہ   ज्ञानी = گیانی

प्रपतस्त = دور گیا ہو   देहात्ममानित्वाऽपि = دیہہ میں جو آتما بھاؤ تھا - اگر اس سے چھٹکارا پایا

त्वोऽपि = اس میں بھی   बिभियात = کیوں ڈرے گا - جو کسی بات کا ڈر رہا ہے

इति सर्वत्र = اس سے سب جگہ

निजरूप = ہے اپنا جو اصل سروپ   उपलब्धये = اسکی پراپتی کے - اوسکو پاکر

संसारस्थितोऽपि = سنسار میں رہتا ہوا بھی ہے اگر -

58

एक को = اکیلے [illegible] विगलित = [illegible]

[illegible] स्व पर = اپنا اور پرایا _विभागतया = [illegible]

ایسے निशाङ्क = بے شک [illegible] — کوئی خوف نہیں

विचरत्येव = پھرتا ہے (بے خوف ہو کر)

यथोक्तं परमेष्ठिपादै —

= [illegible] —

या = [illegible] अविकल्प = نہ [illegible] — [illegible]

[illegible] इदम = یہ प्रथमण्डल = [illegible]

[illegible] पश्यती = دیکھتی ہے इयं = [illegible] निखिलं = یہ سارا [illegible]

भवत वपु = [illegible]

([illegible]) स्वात्ममात्र = [illegible]

परिपूरिते = [illegible] जगत = جگت

[illegible]

×. اسے کو تو سامنے طور سے سمسار میں دیکھتا ہے ۔ لیکن جب اپنا اندر ہی اپنا دیکھتا ہے [illegible]
+ کہاں

58/112 ग्रस्य = [illegible]   नित्यसुखि = ہمیشہ سکھی ہے

कुतो = کہاں سے   भयम् = ڈر ہے (ہرش)

اور دوسروں کا ڈر نہیں

(اپنے ہرش کو جو کہاں کا ڈر ہے)

इति ग्रन्थकारोऽपि = اس طرح اعلان کرتے ہیں

ہیں

एकका = اکیلا   स्फुरन् = میں   इति = اس طرح

संस्तौ = سمسار میں   जन = جو - جو

त्रास = ڈر   साहस = ہمت   ईस = ایش

(اپنی طرف کھینچ)

خطرناک

खिद्यते = دکھی ہوتا ہے

کہتے ہیں → एकका = اکیلا   = میں   اکیلا

× اسی طرح

कोऽपर = کوئی دوسرا ہے   मे = میرے (لیے)

- میرے لیے کوئی دوسرا ہے

इत्थम् = اس طرح   अस्यमन = میں   اکیلا

گیا ہوں

گتभी = ڈر چلا گیا   व्यवस्थिता:

ڈر گیا

58 इति = یوں۔ अन्यच्च = اور بھی "नैव च प्रोचाति" इत्यादि

112 → नापि = نہ ہی आत्मनः = اپنے آپ کا

"प्रोचाति" = کہتا ہوں

यथा = جیسے धनदारादिकं = دھن بیوی آدی (جیسے)

الیاس मम = میرا नष्टं = نشٹ ہو گیا

रिक्तोऽस्मि = ~~میں خالی ہو گیا~~ व्याधिनाक्रान्तोऽहं

~~भिक्षे वा~~ ہے یا بیمار سے گھیرا ہوا ہوں = [illegible]

سوا भिक्षे वा = یا بھیک کا کٹورا [illegible]

यता = جو کہ ~~व्याधिनाक्रान्तोऽहं~~

यतोव्याख्यातेन جس = جس کو [illegible] اس کی تفصیل بیان کی ہے =

"परमार्थे" (क्रमेश) → तात्त्विके = سچا

वस्तुनि = شے चैतन्यरूपे = چیتن روپ

अन्तरमुखे = اندر مکھ

[illegible] प्रमातृमात्र = [illegible] "नापिता"

[illegible] क्षयथमित्व = [illegible] = [illegible]

न विद्यते = ہے نہیں ([illegible])

[illegible] सर्व = [illegible] हि = [illegible]

3. अभिमानसारं = [illegible] ([illegible])

[illegible] कायित्वेन [illegible] ([illegible])

[illegible] प्रतिभासमानमेः [illegible] इदन्तावछिन्नम

उत्पद्यते [illegible] =

क्षीयते च = [illegible]

न पुनः = [illegible] संविन्मयस्य = [illegible]

आत्मनो = [illegible] अहन्तासारस्य = [illegible]

अकृत्रिमस्य = [illegible]

58/ स्वतन्त्र्यस्य = [illegible] स्वरूपस्य

113/ – कार्योन्मुखप्रयत्नानुपलब्धेः

[illegible] =

[illegible] ([illegible])

न च = [illegible] एतावता = [illegible]

स्वरूपविप्रलोप = [illegible] स्यात् = [illegible]

इति = [illegible] विमृपातो = [illegible]

योगिना = [illegible] देहस्थस्यापि =

[illegible]

वत हेतुकः = [illegible] ([illegible])

प्रोकाद्य = [illegible]

प्राविभाव = [illegible]

स्वरूपाच्छादकत्वेन [illegible]

[illegible] =

[illegible] = न = [illegible] भवेत् = [illegible]

59

نہیں   नापि = نہیں   स्वात्ममहेश्वरस्वरूपे = اپنے مہیشور سروپ میں

113 (59) परिशीलन = غور اور دھیان   دار्ढ्ययात् = دردتا سے

अस्य = اس کو   ज्ञानिनश्चेतसि = اس گیانی کے چت میں

अपूर्णत्वादिधियः = ادھورا پن وغیرہ کی بدھی   स्यात् = ہو سکے

اس کو یہ ادھورا پن نہیں

इति प्रतिपादयति = اس طرح بیان کرتے ہیں

अतिगूढ = بہت چھپا ہوا   हृदय = ہردے

गञ्ज = کان - Mine   प्ररोह = انکر

पार्थिवरत्न = پارتھو رتن   संचयतः = جمع کرنے سے

[illegible]

[illegible]

अहमेवो = میں ہی   इति = اس طرح   ——

महेश्वरभावे [illegible]

को = کونسی   दुर्गति = بری حالت   कस्य = کس کو

[illegible]

59 "अतिगूढम्" → अतिशयेन = زیادہ گُپت = پوشیدہ

114 "हृदयमेव मञ्जूषा" → सर्व परमार्थ स्वरूप विश्रान्ति स्थान

स्वभाव

= سارا جو ہے حقیقی اور وہ - وہ ہوتا ہے سو روپ پر ایک جگہ میں

- اُسی اُسی کی کھوج کی منجوشا (پیٹی) وہی سمجھا جوت بیٹا -

भाण्डागार = برتنوں کا گھر (گودام) तत्र = اُسی مکان میں

यो = ३. अतितीव्रतम = بہت زیادہ تیز ہے جو समभ्याल

प्ररूढः = اُس پر اُگا ہوا دشوار =

'परमार्थः' → (وہی) सद्रूपार्थः وہ سچی وجود کی

स्वात्मज्ञानसतत्त्व اپنی آتما کا گیان ہے - یکساں ہے

(اپنی مرتبہ) اُس گیان کی حقیقت ہے میں

स एव = (وہی) وہی सर्वविभूतिहेतुत्वात =

+ ۳ وہ سب اشیاء کا ہے - اُس کا کارن ہونے سے

ہے سی रत्नसञ्चय इव = رتنوں کا مجموعہ

جیسا

59 // २ तेन हेतुना = اس لئے چوں अहमेवाति " میں ہی ہوں

115 → सर्वमिदम अस्मि = یہ سب کچھ میں ہی ہوں

इति = ایسا यः = جو ↗ प्राविर्भूतः = پرکٹ ہوا

पूर्णः = پورن → परामृष्टाविश्वाख्यलक्ष्मा
پرامرشن پر جو کھڑا ہے ۔ وہی سروپ ہے

"महेश्वरभावः" → शरीरिणोऽपि = شریروں کو بھی

" स्वात्मप्रकाशस्वातन्त्र्यं = اپنی آتما پرکاش کی سواتنترتا ہے تस्मिन = اسی

स्थिति सति = اس پر ٹکے رہنے پر

"को" → नाम वराकी = کون ہے بیچاری

"दुर्गति" → दरिद्रभावः = دارِدرتا

دارِدرتا سے → तत् उपलक्षिता = اس سے جو کچھ ہو سکتا ہے — (بیچاری)

कश्चित = کوئی कृत्रिमो = کھوٹا

کوئی دیکھو विभूत्याश्रयः = کوئی دیکھنے کی ... स्यात = ہے

یہ صرف دیکھنے میں ہی دکھائی دیتا ہے - دراصل سب کچھ کھوکھلا اور بے وقعت ہے

59

114 آبھا سارا — आभासारा — یہ اپنا آبھاس لیے ہوئے — हि = کیونکہ

सर्वे पदार्था = سارے پدارتھ — यदैव आभासन्ते = جب ہی یہ جھلکتے ہیں

तदैव = اسی وقت — योगिनः = یوگی کو (یوگیوں)

स्वात्मकल्पा = اپنے جیسے — सन्तः = ہیں

(یہ پدارتھ صرف اس کو ہر وقت اپنے جیسے ہی دکھتے ہیں)

کیا — कथम् = یہ پدارتھ کیوں کر — उत्कर्ष = اونچائی

بڑھائی اور نیچائی پدارتھوں کی ان پر کچھ نہیں ہوتی — अपकर्ष = نیچے — आदौ = پہلا — प्रगल्भन्ते = سر اٹھاتی ہوں

یعنی اونچ نیچ اس کو کچھ نہیں دکھتی - سب کچھ اپنے ہی روپ میں دکھتا ہے

इति न किंचित् = ایسی کچھ نہیں

درگتی تب ہوتی ہے جب اپنے آپ کو شریر سمجھیں — दौर्गत्यादिकं = درگتی آدی کا — भवेत = ہے (ہو)

कस्य वा = کس کو — इति = ایسا

को वा = کون ہو سکتا ہے — अस्य = اس یوگی کا

दुर्गते समाश्रयः = درگتی کا آشریہ

देहाद्यात्माभिमानिनो = دیہہ وغیرہ کو آتما ماننے والے

(انھیں سوبھاو کا) - (ابھیمان ہوتا ہو)

हि = کیونکہ (درگتی) — अस्या दुर्गति = اس بڑی درگتی کا

(کوئی صفت ان کی جانب ہو رہی ہے) - تو ملتا ہے - یعنی جو مانتے ہیں *

59 समाश्रया भवन्तु = اسے آسرے ہوں   यतस्ते = جس واسطے

115 ते = وہ   व्यतिरिक्तस्य = بن ...

एपरार्थीयस्य = جو وہ جانتے ہیں (وہ کسی کی جانب)

प्राप्त्या = اسی کی پرانی سے   وہ

ईश्वरा: = مالک   بنے ہوئے ہیں   [یعنی جو ... سمجھا جائے *]

115 तद् = اسے   अपहारति = اپہارے   रिक्त = خالی

यः = جو   पुनः = پھر   अकृत्रिम = نہ کوئی

अकृता प्रत्यवमर्श = ... برابر میں   परमार्थो = اسی کے ...

ज्ञानी = گیانی   "सर्वमस्मि" "سارا میں ہی ہوں"

→ अव्यतिरिक्तेन = نہ ہونے سے   एपरायिन =

(سب کچھ اپنے ساتھ ہی ہے - سدا ... ہی ہیں اسی)

← महेश्वर = جو ... سدا   स = وہی   कथं = کیوں (جس ... میں)

व्यतिरिक्त = الگ

प्राप्त्य = پرانی   अप्राप्त्य = نہ پرانی

अभावात् = اس کے نہ ہونے سے

59

115/ ۱۰۱ सौगत्यायै भाजनं = دولت کی کا برتن

- وہ برتن بنتا ہے ? स्यात = ہو

۲, एष एव = اسی کا رستہ ہے गङ्ग शब्दस्य =

جو کہ گنجر شد ہے - اس کے

ہوں رत्नसंचय शब्दस्य = رتن سنچے شبد کے

۲۲ ईश्वर शब्दस्य = ایشور شبد کی

اکھوا کے لیے پہلا سکریہ // हृदय प्रसाद पर - = پردے پر لکھا ہوا

माथो پیرا رکھے ہوئے

महान = اتنی ہی بڑا ایشور

इति शब्द = ایسا प्रकृति =

अर्थवाचकानि وہ نے کلو

- ارتھ - مطلب کو ظاہر کرنے والے ہیں

विशेषणानि = وشیشن - یہ خصوصیتیں

उपपादितानि = سمجھائے

ان - ایسے ثابت کئے

60

115

(60) इदानीं = اب   मुदास्वरूपम = موکش روپ

आह = کہتے ہے

मोक्षस्य = موکش کی   नैव = نہیں ہی   किंचित = کچھ

धामास्ति = ٹھکانا ہے (موکش کا کوئی ٹھکانا نہیں ہے - کیونکہ)

اس کی جگہ نہیں ہے - جو موکش نہیں

न चापि = نہیں ہی   गमनं = جانا ہے   ग्रामं स्वयं =

{(موکش) - یہ دوسری جگہ جانے کو بھی نہیں کہتے ہیں} (اس کا) دوسری جگہ

اصل ہے   अज्ञान = اگیان نہیں ہے   ग्रन्थि = گنڈھا ہے

भिदा = اس اگیان کی گانٹھ کا ٹوٹنا

اس گانٹھ کا ٹوٹنا ہی موکش ہے   स्वप्रात्मय = اپنی شکتی کی

अभिव्यक्तता = ظاہر کرنا   ہی ہے   मोक्षः = موکش

جو سروپ کا اپنی شکتی سے ظاہر ہونا ہے

"मोक्षस्य" → पराङ्गता चमत्कार सारस्य

موکش کا چمتکار سار ہے جو دوسری جگہ نہیں ہے

कैवल्यस्य = اکیلا - اکیلے پن کی ہے

"اکیلی" व्यतिरिक्तं   धाम →

ہے جگہ - الگ کوئی جگہ نہیں ہے جو ایسا ہی ہے
स्थानं

(60) 366

न विद्यत एव = نہیں ہی ہے

116/ देशकालाकार प्रवच्छेद अभावात्

دیش - کال - آکار - اس کے پربچھید نہ ہونے سے - وہ کسی جگہ نہیں

अत एव = اسی لئے "न चापि = نہیں ہی अन्यत्र"

कुत्रचित = اور کہیں بھی or = اور کہیں بھی

व्यतिरिक्ते = بغیر - یعنی "गमनं" → جانا ہے

लय = لَے मोक्षः = موکش (موکش نہیں ہے)

यथा = جیسے भेदवादिनो = بیدوادی جو ہیں

To group मतेन = اُن کے مت سے مطابق उत्क्रान्त्वा = اوپر جا کے - اوپر والے چکر لیتا

چکروں चक्राधारादि = چکر آدھار : اور آدھار سے چکروں میں گزرتا भेदनात = اُن کو چھیدتا

بہت اصول

ऊर्ध्वे = اوپر द्वादशान्ते = جو - چکروں کے پار برہم رندھر

लयः = لَے ہوتا

एषैव मुक्तिः = یہی مکتی ہے

यदुक्तम् = جیسا کہا ہے

115

60

اگر وہ سرو ویاپک ہے تو اس کے نکلنے کی کیا ضرورت ہے

व्याप्त्यां = سب میں موجود ہونے کی   शिवसत्ताम = شیو کی ستا

उत्क्रान्त्या = اُتکرانتی   किं = کیا (اُدیش)

प्रयोजनम् = ضرورت ہے

اگر سرو ویاپک ہے تو وہ اُتکرانتی کیا ضرورت ہے

प्रत्यापित्ति = سرو ویاپک ہے (اب کیونکہ)   परे त्वे = پرنتو

हि = کیونکہ   उत्क्रान्तता = اُتکرانتی کا

किं प्रयोजनम् = کیا ضرورت

[جب سرو ویاپک ہو - تو اُتکرانتی یعنی نکلنے کی کیا ضرورت ہے] - جب سرو ویاپک

इति = اس لئے   एवं विधा = اس طرح کی   परिदृ = ادھر ادھر

तीर्थान्तरपरिकल्पिता = شاستروں میں [illegible] کلپنا کئے ہوئے   बहवा = بہت

मोक्षभेदाः = موکش کے بھید   सन्ति = ہیں (ہیں)

- [illegible] Definition [illegible]

ते = [illegible]   प्रतन्यमाना = [illegible]   ग्रन्थगौरव

भयम = [illegible]

प्रानयान्ते = [illegible]

- [illegible]

इति = ایسے   न = نہ   यह = [illegible]

[illegible] एतन्वन्त = [illegible] - دلوں میں - [illegible]

इति = ایسے   सर्वत्र = ہر جگہ

द्वैत - [illegible]   द्वैतमलस = संभाव [illegible]

[illegible] मुमुक्षु = جو [illegible] - [illegible]

मोक्षलिप्सा = [illegible] کی آرزو ہے -

मोक्षाभास एव = [illegible] آبھاس ہے -

किं पुनः मोक्षलक्षणा = [illegible] ہے

इत्याह = [illegible]

"अज्ञानम्" → [illegible]
अप्रख्याति जनित:
= [illegible] - [illegible]

आत्मनि = [illegible] अनात्माभिमान पूर्वो
[illegible] - [illegible]

60/

अपवात्मनि देहादौ = شریر آدی یعنی دیہہ پر आत्माभिमानलक्षणो मोह:

شریر کو آتما سمجھنا – ایسا ابھیمان کا روپ موہ ہے =

स एव = وہی पूर्णस्वरूप संकोचदायित्वात.

اپنے اس پورن سروپ کا سنکوچ =

दायित्वात = دینے سے (سنکوچ کے کرانے سے)

دینے والا

گرہ گرہ ग्रन्थिरिव = گرہ کی طرح گنڈھ کو "ग्रन्थि:" =

گنڈھ اس کو کہا

स्वस्वातन्त्र्यलक्षणस्य = اپنی سواتنتریہ کی

سوشکتی

117 निजस्य व्यापित्वादे: = اپنی ویاپکتا کی آدی देहाद्यभिमानतया

بन्धः : گنڈھ = دیہہ پر آتما کا ابھیمان کا

ایسا یعنی دیہہ کو بندھن ہوا

तस्य = اس گنڈھ کو "भित" → کھولنا – کاٹنا

भेदेन

کرکے नित्य पूर्ण स्वात्मस्वातन्त्र्य परिशीलन

درشن = اپنے پورن سروپ کا سواتنتریہ ... اس کا ابھیاس کر

दर्शयति = ایسا دکھاتے ہیں

देहाद्यभिमानलक्षणस्य = دیہہ آدی پر آتما ابھیمان کی اس گنڈھ کو

60/ ग्रन्थे = گانٹھ विदारणे = کھولنا

117/ तेन हेतुना = اسی لیے "स्वप्रकाशाभिः" اپنی روشنی والے

→ स्वात्मस्वातन्त्र्यलक्षणे = [illegible]
[illegible]

[illegible]

धर्मः = دھرم

अभिव्यक्तता = [illegible] → स्वात्मशक्ति विकस्वरता.

[illegible] =

एष एव = یہی [illegible] निरतिशयो =

[illegible] [illegible]

"मोक्षः" = اسی کو موکش کہتے ہیں

उपायमपायः = [illegible]

यथा = جیسے सहज = [illegible]

नित्य = [illegible] व्यापकत्व = [illegible]

धर्मयुक्तानाम् = [illegible]

60

117

आकाशमपि = آکاش بھی اگر घटादि भित्ति नयं संकुचितम्

= گھڑے وغیرہ کی دیواروں سے - یعنی محدود ہو کر

کے برابر آکاش بنا ہوا ہے - اور بند کوٹھے میں آکاش

तत एव = اسی طرح سے   तदेव = وہی

آکاش جو وسیع ہے

व्यापकत्वा (व्यापक) = جو اسکو ادیا کیا گیا ہی

धर्मयुक्तं घटाकाशम् = اس آکاش کو گھڑوں اور کوٹھوں سے

گھڑے اور کوٹھوں میں سے ان کو گھڑے کا آکاش اور

= اسی کو گھڑے کا آکاش کہتے ہیں - کوٹھے کا آکاش کہتے ہیں

इत्युच्यते आकाश भिन्नामिव = اور ایسا کہا جاتا ہے - الگ کی طرح سے

15

प्रथते = آکاش سے الگ ہی ہو

بارہا ہے - گھڑوں میں

पुनरपि = اور - پھر   यदा घटादिभित्तकृतसंकोच भङ्गात्

= گھڑے وغیرہ کی دیوار کے ٹوٹ جانے سے جب وہ محدود پن کو

توڑ دیتا ہے

तदेव = وہی   घटाद्याकाशं = گھڑے وغیرہ

کا آکاش

तदेव = وہی   व्यापकत्वादि धर्मयुक्तं स्यात्

= وسعت وغیرہ دھرم والا ہو جاتا ہے

60/ न पुनः = نہ پھر   तस्य = اس کی

117/ घटादिभङ्गात् = گھڑا وغیرہ کے ٹوٹنے سے

नूतनः = نیا   कश्चित् = کوئی

धर्मो = [illegible]   विभीव आयाति = پیدا نہیں ہوتا

(اس میں نئی قسم کی change نہیں آتی - [illegible])

तथैव = ویسے ہی   देहाद्यभिमानकृत संकोच संकुचितं चैतन्यं नष्टमिव

[illegible]

नष्टमीव = گویا نشٹ ہوا تھا   इति = ایسا

उच्यते = کہتے ہیں

तथैव = ویسے ہی   पुनः = پھر

स्वस्वरूपज्ञानाभिव्यक्ते = اپنے روپ کے ظاہر ہونے سے

देहादिप्रमातृतानन्द संज्ञायुक्त

[illegible]

[illegible]

स्वशक्ति विवेक = اپنی سکتی کا وچار ہے

ایسے विस्फुरे = ظاہر ہوتا - پرکٹ ہوتا ہے

118 کہ شکت اپنی ہی سکتی ہے - اسی کا وکاس

मुक्तमानि = دکھوتا ہوا ہے - [illegible]

इति = یہ اس ہے अभिमानमात्र सारौ = [illegible]

परिमित = [illegible] प्रमात = اپنی [illegible]

[illegible] बंध प्रपेक्षया

[illegible] बन्धमोक्षौ = بندھن اور موکھ (درنہ [illegible])

न पुनः = نہیں اور परमार्थे = سچ مچ کی

संवित्तत्त्वे = [illegible]

एवं किंचित् = کچھ بھی [illegible] संभवति = ہے

نہ ہے بندھن نہیں نہ موکھ [illegible] [illegible]

तस्मात् = اس کا [illegible] मत्तो = مجھ کی

नूतनं = نیا न = نہ किंचित् = کچھ

साध्यते = [illegible] (مجھ کو کچھ [illegible])

निजमेव स्वरूपं प्रथते = [illegible]

60/ स तदेव शिरा घर्मे खपि = [illegible]

118/ उत्तम

यथा = جیسے   उदपानकर यात = [illegible]

क्रियते = کیا جاتا ہے   न = نہ   जल = [illegible]

[illegible] = جب کنویں سے پانی نکلے - [illegible]

- [illegible] پانی نہ نکلے

सत इव = [illegible]   नीयते = [illegible]

व्याक्रिम = [illegible]   प्रसह्य = [illegible]

[illegible] संभव कृत = [illegible]

- [illegible] -

मित्र = [illegible]   इतो = [illegible] यथा

वायु = ہوا   नैव = نہ   [illegible] = [illegible]

([illegible] [illegible]]

सह = ساتھ   वायुना = [illegible]

क्षीरा = [illegible]   पयः = دودھ   [illegible] = [illegible]

٦٠/
११४/

बन्ध = اس میں ہم اور تم ہوں   तथा = ویسے / आत्मा = آتما

बद्धराग = پریم ساتھ   सह = ساتھ ملیا ہے

تو آتما ورت پریم بڑا ہو جو
یہاں باپ کا گنڈ جب ہٹ گیا
سر دو باپ ہے اس پرم ساتھ میں جا جائے۔

جس طرح کنواں کھودیں تو جل نکلتا تو سہی نہیں جب تک اس کو کوئی پانی نہ آ جائے۔

اسی طرح
جس طرح دادو کہتے ہیں من بن بھی اگر ہیں۔ تو ان کو بعد کسی پرم ساتھ میں ملیں ہیں
والے اس پر ہے وہ پرم ساتھ جو باہر ہو بابک ہے۔ اسی طرح جو آتما کھینچ ہوا ہو پیچھے بعد
باپ پرم گنڈ سے اسلا میں کھیل اسی پریم پر پرم ساتھ ہے جو سر دو باپ ہے۔

61/

118/119 (61) एवं = ایسے प्रक्षीणाः = ختم अज्ञान = اگیان

बन्धो = بندھن ज्ञानी = گیانی पराः = [illegible]

प्रत्यगात्मार्थी = [illegible] ([illegible]) शरीरमपि धारयन् = شریر کو دھارن کرتے

मुक्तः = مکت [illegible] इति = ایسا आवेद्यते = [illegible]

भिन्न = [illegible] अज्ञान = اگیان [illegible] ग्रन्थि = [illegible]

[illegible] = गत = گیا संदेह = سندیہ परा कृतभ्रान्तिः = [illegible]

प्रक्षीण पुण्य पापो = [illegible] विग्रहयोगेऽपि = [illegible]

तपस्वी = [illegible] मुक्तः = [illegible]

शरीरसंबन्धेऽपि = شریر [illegible] स्वात्मज्ञानवित् = [illegible]

शरीराद्यभिमान अभावात् = [illegible] जीवन्नपि = [illegible]

मुक्तो = [illegible] विकस्वरशक्तिर्भवेत् = [illegible]

61 ननु = کیوں [illegible] विग्रहयोग एव बन्धः = [illegible]

119 कथं = کیسے तत्संबन्धोऽपि = [illegible]

प्रसौ कुतः = [illegible] - [illegible]

इत्याह = اس پر کہا ہے

"भित्वा" इत्यादि → भित्वा → विदारिता = [illegible]

अज्ञानरूपो ग्रन्थिः = [illegible] ग्रन्थिः = گانٹھ

→ अप्रसिद्ध = [illegible] ख्याति = [illegible]

[illegible] सम्मुत्थो = [illegible]

[illegible] देहाद्यभिमानरूपो = [illegible]

[illegible] बन्धः = [illegible] येन = [illegible] स एव = [illegible]

→ विदारिता = [illegible] [[illegible]]

तथा = [illegible] "गतसंदेहः" = [illegible]

इति अत एव = [illegible] नष्टसंशयः = [illegible]

"पराकृता" न्यकृता = [illegible] - [illegible]

→ परमाद्वयज्ञानलाभात् = [illegible]

([illegible]) [illegible]

(378)

[illegible]

61/

119 "भ्रान्तिः" [illegible] → स्वप्नरूपा = [illegible] भ्रमो = [illegible]

येन = [illegible] स = [illegible] तथा = [illegible]

([illegible])

एवं = [illegible] परिशीलनेन = [illegible] प्रक्षीनानि = [illegible]

पुराणपुराणानि = [illegible]

विगलित संस्कारा(शा) = [illegible] ([illegible])

[illegible] देहात्ममानित्वाभावात् = [illegible]

[illegible]

धर्माधर्माणि यस्य [illegible] [illegible] स = [illegible]

एवं विधः = [illegible]

[illegible]

रूपेनेन = [illegible] "रूपज्ञानमेव बंधः" [illegible]

इति = [illegible] प्रतिपादितम = [illegible]

तत च = [illegible] विग्रहयोगेऽपि = [illegible]

यस्य = [illegible] प्रक्षीणां = [illegible] ([illegible])

स = [illegible] तदैव = [illegible] जीवनमेव [illegible]

मुक्तो = [illegible] [illegible]

61/62 न पुनः = نہ پھر शरीरयोगात् = شریر دھاری

119/120. बन्धः = بندھن ہوتا ہے – پھر جسم سے لینا

तदपगमो = شریر کا ختم ہونے پر मुक्ति = مکتی ہوتی ہے

(نہیں ایسی بات نہیں ہے)

किन्तु = لیکن (شریر چھوڑنے) दृढप्रपातात् = شریر بات ...

पुरश्च = پورن मोक्ष इति = موکش ہوتا ہے - شریر چھوڑنے

(وہ درشٹی شریر بات کی دیتا ہے)

[شریر چھوڑنے پر تو اس جیون مکت کو پورن مکتی حاصل ہوتی ہے]

(62) जीवन्मुक्तस्य = جیون مکت کو कर्मकृतो शरीरे = کرم کا بنا شریر ہے - کرم کے سبب

اور شریر स्थापि = اس شریر میں اگر ... شریر ہوتا ہے -

शरीरयात्रामात्रार्थं = صرف شریر یاترا کے لئے

ज्ञानदृष्टे = گیان سے بڑھا ہوا

گیان سے جو کرم کرتے ہیں وہ ... ہیں ... گیان کی پرکھ سے

कुर्वाणस्य = کرتا ہو कर्म = کرم न फलाय तस्य

भवेत = اس کے لئے وہ پھل دینے والا نہیں इत्युक्त = اس پر

उपपत्तिमाह = کہتا ہے

62/

(62) अन्य = دوسرے اگنि दग्धं = جلا ہوا بیج بीजं = بیج

120/ यथा = جیسے प्ररोह = انکر پیدا کرنے اَसमर्थताम =

اسمرتھتا کو جاتے ہیں (جیسے جب جلا ہوا بیج تو اس میں انکر پیدا نہیں ہوتا ہے) [illegible]

اسی طرح ज्ञानाग्नि = گیان روپ اگنی سے दग्धं = جلا ہوا =

एव اسی طرح

कर्म = کرم न = نہ जन्मप्रद = جنم کو دینے والا

भवति = ہوتا ہے

[جب کرم کا بیج گیان اگنی نے جلا دیا ہے۔ تو وہ جلا ہوا کرم بیج پھر جنم انکر نہیں نکال سکتا]

वह्निनिर्मुष्टं = اگنی نے جلا دیا ہو شालिबीजं = شالی کا دانہ

क्षिति = پرتھوی सलिल = جل आतप = دھوپ۔ تاپ

انکر سے دانہ دھوپ جل پرتھوی میں رکھا ہی ہو۔ मध्यवर्त्यपि = اگر اس کے بیچ میں ہو

(وہ ساری اگنی سے نہ نکلے۔ انکر کو نہ نکالے) सामग्रीवैकल्यात् =

سامگری کی کمی سے

انکر پیدا کرنے کی بیج کی طاقت یا گن یعنی۔ यथा = جیسے अङ्कुरादि / انکر اور جنم جनने = انکر پیدا کرنے میں अशक्तता =

نہ طاقت والا ہونا کو۔ اشکتتا کو

याति = جاتا ہے तथैव = اسی طرح

ज्ञानाग्निना "گیان اگنی سے دग्धं" = جلا ہوا

82

परमाद्भुत दीप्त्या = [illegible]
[illegible]

120

स्फुटं = [illegible] ; "कर्म" — [illegible] यथा = [illegible]

{ "एकमेवाहं" [illegible] → इत्थं = [illegible] [illegible] विश्वात्मना
{ स्फुरामि = [illegible] इत्येवं रूपेण = [illegible]

देहाद्यात्ममानित्व हाने: = [illegible]
[illegible]

हेयोपादेय = [illegible] बुद्धिपरित्यागेन
[illegible] =

यत् किंचित् = جو کچھ शुभाशुभं कर्म =
[illegible]

क्रियमाणं = [illegible] तत् = وہ अध्यवीर्यं
[illegible] =
[illegible]

न = نہ पुनः = پھر ज्ञानिनः = [illegible]

पिण्डपात [illegible] तत स्फुतर = [illegible]

[illegible] जन्म फल प्रदं [illegible]
[illegible] ([illegible])
[illegible]

62/

120/ देहाभिमानस्य हेतु = دیہہ ابھیمان کا سبب — संपद्यते = ہوتا ہے =

दग्धं = جلے ہوئے — बीजमिव = بیج کی طرح

अङ्कुरे = انکر — न = نہیں =

(جیسے جلا ہوا بیج زمین میں آتا ہے - اسی طرح جلے ہوئے کرم ہو کر انکر نہیں نکلتے)

तस्मात् = اسلئے — न = نہ — सर्वोहेमावरूपया चितिप्राप्तौ = سب کو اپنے آپ روپ سے جو ہر ا سکتی - چیتی شکتی کے

अफला = بے پھل — तथा अभिसंधाना = اِچھا ہی

कृते कर्मणि = کئے ہوئے کرم — मूढा = مورکھ — जन्म = جنم

दातुं = دینے کے لئے — प्रभवति = دوسرا سمرتھ ہے

(63) एवं = اسی طرح — पुनर = پھر — विकस्वरापि = کھلی ہوئی ہے

चितिप्राप्ति = چیتی شکتی — कथं कार = کیسے

121/ देहवती = دیہہ والی — स्यात् = ہو سکتی ہے

(یہ چیتی شکتی جو جاگ گئی ہے دیہہ والی بن کر رہ سکتی ہے؟)

63

121

परिमित = محدود बुद्धित्वेन = بدھی ہونے کی وجہ سے हि = کیونکہ

कर्मा चित = کرم سے اکٹھا کیا ہوا भाव = [illegible] देहभावनया =

(اس شریر کو اپنا ماننے سے (جس میں کرم اکٹھا کیا ہوا اور اسی میں ہونا) - [illegible])

[illegible] संकुचिता = بہت سکڑی ہوئی (سکڑی ہوئی) चिति = چیتن شکتی / درشن شکتی / سموت } इतत = یہ

देहधनसे = دیہہ میں [illegible] तथा = اور भवति = ہوتی ہے

- [illegible] - جیسے کہ [illegible] جیسے اپنی [illegible] [illegible]

यस्मात = جس سے 'परिमित बुद्धित्वेन' → (بدھی) محدود ہونے کی وجہ سے

→ अख्याति जनितेन = اگیان سے [illegible]

देहाद्यभिमानवासना पूर्वक कामना कालुष्य निश्चयेन

[illegible] - [illegible] - [illegible]

[illegible] (دوسری [illegible]) [illegible]

यत् कृते = [illegible] 'कर्म' — [illegible] यथा = جیسے

अहम अश्वमेधेन यक्ष्ये [illegible] (میں اشومیدھ یگیہ [illegible])

इह = [illegible] अमुत्र च [illegible] सुखीभूया = سکھی ہوؤں گا

[illegible] [illegible] [illegible] स्याम्

جیسے مرشد کا عمل [illegible] [illegible]

मा = نہ कदाचन = کبھی بھی दुःखयहं भूयासम् = [illegible] دکھی نہ

अमुना कर्मणा = اس عمل سے ऐन्द्रं = (اندرا)

पदं = پد کو प्राप्नुयाम् = پراپت کروں इत्येवं = اس طرح

वासना विशिष्टस्य = واسنا وشسٹ کی कर्तुः = کرنے والے کی

[illegible] एवम् अनुगुणां = اس [illegible] مطابق कर्म = کرم

तस्य = اس کے मनोवासना = من کی واسنا

लब्धं = [illegible] प्रकटिता = [illegible]

([illegible] واسنا)

केषांचित् = [illegible] ([illegible]) उचित = [illegible]

[illegible] (اس [illegible])

तदनुगुणफलभोक्तृता योग्यः = اس کے مطابق [illegible]

असौ = یہ 'भावी देह! [illegible]

([illegible]) - [illegible]

प्रारब्धकर्मफलभोक्तृशरीराधिकार परिज्ञानात्

[illegible]

[illegible]

385

63

122

यत = جو उत्तरत्र = آگے → भविष्य शरीरं =
آگے ہونے والا شریر

तस्य = اُسی کا या = جو

भावना = جو بھاونا کی → आमुत्रामुष्मेधा
दिक्रियया = اس لوک میں یگ وغیرہ
کرم کرنے سے

साम्राज्यादि = سامراجی آدی کی
پدوی

प्राप्नुयाम = جو پراپت کرتا इति = ایسی

अभिमत = جو مانا ہوا कुर्म = کرم [کیا ہوا]

फलवासनाधिरूढ़ः = اسی اپیوگ جو واسنا
اسی کا ادھرود ہونا - (اس پر چڑھا)

तया = اُس कर्मोचित = کرم کے یوگیہ
جو کرم کے لئے ...

भावि = آگے ہونے देहभावनया
= شریر کی بھاونا سے

इयं = یہ सर्वतः = ہر طرف पुरापि = پہلے ہی

चितिशक्तिः = چِتی شکتی ,आणवमायीयमलमूलेन.
...

63/ कर्मसतेन = کرم سے　प्रद्योता = جو چمکدی ہوئی روشنی ہے
122/
اسی طرح چمکدی ہوئی روشنی شبانہ ہے

آپ نے "संकुचिता" سکڑتی ہی ہوئی → व्याप्तिरपि =
اگر سارے میں پھیلا ہوا بھی ہو تو بھی حیثیت تھی

घटाकाशवत् = گھڑے کے آکاش کی طرح

कर्मानुगुणफल = کرموں کے مطابق پھل　भोक्तृ शरीर =
اس کا بھوگنے والا جو شریر ہے

वासना = اس کا جو واسنا ہے
अवच्छेदवती वृत्ती = یہ بیچ بیچ ہوئی
सपत्र स्त्री = سوتن ہے

اس "एतत् देहध्वंसे तथा भवति" इति
اس وقت جو شریر ہے۔ اس کے ختم ہونے پر ویسی ہی ہو جاتی ہے

"एतस्य" → اس کا　प्रारब्धस्य = پراربدھ
कर्मफलस्य = کرم پھل کی　यो भोक्ता = بھوگنے والا ہے
"देहः" = شریر　तस्य = اس شریر کی

63 भोग परिक्षयात् = [illegible] यो = 3.

122 "ध्वंसा" → स्मृति — [illegible] तस्मिन् = [illegible]

देहध्वंसे = [illegible] सा = [illegible] "चिति" = [illegible]

सति

"उद्भूत कर्म वासना" = [illegible]

[illegible] "तथा भवति"

[illegible]

येन आपाद्यन = [illegible]

पूर्व कर्म = [illegible] फलम् = [illegible]

उपार्जित = [illegible] तत कर्म फल = [illegible]

भोक्ता [illegible]

यो = 3. देहः = [illegible]

[illegible]

तद्भूती = [illegible] संप्रयात = [illegible]

([illegible])

यद्भ्रात = [illegible] चितिरपि = [illegible]

स्वर्ग नरकादि भोग = [illegible]

भाजनं स्यात् [illegible]

63/ तस्मात् = اس لیے   शरीरीभूत्वा = شریر دھاری ہوکر

123/ परिमित = محدود   फला = پھل   लभ्योत्वात् =

اس کے کرم ہیں

यत् कृते = جو کیے   कर्म = کرم

तत् फलं = اس کا پھل   भोक्तृ = بھوگنے والا ہی ہوتا

जन्म = جنم (پیدائش)   दातुम् = دینے کے لیے

प्रवर्त्य = اور   प्रभवति = [illegible]

بلکہ   यत् = جو   पुनः = پھر   अशरीरी-भूत्वा

(نہ شریری بن کر (دیہہ نہ اکر بدھی رکھتے ہوئے))

[illegible]   "सर्वं ब्रह्मास्मि" = سب میں برہم ہوں — [illegible]

इति संविद्रूपत्या = اس (...) [illegible]

[illegible]

कृते = کیے ہوئے   तत् = وہ

वासना प्ररोहनासादनात् = واسنا [illegible]

कथं = کیسے   [illegible]   व्यापित्या = [illegible]

चितिशक्तेः = چیتی شکتی [illegible]

64 उपकृते = [illegible] स्यात = [illegible] [[illegible]]

123

इति तात्पर्यार्थः = یہ بات ہے مطلب

[illegible]

(64) एवम = ایسا ۔ अनात्मतया = بے آتما ہونا ۔

समुच्चितं = ملا ہوا کर्म = [illegible] संसरणाय प्रभवति

[illegible]

इति चेत् = اگر ایسا کہو ۔ तर्हि = تو

आत्मस्वरूपं वेत्तव्यं = آتما سروپ کو جاننا چاہیے

[illegible] येन संसारी न स्यात = جس سے سنساری نہ ہووے

इति = ایسا ۔ प्रतिपादितम् = [illegible] शिष्यजन

हृदयङ्गीकर्तुं = [illegible] [illegible]

पुनः कथयति = پھر کہتا ہے

[illegible]

64/65/66

64 यदि = جب पुनर = پھر ...मलं = میل

123/124 बोधं = گیان - بدھ सर्वं समुत्तीर्णी = سب سے اوپر چڑھا ہوا

बोद्धृकर्तृमयम = سرو گیان روپ - سرو کرتا

विततम = وہ پھیلا ہوا [illegible]

प्रनास्त = نہ اسِت ہوا मित उदित = اودے ہوا
मित ... ہوا
نہ اودے میں آیا ہوا - نہ استِ ہوا
(یعنی ہمیشہ اودے میں ہی)

भारूपं = سروپ پرکاش روپ

सत्यसंकल्पम् = سَت سنکلپ ہوا

(65) दिक = دِش काल = کال कलना =
اس کال ... [illegible]

विकल्प = ...

ध्रुवम = ... अव्ययम = ...

ईश्वर = ... सुपरिपूर्णम =
اچھی طرح بھری ہوئی

125 नक्षुतर = تارے प्राक्प्रात = [illegible]

(الف) प्रलय-उदय = پرلے اور اُدے

(ب) विरचनैं = [illegible]

(ج) एक = ایک कतीरम = [illegible]

([illegible])

(66). सृष्ट्यादि = [illegible] विधि = [illegible]

[illegible] सुवेधसम् = [illegible]

[illegible] आत्मानं = [illegible] शिवमयं = [illegible]

विबुद्धयेत = [illegible]

कथमिव = کس طرح संसारी स्याद् = [illegible]

विततस्य = [illegible] कुतः = [illegible]

कव = [illegible] सरस्रानं = [illegible]

[illegible]

124

(392)

64/65/66

"यदि पुनः" → परम्परा प्राप्तिपात विद्ध हृदया।

= پرا اسکتی ہو کے بات (پڑتا) اس سے کا کئی ہوئے ہردے سے

[illegible] subject [illegible] ۔ جب شکتی پات کا

प्रमाता = پرماتا देहादि प्रमातृताभिमानम्

= دیہہ وغیرہ میں پرماتا کا ابھیمان

तत = اس (ایسا) = प्रथस्पदी कृतय =

(شکتی پات سے) ۔ [illegible] کو نیچے دبایا ہو

"स्वात्मानं प्राणमयं विमुक्षत"

اپنے سروپ کو شونیہ بنا کر

१०३० → चिदानन्दैकधनं = چت آنند کی گھن اس

विजानीयात् سروپ کو جان لے

स = وہ परिक्षीण स्वात्म महेश्वर भावः

= جاننے ہوئے مہیشور بھاؤ سے

"कथमिव" → केन प्रकारेण =

کس پرکار سے

"संसारी" → संसरता छीलो-भवेत् ?

[illegible]

न स्यात = نہیں ہوگا इति यावत् = [illegible]

64/65/66

125 यतः [illegible] चिद् अचिद् रूप = [illegible]

[illegible]

पुर्यष्टकात्मा = [illegible]

कामि मल संबन्धेन = [illegible] संसरति

[illegible] =

यः पुनः = [illegible] चिदेकमूर्ति =

[illegible]

[illegible] प्रावमयः = [illegible] → प्रकृति या प्रारवादि

[illegible] मल कञ्चुकः =

स कथं संसारी = [illegible]

इति तात्पर्यम् = [illegible]

ननु = [illegible] चिदेकमूर्तिः = [illegible]

स्यात् संसारी च भवेत् [illegible]

[illegible] इति = [illegible] किं दुष्येत् = [illegible]

[illegible]

[illegible]

64/65/66

इत्येवमाशङ्क्याह = ایسا شک کر کے کہتے ہیں ۔

125 "विततं" इत्यादि → 'विततस्य' = سب جگہ پھیلے ہوئے

→ अनवच्छिन्नदेशकालाकारस्य

= نہ کٹنے والی دیش - کال اور آکار وسعت کو - جس کو ادھورا پن نہ ہو نہ کوئی ۔

प्रमातृ = پرکھنے والا جاننے والا ۔

देहाद्यभिमानपूर्वस्वकृतवासनापरिक्षयात्

= دیہ وغیرہ پر [illegible] ۔ اپنی کی ہوئی واسنا کے ختم ہونے سے [illegible]

پورے طور سے

पूर्णस्य = پورے طور سے جو پورا ہے اس کا تस्य = اس کا

कुतः = کیونکہ - सर्वतः = ہر طرف

"सर्वव्यापित्वात्" سب جگہ پھیلا ہوا ہونے سے ([illegible])

ततः प्रतीतिरस्ति — किमास्ति यद्वस्तु अपेक्ष्य

اس سے [illegible] کوئی ایسی چیز ہے [illegible] = اس کے آگے [illegible]

ततो = اس سے विच्छिन्न = الگ

स्यात् = ہووے भिन्न = [illegible]

(پہلے اوراق)

125 संसरणं — गमनं = جانا - چلنا कुर्यात् = کرے

(اسی سے دنیا کو سنسار کہتے ہیں)

यता = جس نے देहादिप्रमातृताभिमानाच्छिन्नस्य

= دیہہ وغیرہ پر ہونے والے پرماتا کا ابھیمان ہے - اس سے الگ

किल = یقیناً प्रपादानाधिकरणादि कारक संभवः

= آپادان - سمپردان وغیرہ کارکوں کا ہونا

- اس سے پہلے جو ان کارکوں کا ہونا

यः = جو पुनः = اور चिदेकघनो = صرف چت ہی

बलभूतो = وہی ہے ہر دم - بلوان (ہوا) आनवाच्छिन्न देहकाल:

نہ دیش سے کال سے چھپنے کا ہے

प्रमाता = ان سے ہر ماتا کی तस्य = اس کا

संसरणं = سنسار کا چکر वाचोयुक्तिरपि

= جو یہ کہ کہنے کی بھی نہیں اٹھتی - न भवतीति

اس کا کہنا بھی نہیں - اسی بات سے

ہو گیا نہیں

64/65/66

(७२)

126 कीदृशं चिद्रूपम् = [illegible] आत्मानं = [illegible]

विबुध्येत = [illegible] इत्यात = [illegible]

"अमलं बोधम्" [illegible] →

अपगत = [illegible] आणवादि मल = [illegible]
पदयो [illegible]

यस्य = [illegible] = तम् = [illegible]

"अमलं बोधम्" [illegible]

अत एव = [illegible] वैमल्यात = [illegible]

"बोधं" [illegible] → शुद्ध चैतन्यम् [illegible]

तथा = [illegible] "सर्वसमुत्तीर्णं" →

निरतिशयं = [illegible] - [illegible]

ज्ञान क्रिया = [illegible] प्रकृते = [illegible]
स्वातन्त्र्यं [illegible]

यस्य = [illegible] इति [illegible]
सर्व तत् = [illegible]

64/65/66

126 विगत = دور ہوا → ह्प्राकृतविच्छेदाभावा

= جس کا - کال - اور آغاز و پیدا ہوا ہے - دور ہو
اس کا نہ ہے - اس سے ہیں

ہے جو व्यापिन्म = وسیع (ہے جو)

तथा = ویسا । प्रविद्यमाने = نہ ہونے والا प्रस्तोदिते →
نہ ہونے والا प्रलयोदयौ यस्या
= اصل اور آدرش - پرلے اور ادے

جس کی نہ پیدائش اور نہ تباہی ہے } نہ اس کا ہے

यस्य = جس کی (جس کی اصل اور ادے) "भासा" = بڑی روشنی - بڑو دیپ
ہی ہیں

सर्वे = سب (रूपे = ساتھ) येलो यस्य तत्र =
جس کی اصل ہے - اور سے

अन्यच = اور ہے "सत्यो" = سچ →

परमार्थः = سچ → "संकल्पा" ذہنی تعلق →

स्वेच्छावि-
हारा = اپنی مرضی سے اپنی اچھا [illegible] यस्य = (ہی) جس کی [illegible]

تیری اچھا

यत् यत् = جو جو تत् तत्यैव भवति =
इच्छति اچھا کرے وہ وہ اس کو ملتا ہے

اس کی مرضی سے

64/65/66. इति = यही तमेवंविधम = , ऐसे उस को

[illegible]

126

तथा = और दिक् काल आकार कल्पनाभिः चैचाभिः विरहितं

[illegible]

[illegible]

व्यापित्वनित्यत्व धर्म योगात् =

[illegible]

[illegible]

अत एव = [illegible] "ध्रुवं" = [illegible]

कूटस्थम् = [illegible] "प्रत्ययम्" →

[illegible]

अविनाशिनम् = [illegible] तथा = [illegible]

ईश्वरं → स्वतन्त्रम् = [illegible]

[illegible]

अन्यच्च ते = [illegible] तथा = [illegible]

"सुपरिपूर्णं" [illegible] →

18.11.66 सुष्ठु निराकाङ्क्षं = [illegible]

[illegible]

127 (399)

शब्द राशि समुत्थानि = [illegible]

तद्गु = [illegible] नलतररशी → प्रभूतानि = [illegible]

कामयादि प्राति प्रधिष्ठितानि = [illegible]

= [illegible] घटपटादि प्राति ख्यातानि [illegible]

तेषां = [illegible] लयोत्पत्ति = [illegible]

विधौ = [illegible] स्वतन्त्रम् [illegible] [[illegible]]

प्रत्यच = [illegible] "सृष्ट्यादि विधि सर्वेश्वरं" [illegible]

[illegible] सुप्रवीरणं = [illegible] वेधसं → [illegible]

विधातारम् = [illegible]" इत्येवम् = [illegible]

आदि विप्रा परी = [illegible] सर्वत = [illegible] परिपूर्णे

[illegible] स्वात्मनिश्वर = [illegible] जानाति = [illegible]

यत्किंचित कुर्वीरणो = [illegible]

[illegible] रयकर्मवीत्र [illegible] न पुनः = [illegible]

संसारभाक् = [illegible] जीवन्नेव = [illegible]

विमुक्तो भवेत = [illegible]

इति यावत = [illegible]

———o———